* श्री हरिः *

यूरप की लड़ाई

और

बृटिश-गवर्नमेंट

लेखक

शिवकुमारसिंह

सुपरिनटेंडेण्ट म्युनिसिपल स्कूल
इलाहाबाद

पण्डित रामजीलाल शर्मा के प्रबन्ध से
हिन्दी प्रेस, प्रयाग, में छपी

तृतीय बार ३००० १९१५ मूल्य ।-)

All Right Reserved.

सूचीपत्र ।

उद्योग-पर्व ।

पहिला अध्याय ।

दूसरा अध्याय ।

पृष्ठ

तीसरा अध्याय ।

चौथा अध्याय ।

पाँचवाँ अध्याय ।

फुटकर बातें ।

युद्ध-पर्व ।

पहिला अध्याय ।

दूसरा अध्याय ।

धन्यवाद

इस पुस्तक के लिखने में मुझे निम्न लिखित समाचारपत्रों और पुस्तकों से बहुत सहायता मिली है, अतएव मैं उनके मान्यवर सम्पादकों तथा ग्रन्थकर्त्ताओं का बड़ा ही अनुगृहीत हूँ। मान्यवर पं० कृष्णाकांत मालवीयजी ने कृपा कर मुझे मर्यादा तथा अभ्युदय में प्रकाशित कविता को इस पुस्तक में उद्धृत करने की आज्ञा देकर इस पुस्तक की रोचकता को और बढ़ा दिया है जिसके लिए मैं मालवीयजी का ऋणी हूँ। पं० टीकारामजी पुस्तकाध्यक्ष भारतीभवन से भी मुझे बहुत सहायता मिली है अतएव मैं आप का भी अनुगृहीत हूँ।

समाचार-पत्र	पुस्तकें
अभ्युदय	इङ्गलैण्ड का इतिहास
भारतमित्र	मेट्रीक्यूलेशन भूगोल
श्रीवेंकटेश्वर	
पाटलिपुत्र	
सरस्वती	
मर्यादा	
लीडर	
पायोनियर	
इंडियन-रिव्यू	
जयाजी-प्रताप	

शिवकुमारसिंह

विशेष धन्यवाद ।

श्रीमती पूज्यपादा राजमाता मझौली ने इस पुस्तक को पढ़ते ही प्रसन्न होकर एक अति सुन्दर, बहुमूल्य, काश्मीरी शाल उपहार के तौर पर प्रदान किया और ३०० पुस्तकें ख़रीद कर निज राज्य में तथा अन्य जगहों में भेजीं । श्रीमती की इस कृपा के लिए मैं सदैव अनुगृहीत रहूँगा ।

श्रीमान् डैया नरेश (इलाहाबाद प्रांत) ने भी पुस्तक देख कर पत्र द्वारा सुन्दर, मनोहर शब्दों में इसके विषय में अपनी सम्मति प्रगट कर मेरे उत्साह को विशेष रूप से बढ़ाया और अपने राज्य के कारिंदों को एक २ पुस्तक ख़रीद कर इस लिए दी कि वे गांवों में लोगों को पढ़ कर सुनावें और हमारी गवर्नमेंट के विरुद्ध जो झूंठी गप्पें इधर उधर उड़ती हों उनका खण्डन करें । श्रीमान् डैया नरेश ने भी राज-माता मझौली की तरह राजभक्ति से प्रेरित होकर ही झूंठी ख़बरों की नाशक मेरी पुस्तक का प्रचार कराया है । बीकानेर, जोधपुर, जैपुर, उदयपुर, नवलगढ़, प्रतापगढ़, झालरापाटन, जैसलमेर और बूंदी (राजपूताना) तथा अजयगढ़ इत्यादि दरबारों ने अपने २ राज्यों में इस पुस्तक को बँटवा कर मेरे उत्साह को ही नहीं बढ़ाया है वरंच सच्चे मित्र का काम किया है जिस के लिए मैं दरबार के राज-भक्त कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूँ ।

पंजाब गवर्नमेंट तथा कमांडिङ्ग आफ़िसर ८ वीं राजपूत पलटन (पेशावर) ने सरकारी तौर पर मेरी पुस्तक को ख़रीद कर पंजाब प्रांत के स्कूलों तथा पल्टन के सिपाहियों में बट-

पाया है जिसके लिए मैं उनका अनुगृहीत हूँ। अंत में मैं इन प्रांतों (आगरा और अवध) की गवर्नमेंट को इस लिए विशेष धन्यवाद देता हूं कि यदि गवर्नमेंट कृपापूर्वक सुन्दर दया-मिश्रित शब्दों द्वारा मेरे परिश्रम को सुफल न करती तो मेरा अभीष्ट कभी सिद्ध न होता।

शिवकुमारसिंह।

True extracts.

No. 431/XV—15, dated 4th March 1915.

From

B. H. BOURDILLON, Esq., I.C.S.,

Under-Secretary to Govt., United Provinces.

SIR,

In continuation of my letter No. 33/XV, dated January 6th, 1915, regarding the pamphlet in Hindi Compiled by you entitled "European War and British Government," I am directed to say that *Government appreciates your efforts to suppress false rumours,* and has accepted the recommendation of the Text-book committee that *the pamphlet be approved for distribution to schools.*

2 ... ...

I have the honour to be,

SIR,

Your most obedient servant,

(Sd.) BOURDILLON,

Under-Secretary.

"The Leader" (*Allahabad, 23rd January,* 1915.)

Thakur Shiva Kumar Singh, Superintendent, Municipal Schools, Allahabad, brought out in Hindi a smal book on European War. The arrangement of matter, the mode of describing the subjects treated and the quotations in Hindi verse are very appropriate for the Hindi-knowing Indians, specially living in far off villages, where all sorts of rumours are current in these days. The author has tried to contradict and explain these false rumours...

If the village school masters, patwaris and others are given the book and through them the mind of village people is educated, must of the wrong impressions created among the villagers can be easily removed.

श्रीहरिः

जेहि सुमिरत सिधि होइ, गणनायक करिवर वदन ।
करो अनुग्रह सोइ, बुद्धिराशि शुभगुणसदन ॥
मूक होइ बाचालु, पंगु चढ़ै गिरिवर गहन ।
जासु कृपा सुदयालु, द्रवहु सकल कलिमल दहन ॥

भूमिका

हँसि बोले रघुवंश कुमारा ।
विधि को लिखा को मेटन हारा ॥

प्यारे भाइयो ! 'मनुष्य कुछ सोचता है, ईश्वर कुछ करता है। भगवान लीलाधर हैं। उनकी माया को वेही समझते हैं। यूरप के चतुर नरेशों ने आपस में मिल कर हालेण्ड की राजधानी हेग में एक पंचायत स्थापित की है, जिससे आपस के भीतरी झगड़े निपटाया करते हैं।

यूरप के आकाश के ऊपर कई बार लड़ाई के बादल ज़ोर शोर से उमड़े, परन्तु अङ्गरेज़ी गवर्नमेंट की चतुरता से आपस में बड़े राजों में लड़ाई न होने पाई। सन् १९१२-१३ ई० में बालकन राज्यों में जो आपस में लड़ाई हुई थी उसमें सर एडवर्ड ग्रे * की कार्यकुशलता से यूरप के बड़े२ महाराजा शरीक नहीं हो सके। इससे आग फैलने न पाई। इसीसे लोग समझने लगे थे कि अब कुछ दिनों के लिये यूरप में शांति विराजेगी। अब जल्द किसी तरह का झगड़ा

---

* यह महाराज जार्ज पंचम के एक मंत्री हैं इनका काम बाहरी राज्यों से लिखा पढ़ी करना है।

फ़साद न होगा, यदि उभरेगा भी तो हेग की सभा के द्वारा आपस में निपटारा हो जायगा। परन्तु "सो न टरै जो रचा विधाता"। जब समय आ जाता है तब किसी के टाले नहीं टलता। हमारी गवर्नमेंट के लायक़ मन्त्रियों ने तथा हमारे महाराजा ने वर्तमान लड़ाई शुरू हो जाने तक सुलह रखने के लिए बड़ी कोशिश की। लेकिन ईश्वर की तो इच्छा थी कि अहंकारियों को मिटा कर पृथिवी का बोझा हलका करें, इसी से लड़ाई न टल सकी।

लगभग ५००० वर्ष पहिले जैसे हमारे देश में कौरव और पांडवों में महाभारत हुआ था, जिसके रोकने के लिए श्रीकृष्ण जी ने स्वयं उद्योग किया था, परन्तु न रुका, उसी प्रकार आज कल यूरप देश में एक बहुत बड़ी लड़ाई हो रही है, जो हमारे महाराज जार्ज पंचम के रोकने पर भी नहीं रुक सकी।

आज कल जहाँ जाइए इसी लड़ाई की चर्चा सुन पड़ेगी। दिहातों में, हमारे प्यारे दीन भाइयों को समाचारपत्र पढ़ने को नहीं मिलते, बाज़ारू गप्पोँ पर सन्तोष करना पड़ता है, और इन बाज़ारू ख़बरों का असर बहुत बुरा होता है, इसी लिए लायक़ सरकारी अफ़सरोँ और पढ़े लिखे लोगों ने मिल कर जगह जगह सभाएं करके, लोगों को समझाना शुरू कर दिया है, ऐसी ही एक सभा कर्वी में तारीख़ १३ सितम्बर (कुआर बदी ८ सं. १९७१ वि.) सन् १४ ई. को हुई थी, जिस के सरपंच कर्वी के सब डिवीज़नल अफ़सर श्रीमान् जी. वी. एफ़, म्योर साहब बहादुर चुने गए थे। इस सभा में कर्वी सब डिवीज़न की तीनों तहसीलों (कर्वी, मऊ, कमासिन) के हर क़ौम के लोग आये थे। कोई कोई तो पच्चीस कोस दूर से आये थे।

लड़ाई का हाल समझाने के लिये श्रीमान् म्योर साहब ने यूरप देश का एक बड़ा भारी (६ फ़ीट लम्बा ६ फ़ीट चौड़ा) और बड़ा सुन्दर नक़शा बनाया था, जिस पर सूखी ज़मीन और तरी के सब लड़ाई के मैदान बनाये गये थे। शत्रुओं की फ़ौजों की क़तारें मित्रों की फ़ौजों के आमने सामने दिखाई गई थीं। शत्रुओं के जहाज़ों को मित्रों के जहाज़ों ने किस तरह घेर रक्खा है, बड़ी अच्छी तरह दिखाया गया था। इन्हीं सब बातों को मुझ नाचीज़ को, उसी नक़शे की मदद से समझाने के लिये आज्ञा मिली थी। मैंने उस नक़शे के अलावा दुनियां के एक सादे नक़शे तथा उस नक़शे से भी काम लिया था जिस पर जहाज़ों के आने जाने के रास्ते बने रहते हैं। उस समय जो कुछ मैंने कहा था और जो कुछ साहेब बहादुर ने ख़ुद बयान किया था उन्हीं के आधार पर मैंने इस छोटी पुस्तक को लिखा है।

इसके लिखने का मुख्य कारण यही है कि दिहात के पढ़े लिखे भाई झूठी बाज़ारू ख़बरों को सुन कर घबराएँ नहीं, बल्कि ज़ोर के साथ उनका खण्डन करें, और अपने दूसरे अपढ़ भाइयों को सच्चा हाल समझा दें। जिससे मतलब गाँठने वाले झूठे बदमाश लोगों की दाल न गलने पावे, और लोग झूठी अफ़वाहों के चक्कर में पड़ कर अपना नुक़सान न कर बैठें। हम लोग राजभक्त प्रजा हैं। हमारा धर्म है कि हर प्रकार से अपने महाराज की सेवा कर पुण्य और यश के भागी बनें। परोपकार करने के लिए हमारे महाराज ने अपने को संकट में डाला है।

शिवि दधीचि हरचन्द्र नरेशा।

सहे धर्म हित कोटि कलेशा॥

भारत के पुराने राजाओं के पथ पर चल कर हमारे महाराज कष्ट सह रहे हैं इस समय हमको तन मन, धन से सहायता करनी चाहिए।

यदि इस पुस्तक के पढ़ने से यूरप की यथार्थ व्यवस्था, लड़ाई का कारण, यूरप के राजाओं की ताक़त, जर्मनी की कुटिलता और लड़ाई के परिणाम का कुछ अन्दाज़ा पढ़ने वाले करके झूठी उड़ती ख़बरों और बाज़ार की गप्पों से अपने अपढ़ भइयों को सचेत कर अपनी राज-भक्ति प्रगट करने का अवसर पा सकेंगे तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा।

तिरवाह
२६-६-१४ } शिवकुमार सिंह

दूसरी बार की भूमिका।

परमात्मा को कोटिशः धन्यवाद है जिसके कृपा-कटाक्ष से मेरी इस पुस्तक को गवर्नमेंट, तथा रक्षित-देश के नरेशों से लेकर साधारण पुरुषों तक ने प्रेम से अपनाकर मेरे उत्साह को बढ़ाया है। नवम्बर सन १९१४ में यह पुस्तक प्रकाशित हुई थी देखतेर प्रथम बार की ५००० पुस्तकें निकल गईं। इतनी मांग आई कि मुझे राजभक्ति के नाते इसे दूसरी बार शीघ्रतापूर्वक पुनः छपाना पड़ा। हिन्दी तथा अङ्गरेज़ी समाचारपत्रों ने जिस भाव से इसकी समालोचना की है उसके लिए मैं उनके मान्यवर सम्पादकों का हृदय से कृतज्ञ हूँ। यह उन्हीं की समालोचना का प्रताप है कि राजा तथा प्रजा ने इस पुस्तक को उपयोगी स्वीकार किया है। इसके लिए मैं सम्पादक महाशयों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

प्रयाग, वै. सु. १०
सं० १९७२ वि०।
२५-४-१५ } शिवकुमारसिंह
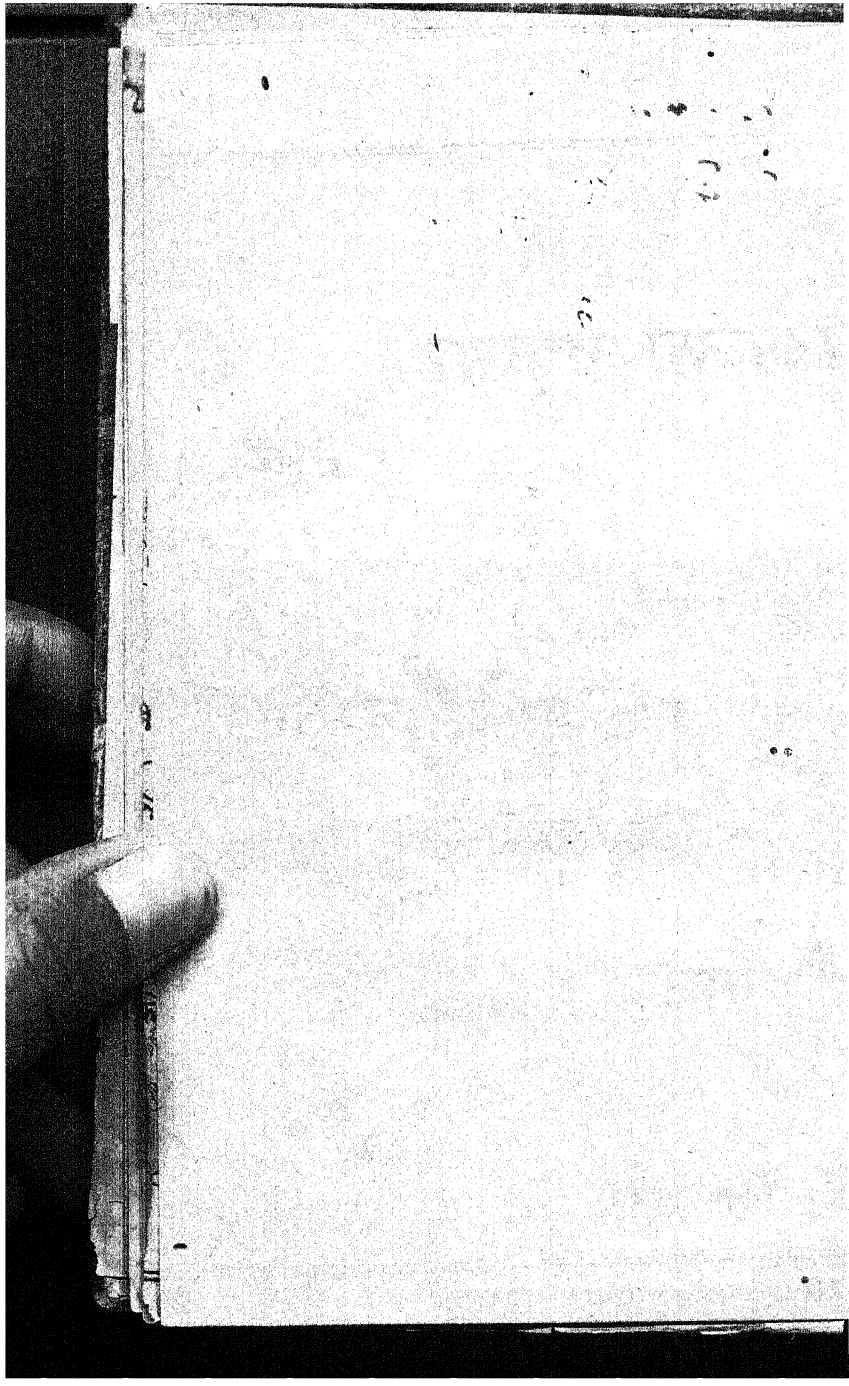
दुनियां का नक़्शा।

और

यूरोप के राजाओं का राजविस्तार।

प्यारे भाइयो, लड़ाई का हाल अच्छी तरह समझने के लिए यह ज़रूरी बात है कि आप लोग यह जान लें कि यूरप देश कहां है? कितना बड़ा है? उसमें कितने राजा हैं? उन राजाओं का राज संसार में कहां २ है? किसके पास कितनी फ़ौज है? और यूरप, हिन्दोस्तान से कितनी दूर है? इत्यादि।

अच्छा तो दुनियां के नक़्शे को पहिले देखिये। इसमें दो गोले बने हैं एक गोले को यूरप वाले पुरानी दुनियां और दूसरे को नई दुनियां कहते हैं। पुरानी दुनियां में, एशिया, अफ्रिका और यूरप ३ बड़े महाद्वीप हैं और नई दुनियां में उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका दो बड़े देश हैं। इन महाद्वीपों के अलावा दोनों गोलों में बड़े और छोटे बहुतेरे टापू हैं। अब यूरप के नक़्शे की ओर देखिये इसमें पांच महाबली राज्य। (१)—इङ्गलैंड, (२)—जर्मनी, (३)—रूस,—(४) फ्रांस, और (५)—आस्ट्रिया—हँगरी हैं, दो बड़े राज्य। (६)—इटली और (७)—स्पेन हैं, बालकन राज्यों में (८)—रोमानिया (९)—बलग़ेरिया, (१०)—सर्बिया, (११)—मांटीनिग्रो, (१२)—अलबेनिया, (१३)—ग्रीक, और (१४)—तुर्की हैं इनके अलावा ७ छोटे २ राज्य हैं (१५)—नार्वे, (१६)—स्वीडन, (१७)—डेनमार्क, (१८)—हालेंड, (१९)—बेलजियम, (२०)—स्विटज़रलैंड और (२१) पुर्तगाल।

इन दोनों नक़्शों के देखने से अब आपको मालूम हो जायगा कि अंगरेज़ी राज्य दुनियां में सब से बड़ा है, इसी से कहा जाता है कि सर्कारी राज्य में सूरज कभी नहीं डूबता।

यूरप के देश और मनुष्य-संख्या।

देश	राज्य-विस्तार		मनुष्य-संख्या	
१-अंगरेज़ी राज्य (संसार भर में)	१,२०,०००००	वर्गमील	५०,०००००००	के लगभग
२-फ्रांस-यूरप में	२,०४०००	"	३,०८००,०००	"
३-रूस ...	२०,०००००	"	१०,४०,०००००	"
४-बेलजियम...	११०००	"	६७,०००००	"
५-सर्विया ...	२०,०००	"	२५०००००	"
६-मांटनिग्रो...	३६००	"	२,२८०००	"
७-जर्मनी ...	२,०८,०००	"	५,०६,०००००	"
८-आस्ट्रिया...	२,४१,०००	"	४,१०,०००००	"
९-इटली ...	१,१०,०००	"	३,२०,०००००	"
१०-टर्की ... इसमें से कुछ भाग निकल गया है	६५,०००	"	५०,०००००	"
११-ग्रीस ...	२५,०००	"	२५०००००	"
१२-बलग़ेरिया	३८,०००	"	३५,०००००	"
१३-रोमानिया	५०,०००	"	६०,०००००	"
१४-अलबेनिया	...	...	...	
१५-स्पेन ...	१,९८०००	"	१८०,०००००	"
१६-पुर्तगाल ...	३६,०००	"	५०,०००००	"
१७-नार्वे १८-स्वीडन	३,०००००	"	७५,०००००	"
१९-स्विटज़रलैंड	१६,०००००	"	३०,०००००	"
२०-डेनमार्क...	...		२०,०००००	"
२१-हालैंड	२०,०००	"	५०,०००००	"

राज्य-विस्तार और मनुष्य-संख्या देखकर हर एक आदमी समझ सकता है कि जर्मनी हम लोगों के सामने मैदान में बहुत दिनों तक नहीं ठहर सकता है।

यूरप के राज्यों की फ़ौजी शक्ति और मुख्य मुख्य जातियां ।

	देश	जातियाँ	स्थली सेना पायनियर से	स्थली सेना जयाजी प्रताप से	जहाज़	जहाज़ी सेना जयाजी प्रताप से
१	इंगलैंड इत्यादि	ट्यूटंस, केल्ट्स	५२६०००	५७५०००	६६७	१४६०००
२	फ्रांस	केल्ट्स	३३०००००	४००००००	३१२	६४५००
३	रूस	स्लैव्स	१६०५०००	४५०००००	२०५	५३५००
४	सर्विया	,,	१६५०००	६५०००		
५	मांट निग्रो	,,	...	४००००		
६	बेलजियम	केल्ट्स ट्यूटंस	३४००००	१८८०००		
७	पुर्तगाल	बास्कस	१५००००	...		
८	जर्मनी	ट्यूटंस	५००००००	५००००००	३१२	७४०००
९	आस्ट्रिया	स्लैव्स ट्यूटंस	८१००००	२५०००००	६४	१६०००
१०	इटली	केल्ट्स	७०००००	२००००००	१६८	३७५००
११	टर्की	तुर्क, स्लैव्स	३५००००	१००००००	४६	
१२	बलगेरिया	स्लैव्स	३४००००	३७५०००		
१३	रोमानिया	,,	४२००००	३५००००		
१४	ग्रीस	ग्रीक्स	१५००००	१०००००		

	देश	जातियां	स्थली सेना पानियर से	स्थली सेना जयाजी प्रताप से	जहाज़	जहाज़ी सेना जयाजी प्रताप से
१५	स्पेन	बास्कस	३५००००	५०००००		
१६	स्विट्ज़रलैंड	ट्यटंस केल्टस	२६२०००	...		हवाई
१७	हालैंड	ट्यूटंस	१६५०००	१७५००००		जहाज़*
१८	डेनमार्क	,,	९००००	६६०००		
१९	नार्वे,	ट्यूटंस लैप्स	१२००००	७५०००		एक बादशाह के
२०	स्वीडन		१९५०००	४२००००		हाथ में है।
२१	अलबेनिया	०	०	०		०

नोट—अंगरेज़ी राज्य में कुल १३५०००० फौज हर समय तैयार रहती है। ज़रूरत पड़ने पर थोड़े ही दिनों में यह तादाद् ५० लाख तक पहुँच सकती है। क्योंकि अंगरेज़ी राज्य में लग भग ५० करोड़ मनुष्य बसते हैं। परन्तु हमारी गवर्नमेंट की नीयत तो यह है नहीं कि फ़ौज बढ़ा कर दूसरों का राज्य हड़प लें। कमज़ोरों का राज्य छीन लें। इसी से फ़ौज नहीं बढ़ाई जाती। जितनी फ़ौज है, वह काफ़ी है। फ़ौज बढ़ा कर टैक्स के बोझ से प्रजा को कुचलना हमारी सरकार नहीं चाहती।

मुख्य जातियां जो लिखी गई हैं वे वंश को प्रगट करती हैं। और नहीं तो सब जगह मिले हुए वंश के लोग पाये जाते हैं।

---

*हवाई जहाज़—अंगरेज़ी राज्य	फ्रांस	रूस	जर्मनी	आस्टिया	इटली।
३६५	१३२१	३८८	६२१	१५६	३२५

यूरप के राजाओं की दूसरी अमलदारियां

अङ्गरेज़ी राज्य---इङ्गलैण्ड, स्काटलैण्ड, आयरलैण्ड और वेल्स को छोड़कर (यूरप में) जिबराल्टर, माल्टा-गोज़ो, (एशिया में) हिन्दुस्तान, लङ्का, स्ट्रेट-सेटिलमैंट, हाँगकाँग, साइप्रेस, मलाया के राज्य, (आफ्रिका) दक्षिणी आफ्रिका, (ट्रांसवाल, नेटाल, केपकालोनी इत्यादि) पश्चिमी आफ्रिका, सेण्ट-हेलिना, यसूटू बेचवाना, मध्य आफ्रिका, पूर्वी आफ्रिका (मिश्र इत्यादि) मारीशस।

आस्ट्रेलिया---न्यूज़ीलैण्ड, टसमानिया, फ़ीजीन्यू-गिनी, उत्तरी बोर्नियो, सरावक (अमेरिका) केनेडा, न्यूफौंडलैण्ड; बरमूडा, बृटिश हंड्यूरास, वेस्ट इंडीज़, बृटिश ग्याना, फाकलैण्ड और छोटे छोटे द्वीप समूह।

फ्रांस---(आफ्रिका में) अलजीरिया, सेनोगाल, नाइज़,र कांगो, ट्युनिस, मराको, मैडेगास्कर, (हिन्दुस्तान में) पांडचेरी, चन्द्रनगर, कारीकाल, माही इत्यादि, (एशिया में) टानकिन, फ्रेंच इंडोचायना, कोचीन, (आस्ट्रेलिया में) न्यू० केलिडोनिया, टहेटी और छोटे छोटे द्वीप समूह।

बेलजियम---(आफ्रिका में) काँगो, फ्रीस्टेट, उँगोंडा।

हालैण्ड---(एशिया में) जावा, न्यूगिनी, बोर्नियों और सुमात्रा के कुछ भाग मलाया द्वीप समूह का एक भाग, (अमेरिका में) डचग्याना और पश्चिमी हिन्द के द्वीप समूहों के कुछ भाग।

जर्मनी—(आफ्रिका में) टोगोलैंड, केमेरून्स, पूर्वी आफ्रिका में कुछ भाग (एशिया में) किवाचाउ* और शांत महासागार में कुछ छोटे २ द्वीप—

इटली—उत्तरी और पूर्वी आफ्रिका के किनारों के कुछ भाग।

स्पेन—फ़रनेनडेपो और छोटे २ टापू—

पुर्तगाल—(अटलांटिक में) अज़ोर्स मडेरीज़ केपडिवर्डी (आफ्रिका में) अंगोला, गिनी, मुज़म्बिक (एशिया में) मकाव, डैमनड्यू, टिमोर।

नोट इसके पढ़ने से मालूम हो जायगा कि अंगरेज़ी राज्य तथा फ्रांस, पुर्तगाल और बेलजियम के पास बाहरी अमलदारियां कितनी हैं? बाहरी मदद कितनी मिल सकती है।

*इसको जापान ने लड़ाई शुरू होते ही छीन लिया।
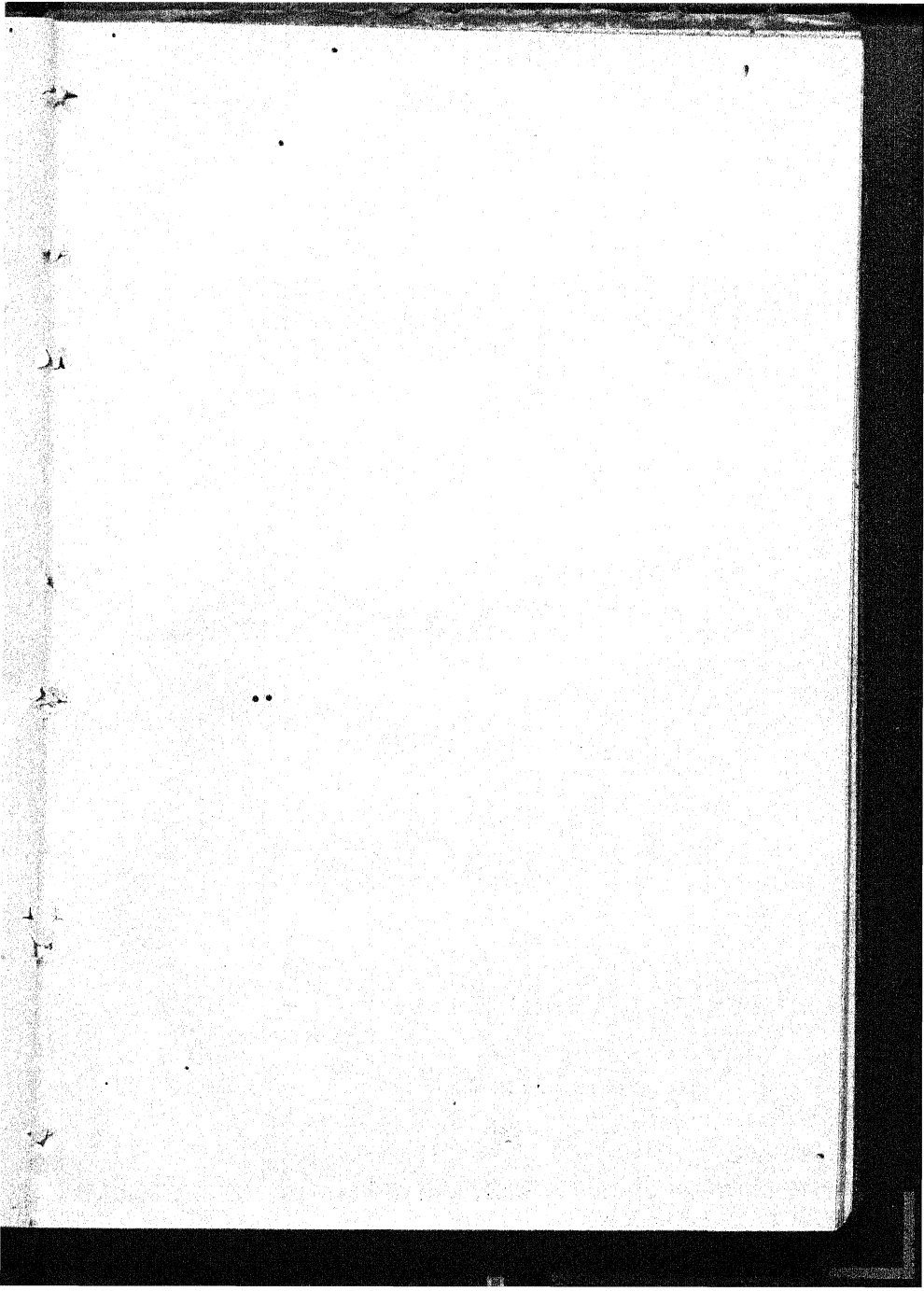
सदा समर-विजयी

चक्रवर्त्ती सम्राट
जार्ज पंचम

उद्योग-पर्व ।

जहँ साहस जहँ धर्म जहाँ साँचे सब संगी ।
तहाँ विजय निहचय तासें सब होहु इकङ्गी ॥

पहिला अध्याय ।

यूरप के मुख्य २ राजाओं का आपस का संबंध।

नीचे लिखे हुए कारणों से यूरप के राजाओं की आपस की दोस्ती और दुश्मनी मालूम हो जायगी। आशा है कि आप लोग इस अध्याय को बहुत ध्यान देकर पढ़ेंगे।

बृटन (अंगरेज़ी राज्य) और जर्मनी ।

'ऊँच निवास नीच करतूती, देखि न सकहिं पराय विभूती'

अंगरेज़ी राज्य बहुत दिनों से मशहूर हो रहा है, महारानी एलिज़बथ के ज़माने से (३०० वर्ष के लगभग हुआ) अंगरेज़ों की जहाज़ी ताक़त बढ़ने लगी है और स्वर्गवासिनी श्रीमती महारानी विक्टोरिया के राज्य में यह राज्य तमाम दुनियां में सबसे अधिक धनवान और बलवान हो गया। इस समय अँगरेज़ी राज्य दुनियां के हर कोन में फैला हुआ है। इसी से यह कहावत मशहूर हो गई है कि अँगरेज़ी राज्य संसार में इतना बड़ा है कि इसमें सूरज कभी नहीं डूबता। अङ्गरेज़ी राज्य का प्रभाव दुनियां में समुद्र पर सब से

अधिक है, अङ्गरेज़ व्योपार में बड़े चतुर हैं इससे इनका व्योपार सब से बढ़ा चढ़ा है और सारे संसार में इनके माल की खपत होती है, इससे अङ्गरेज़ों को अपने व्योपार और बड़े राज्य की रक्षा के लिये बहुत बड़ी समुद्री फ़ौज और बड़े २ निडर जङ्गी जहाज़ रखने पड़ते हैं। हमारी सरकार की जहाज़ी ताक़त इतनी मज़बूत है कि संसार के कोई दो राजा मिलकर भी सरकार का सामना करने की हिम्मत नहीं कर सकते। इसी ज़बर्दस्त जहाज़ी ताक़त के बल से अङ्गरेज़ी सरकार दिनों दिन धनवान् होती जाती है। यही कारण है कि यूरप के कई देश जला करते हैं। इनमें से मुख्य कर जर्मनी के पेट का पानी नहीं पचता, हालाँ कि ऊपर से दोस्त ही बना रहता है।

जर्मनी देश

रात दिन इसी चिन्ता में रहता है कि अङ्गरेज़ों से व्योपार में बढ़ जाय। जर्मनी वाले निःसंदेह विद्या बुद्धि में बड़े योग्य हैं, कला कौशल में भी चतुर हैं, व्योपार में भी अपना खूब विस्तार कर रहे हैं, अभी इनकी नयी उमंग है, नया जोश है, इसी से अङ्गरेज़ों से बढ़ जाने का स्वप्न देखा करते हैं, जो हो जर्मनी वाले अपनी धुन में लगे हैं रोज़ उनके स्कूलों, कालेजों और फ़ौज के बारिकों में, लड़ाई की ही बातें हुआ करती हैं। और यही लालच सब के मनों में समाया हुआ है कि जर्मनी का राज्य अङ्गरेज़ी राज्य की जगह प्रभावशाली हो जाय। इसी से वे अपनी फ़ौज और बढ़ाने लगे हैं। उनका बहुत दिनों से यही इरादा था कि अङ्गरेज़ों को, जो इस समय संसार में बढ़े चढ़े हैं, दबाकर अपना सिक्का जमावें, और छोटे कमज़ोर राज्यों को हड़प कर अपना राज्य और व्योपार बढ़ावें। जर्मनों की इस भीतरी चाल को

अङ्गरेज़ भलीभांति जानते थे इसी से अपनी मान मर्य्यादा संसार में क़ायम रखने के लिए वे भी समय के मुवाफ़िक़ अपनी समुद्री ताक़त, जिनके ऊपर उनका मरना, जीना निर्भर है, बढ़ाते जाते हैं। इसी कारण बाहरी मेल मिलाप रहने पर भी भीतरी मनमोटाव बढ़ता ही जाता था। जर्मनी की भीतरी चाल का पता सन् १८६६ ई० में बुअरों की लड़ाई के समय साफ़ मालूम हो गया, जब जर्मनी के महाराज ने क्रूगर (बुअरों के सरपंच) को बधाई का तार दिया था। विलायत में बहुत लोगों का यह ख्याल है कि बुअरों की लड़ाई हुई ही न होती यदि जर्मनी वाले भीतर ही भीतर उन को न भड़काए होते। जर्मनी उसी समय लड़ भी गया होता परन्तु समुद्री ताक़त कमज़ोर होने के कारण साहस न कर सका। तभी से दोनों ओर के लोग चौकन्ने हो गये। और जर्मनी के लोग चुपके २ अपना बल किसी दूसरे मैदान पर दिखलाने के लिये बढ़ाने लगे।

जर्मनी-फ्रांस।

दोनों पड़ोसी राज्य हैं, इनकी सरहद्दें मिली हुई हैं, परन्तु "अपने पड़ोसी को प्यार करो" (Love your neighbour) का पाठ इनके गुरुओं ने इन्हें नहीं सिखाया है। इनका जाती झगड़ा हज़ारों वर्ष से चला आता है। राइन नदी को जर्मन अपनी पवित्र नदी मानते हैं और चाहते हैं कि राइन नदी के दोनों किनारों के सूबे जर्मनी देश में रहें। फ्रांस वाले कहते हैं कि राइन नदी हमारे देश की पूर्वी सीमा है, वहाँ तक हमारा स्वाभाविक राज्य है। इसी से ख़ास कर इन दोनों जातों में अनबन रहती है। नेपोलियन बोनापार्ट के समय में जर्मनी में लगभग २५०

छोटे २ राज्य थे, वे टूट फूट कर ४० के लगभग रह गए। इनको प्रिंस विसमार्क* ने तोड़ फोड़ कर २५ कर दिया और सन् १८६६ में सबको मिलाकर और आस्ट्रिया को हरा कर, सन् १८६७ ई० में एक बड़ा जर्मन राज्य क़ायम कर दिया। आस्ट्रिया से एक दूसरे के साथ मरने मारने की आपस में सन्धि भी कर ली। इस सम्मिलित जर्मनी ने पड़ोसी फ्रांस पर सन् १८७०-७१ में हमला कर दिया और और प्रिंस विस-मार्क की कुटिल नीति के बल विजयी होकर फ्रांस के अल-सेस और लोरेन नामी सूबों को अपने राज्य में मिला लिया। तब से जर्मनी का मन बढ़ गया। अब उसको अपने राज्य बढ़ाने की चिन्ता बढ़ने लगी। सन् १८८२ ई० में इटली से दोस्ती करके सन् १८८४ ई० से घह बाहर निकलने के लिये हाथ पैर फैलाने लगा। उसका धर्मशास्त्र उसको सिखलाता है कि पड़ोसी कमज़ोरों को चाहे जिस प्रकार हो अपने में मिला लेना धर्म है। जैसे बहुत से लोग छोटे छोटे पशुओं की छाती पर सवार होकर उनका प्राण लेना धर्म के अनुकूल सम-झते हैं। इसी नीति के बस जर्मनी की आँख बेलजियम, हालैंड, स्विटज़रलैंड और फ्रांस इत्यादि पर लगी है। फ्रांस, जर्मनी आस्ट्रिया और इटली की मिली हुई शक्ति से बहुत डर गया। उधर रूस भी इन तीनों के मिल जाने से बहुत डरा और समझ गया कि अब बालकन राज्यों पर किसी तरह उस का प्रभाव नहीं पड़ सकता। इससे जर्मनी की चालबाज़ियों का ज़वाब देने और योरप के राजमण्डल में राजशक्तियों की

---

* प्रिंस विसमार्क जर्मनी के महामन्त्री थे। इन्हीं के उद्योग से जर्मनी का सम्मिलित राज्य बना है। यह १९वीं सदी में कुटिल राजनीति के आचार्य कहे जाते थे। इनको मैं यूरप का चाणक्य कहा करता हूँ।

तराज़ू का पलरा बराबर रखने के लिये फ्रांस और रूस ने आपस में सन् १८६१ ई० में दोस्ती कर ली। यह मित्र-बन्धन १८६५ ई० में और दृढ़ हो गया। इस तरह तीन दोस्तों (जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली) के मुक़ाबिले में दो दोस्त (रूस, फ्रांस) तैयार हो गए, और चुपके चुपके सब लड़ाई की तैयारी करने लगे।

बृटेन—फ्रांस

मैत्री होत कुलीन सों, सो नहिं टूटन योग।

ये दोनों देश भी पड़ोसी हैं। इनके बीच में केवल समुद्र का एक पतला हिस्सा है, जिसको इङ्गलिश चेनल कहते हैं। इन दोनों में भी हज़ारों वर्षों से झगड़ा चला आता था, परन्तु नेपोलियन बोनापार्ट* के क़ैद हो जाने के बाद फ्रांस

*नेपोलियन बोनापार्ट फ्रांस के एक ग़रीब वकील का लड़का था। होते होते वह फ्रांस का बादशाह हो गया। उसका प्रताप यूरप भर में छा गया था। स्पेन पुर्तगाल से लेकर रूस की राजधानी तक उसका दबदबा जम गया था। इटली, जर्मनी, आस्ट्रिया, उसके पैरों पर लोटते थे। परन्तु अँगरेज़ों ने किसी को लालच दिलाकर, किसी को मित्र बनाकर और किसी को डरा कर अपनी ओर मिला लिया।

साम दाम अरु दण्ड विभेदा, नृप उर बसहिं नाथ कह वेदा।

फिर तो बोनापार्ट की एक न चली। फ्रांस की राजगद्दी छोड़ कर भूमध्य सागर के इल्वा टापू में रहना स्वीकार कर लिया। परन्तु घात पाकर फिर वहाँ से निकल आया और फ्रांस में आकर अपनी स्वाभाविक मनमोहनी बातों से फौज़ को अपनी ओर फिर मिलाकर उत्पात करने लगा। परन्तु सारा यूरप देश अँगरेज़ों की तरफ हो गया और सन् १८१५ ई० में वह वाटरलू की लड़ाई में कैद कर लिया गया। अँगरेज़ों ने उसे सेन्ट हेलिना टापू में कैद कर रक्खा जहाँ वह सन् १८२१ ई० में रो रो कर मर गया।

देश बहुत दब गया। बीच में (सन् १८६८ ई० में) मिश्र और फ़सोदा के कारण झगड़ा होते होते बच गया।

परन्तु मृत महाराजा एडवर्ड के गद्दी पर बैठते ही हवा दूसरी तरह की चलने लगी। इन दोनों देशों की शत्रुता दुम दबा कर भाग ही नहीं गई, वरंच इनमें गाढ़ी मित्रता हो गई। सन् १६०४ ई० में आपस में राज़ीनामा हो गया। फ्रांस में मृत महाराज एडवर्ड की बड़ी इज़्ज़त की गई, उधर फ्रांस के सरपंच माननीय पाइनकेर की अँगरेज़ों ने अपने देश में बड़ी ख़ातिर की। सन् १६०५—१६०६ ई० में फ्रांस ने अँगरेज़ों का प्रभाव मिश्र पर और अङ्गरेज़ों ने फ्रांस का प्रभुत्व मराको पर मान लिया।

यह देख जर्मनी ने कुछ भुनभुनाना आरम्भ किया था, परन्तु उसके भुनभुनाने का फ्रांस और इङ्गलैण्ड ने उतना भी ख़्याल नहीं किया जितना छोटे बच्चे कातिक में वर्र का करते हैं। सन् १६११—१२ में मराको के सम्बन्ध में जर्मनी कुछ सिर उठाना चाहता था, परन्तु अङ्गरेज़ी जंगी बेड़ों की तैयारी की फुसकार सुनते ही वह दुम दबाकर बैठ गया। इन्हीं कारणों से फ्रांस से मित्रता बढ़ती गई। अन्त में फ्रांस और बृटेन ने आपस में राज़ीनामा कर लिया कि फ्रांसीसी जहाज़ी बेड़ा भूमध्य सागर में रह कर फ्रांस और इंगलैण्ड के व्योपार की रक्षा करे और अँगरेज़ी बेड़ा उत्तरी समुद्र में रह कर फ्रांस की उत्तरी और पश्चिमी सीमा की रक्षा करे। इसके अलावा इन दोनों देशों में और किसी प्रकार की संधि नहीं है, कि लड़ाई के वक़्त एक दूसरे की मदद करें। केवल पड़ोसी होने का जो स्वाभाविक नाता है, उसी से दोनों देश बँधे हैं। और अपने पड़ोसी को प्यार करो (Love your neighbour.) का पाठ उदाहरण देकर दूसरों को दिखलाना

चाहते हैं। परमेश्वर इस जोड़ी को अमर करे और इनकी मित्रता इन्द्र के वज्र मारने पर भी न टूटे।

आस्ट्रिया—सर्विया

आस्ट्रिया और हंगरी मिलकर एक आस्ट्रिया का बड़ा राज्य बना है इस राज्य में हंगेरियन क़ौम के लोग मध्य एशिया से आकर १००० ई० के लग भग बसे थे। इस राज्य में स्लेव आधे से ज़्यादा हैं (२ करोड़ ५० लाख) जिनमें केवल सर्व ५० लाख हैं। रूस के लोग भी स्लेव हैं। इस तरह रूस का भाई चारा आस्ट्रिया की स्लेव प्रजा से है। सन् १९०८ ई० में जब टर्की में सुधार होने लगा तो फ़ौरन आस्ट्रिया ने बोसानिया और हर्ज़ेगोवोना को जो उसकी निग-रानी में सन् १८७८—१८७९ ई० में रक्खे गये थे, जर्मनी की राय से अपने राज्य में मिला लिया। सर्विया इस पर बिगड़ा। रूस उसकी सहायता करना चाहता था परन्तु जर्मनी, आस्ट्रिया की पीठ ठोंक कर हथियार चमकाने लगा। बस रूस जो उस समय तक जापान के थपेड़े से होश नहीं सम्हाल सका था, दब गया। इस तरह उस समय आस्ट्रिया की जीत हो गई। उसका मन बढ़ गया। वह यही चाहता है कि बालकन राज्यों में अपना प्रभाव बढ़ावें और छोटे और कमज़ोर राज्यों को जर्मनी की सहायता से हड़प कर एजियन और एड्रियाटिक समुद्रों में अपना सिक्का जमावें, जिससे जर्मनी को एशियाई रूम में होकर फ़ारस की खाड़ी की राह आगे बढ़ने के लिये रास्ता मिल जाय। सर्विया पहले सुलतान टर्की के हाथ में था। सन् १८७८—१८७९ ई० में रूस की सहायता से स्वतन्त्र हो गया। चूंकि दोनों देशों में स्लेव बसते हैं इसलिये रूस को सर्विया से प्रेम है। दूसरी बात यह

है कि रूस अपना प्रभाव बालकन राज्यों पर रखना चाहता है इससे भी सर्विया की पीठ ठोंकता रहता है। इधर सर्विया उन सब सूबों को, जहाँ सर्व जाति के लोग रहते हैं, अपने में मिलाकर एक बड़ा राज्य क़ायम करने का स्वप्न देख रहा है, इसी से आस्ट्रिया अपनी प्रजा सर्व जाति से हमेशा शक करता रहता है। आस्ट्रिया के अफ़सर सर्वों के ऊपर प्रायः अत्याचार करते हैं। सर्व जाति की जो पलटनें हैं आस्ट्रिया कभी उन सूबों में (क्रोशिया, बोसानिया, हर्ज़गोवीना, और डेल्मेशिया इत्यादि) नहीं रखता जहाँ सर्व लोग बसते हैं। इस अविश्वास के कारण सर्व जगत में बड़ा असन्तोष फैला रहता है। आस्ट्रिया समझता है कि सर्विया के लोग अपने भाई बन्धुओं को स्वतन्त्र होने के लिये उभारा करते हैं। इधर सन् १९१२—१३ में टर्की की लड़ाई में सर्विया ने तुर्कों से कुछ राज्य छीन लिया है इस प्रकार सलोनिका का सूबा समुद्र के किनारे उसके हाथ लग गया और उसने ग्रीस से व्योपारिक संधि भी करली जिससे सर्विया का प्रभाव बालकन राज्यों में पहिले से अधिक हो गया है। इससे आस्ट्रिया और जर्मनी दोनों जल उठे हैं और सर्विया को दबोचने के लिये राह ढूँढ़ने लगे हैं।

रूस-आस्ट्रिया

सर्विया के कारण रूस तो आस्ट्रिया से बुरा मानता ही है इसके अलावा आस्ट्रिया के गलेशिया इत्यादि सूबों में रूसी लोग रहते हैं, जिनके साथ आस्ट्रिया के अफ़सर अच्छा बर्ताव नहीं करते, इससे भी रूस और आस्ट्रिया का मनमोटाव रहता है। परन्तु सबसे बड़ा कारण रूस-रूम की लड़ाई के बाद (१८७८—७९) आरम्भ हुआ। जब रूस विजयी होने

पर भी अपने मुआफ़िक़ रूम से सन्धि नहीं कर सका, उसकी लिखी लिखाई सन्धि फिर बर्लिन में यूरप के राजाओं की एक सभा में, जिसके सभापति वे ही १६ वीं सदी के यूरप के चाणक्य, कुटिल राजनीति के आचार्य्य, जर्मनी के महामन्त्री प्रिन्स विसमार्क थे, पेश की गई । चूँकि अङ्गरेज़ों की भी राय उसी ओर थी, इसलिये रूस को उस समय दबना पड़ा । आस्ट्रिया की निगरानी में बोसानिया और हर्ज़गोवीना के सूबे रक्खे गए, रूमानिया, सर्विया, मांटनीग्रो जहां ईसाई बसते थे स्वतंत्र राज बना दिए गए, और बलगेरिया रूम की अधीनता में स्वतंत्रता का सुख भोगने लगा । सन् १६०८ ई० में जब टर्की में सुधार होने लगा तो आस्ट्रिया ने जर्मनी की राय से बोसानिया और हर्ज़गोवीना को अपने राज्य में मिला लिया इस तरह रूस को आस्ट्रिया के मुक़ाबिले में दो दफ़ा सिर नीचा करना पड़ा । इस कारण बालकन राज्यों में अपना प्रभाव जमाने के लिए दोनों ज़ोर शोर से भीतर ही भीतर तैयारियाँ करने लगे ।

जर्मनी-रूस ।

जर्मनी—ट्यूटेनिक जाति का सरदार है और स्लेव जाति का मुखिया रूस है, इन दोनों जातों में हज़ारों वर्ष का जाती झगड़ा है । अलावा इसके आस्ट्रिया के कारण जर्मनी रूस से चिढ़ा करता है । गोकि ऊपर से मित्र भाव रखता है । जर्मनी एशिया में आने के लिये आस्ट्रिया की सहायता से बालकन राज्यों पर प्रभाव रखना चाहता है । वह अपनी चालाकी से फ़ारिस और फ़ारिस की खाड़ी तक पहुँचकर रूस और अंङ्गरेज़ों के प्रभाव में धक्का पहुँचाना चाहता है । जिसे रूस समझता है, जिससे वह भी जर्मनी के मुक़ाबिले में

पैतरेबाज़ी किया करता है। दूसरी बात बाल्टिक समुद्र की है। इस समुद्र में दोनों में से हर एक अपना ही प्रभाव चाहता है लेकिन जैसे एक स्थान में दो तलवार नहीं रह सकती इसी तरह दोनों राज्यों के जङ्गी जहाज़ी बेड़े, मित्र भाव से बहुत दिन तक एक साथ नहीं रह सकते इस कारण भी दोनों में मनमोटाव बढ़ता जाता था। तीसरी बात यह है कि सन् १८९१ ई० में रूस ने फ्रांस से मित्रता कर ली जिसे उन दोनों ने सन् १८९४-९५ में और दृढ़ कर ली इस तरह जर्मनी और रूस धूमधाम से किसी दिन भिड़ने के लिये तैयारी करने लगे। परन्तु ऊपर से दोस्ती का दम भी भरते जाते थे।

इटली और फ्रांस।

इन दोनों देशों में जाति के नाते आपस में भाईचारा है। फ्रांस ने सन् १८५९ ई० में इटली को आस्ट्रिया के चंगुल से छुड़ा कर स्वतंत्र कर दिया परन्तु फ्रांस के बादशाह ने इटली के दो सूबों (सवाय और नाइस) को दबा लिया, इसके अलावा बनेशिया का सूबा फ्रांस ही की राय से आस्ट्रिया ही के अधिकार में रहा। इससे मन मोटाव दोनों में बना रहा फिर आफ्रिका के उत्तरी भाग में सन् १८७९ ई० में फ्रांस ने ट्यूनिस राज्य पर दख़ल कर लिया जिसे इटलीवाले स्वयं हड़पना चाहते थे। इन्हीं कारणों से फ्रांस से चिढ़ कर इटली ने अपने शत्रु आस्ट्रिया और उसके मित्र जर्मनी से सन् १८८२ ई० में दोस्ती करली। इस प्रकार आस्ट्रिया, जर्मनी और इटली तीनों पड़ोसी मिल कर यूरप में एक भयदायक शक्ति पैदा करने लगे। यह उसी कुटिल राजनीतिविशारद प्रिन्स विस-मार्क की चाल थी। परन्तु उसे स्वयं विश्वास नहीं था कि समय पड़े पर इटली अङ्गरेज़ों के विरुद्ध जर्मनी का साथ

देगा, हालाँ कि सन् १८७०—७१ ई० की लड़ाई में इटली ने जर्मनी का साथ दिया था। इधर कुछ दिनों से इटली फ्रांस के पुराने उपकारों की सुधि करके अपना प्रेम फ्रांस की ओर झुका रहा है। दूसरे अङ्गरेज़ों के निःस्वार्थ उपकारों का ऋणी है। और अङ्गरेज़ों और फ्रांसीसियों में प्रेमभाव है। इसलिये भी इटली फ्रांस को बुरी निगाह से देखना भूल गया है। तीसरी बात यह है कि एड्रियाटिक समुद्र और बालकन राज्यों में अपने पुराने शत्रु आस्ट्रिया का बढ़ता हुआ प्रभाव इटली को खटकता है क्यों कि व्योपार की दृष्टि से इटली को एड्रिया-टिक समुद्र और बालकन राज्यों में अपना प्रभाव रखना चाहिए इससे आस्ट्रिया के कारण भी इटली का मन उस तरफ़ से हट कर फ्रांस और अँगरेज़ों की तरफ़ झुक रहा है और उसे आशा भी है कि अँगरेज़ और फ्रांसीसियों की मदद से उसको आगे फ़ायदा पहुँचेगा।

इटली ने अपने दोस्तों को क्यों त्यागा ?

अकसर लोग इटली की चालों पर संदेह किया करते हैं। आजकल लड़ाई के दिनों में बहुतेरे इटली को जर्मनी और आस्ट्रिया का साथ न देने के कारण बदनाम कर रहे हैं। बहुतेरे उसको धोखेवाज़ और स्वार्थी कह कर बुरा भला कहते हैं। परन्तु मैं इटली की दृढ़ता पर उसकी बिना प्रशंसा किये चुप नहीं रह सकता। इटली तुम धन्य हो!

"मैं जानउं तुम्हारि सब रीती।
अति नय निपुण न भाव अनीती" ॥

जब तुमने देखा कि तुम्हारे दोस्त जर्मनी और आस्ट्रिया अभिमान और लालच के बस में होकर लाखों मनुष्यों का खून

कराना चाहते हैं, लाखों औरतों और बच्चों को अनाथ करना मन में ठान लिए हैं। संसार का रोज़गार बन्द कर, लाखों मनुष्यों को बे रोज़गार कर चोर, डाकू और अत्याचारी बनाना चाहते हैं। तब तुमने अत्याचारियों का साथ देना त्याग कर संसार में नीतिनिपुणता और सत्यप्रियता का सम्मिलित झंडा अचल रूप से गाड़ दिया। परमेश्वर तुम्हारी रक्षा करे और धर्म में तुम्हारा चित्त दिन दिन इसी प्रकार बढ़ावे। प्यारे भाइयो, अब आप लोगों को मालूम हो गया होगा कि जर्मनी की बेइमानी और आस्ट्रिया का ज़ुल्म इटली को उनके साथ रहने से मना करता है। वह सत्य के पक्ष पर है। परमात्मा उसको सदैव न्याय के पथ पर चलना सिखलावे और कुटिल मित्रों के कुसंग से बचावे।

प्यारे भाइयो! जब इटली ने अच्छी तरह से समझ लिया कि उसके दोस्त जर्मनी और आस्ट्रिया बिल्कुल अधर्म की लड़ाई लड़ रहे हैं तो उसने उनके बार २ विनय करने, फुसलाने और धमकाने पर भी कुछ ध्यान नहीं दिया। और अपने पापी साथियों को उसी प्रकार दृढ़ चित्त होकर त्याग दिया जैसे विभीषण ने रावण को त्याग दिया था। आज संसार में ऐसा कौन है जो जर्मनी और आस्ट्रिया की ज़ुल्म और ज़्यादतियों, अन्याय और अधर्म को देख कर उससे घृणा न करे। वे ही जर्मनी और आस्ट्रिया का साथ दे सकते हैं जिन्हें पाप करने में डर नहीं है; जिन्हें परमेश्वर का भय नहीं है; जिन्हें धर्म अधर्म का विवेक नहीं है। इन पापियों का वही साथ कर सकता है जो महापापी होगा, जो कृतघ्नी होगा। फिर इटली, जो यूरोप के धर्मगुरुओं का जन्मस्थान है, जर्मनी या आस्ट्रिया का कैसे साथ करता? इटली के अपने मित्रों से अलग रहने का मुख्य कारण यही है। ठीक कहा है,

" बरु भल बास नरक कर ताता।
दुष्ट संग जनि देइ विधाता " ॥

इटली ने विभीषण की तरह अपने भाइयों को त्याग तो दिया परन्तु मुझे आश्चर्य मालूम होता है कि अभी तक ज़ालिमों के विरुद्ध खड़ा क्यों नहीं हुआ ?

बेलजियम-इंगलैंड।

शरणागत कहँ जो तजहिं, हित अनहित अनुमानि।
ते नर पामर पापमय, तिन्हैं विलोकत हानि॥

बेलजियम और हालेंड नीची ज़मीन में हैं और समुद्र में बाँध, बाँधकर बसे हैं। ये दोनों बहुत दिनों तक स्पेन के अधीन रहे। जब स्पेन और इङ्गलैंड में अनबन हुई तो अङ्गरेज़ इन देशों को स्वतंत्र कराने की चेष्टा में लगे। स्पेन की ताक़त कम होने पर ये दोनों देश फ्रांस वालों के हाथ में रहे। इसी कारण १७वीं और १८वीं सदी में (आज से २०० वर्ष पहिले) लगभग २०० वर्ष तक अंगरेज़ और फ्रांस लड़ते रहे। जब तक ये देश आस्ट्रिया वालों के हाथ रहे तब तक अंगरेज़ शान्त रहे। फ्रांस वालों के कब्ज़े में आते ही फिर अंगरेज़ों से लड़ाई शुरू हो गई। और सन् १८१५ ई० में नेपोलियन बोनापार्ट के क़ैद होने के बाद ये दोनों देश हालेंड के बादशाह के अधीन स्वतन्त्र कर दिए गए। सन् १८३० ई० में बेलजियम ने हालेंड वालों के विरुद्ध बलवा मचाया, इस तरह सन् १८३१ ई० में पंचों की राय से वह स्वतन्त्र कर दिया गया और उसके पास लुक्सम बर्ग की छोटी ज़मींदारी सन् १८३८ ई० में स्वतन्त्र कर दी गई।

बेलजियम में अंगरेज़ों के नातेदार सैक्सोवर्ग के मालिक लियेपोल्ड बादशाह बनाए गए। बेलजियम की स्वतंत्रता की रक्षा का भार सन् १८३९ ई० से जर्मनी, फ्रांस और इङ्गलैंड ने अपने हाथों में लिया अर्थात् इन तीनों राज्यों ने प्रतिज्ञा की कि बेलजियम की स्वतन्त्रता में बाधा नहीं डाली जायगी और इनके आपस के झगड़े के समय वह निष्पक्ष रहेगा। सन् १८७०-७१ ई० में जब जर्मनी ने फ्रांस पर हमला किया था, उस समय अङ्गरेज़ों के पूछने पर जर्मनी और फ्रांस ने बेलजियम की स्वतन्त्रता नष्ट न करने का वचन दिया था और उस का पालन भी किया था। आज लियेपोल्ड दूसरे के भतीजे एलबर्ट बेलजियम के बादशाह हैं। इनकी स्वतन्त्रता बनाए रखने के लिये जर्मनी आज लगातार तीन वर्षों से (सन् १९११ से १९१३ तक) वचन देता रहा था। इस तरह इंगलैंड बेलजियम के साथ बँधा हुआ है। इङ्गलैंड ने बेलजियम को अपनी शरण में किसी लालच से रक्खा है। और बेलजियम को इङ्गलैंड ही का ज्यादा भरोसा भी रहता है। क्योंकि वह जानता है कि इंगलैंड सदा धर्म के पथ पर चलता है और उसे राज्य बढ़ाने का लालच अब नहीं है।

प्यारे भाइयो, ऊपर यूरप के राजाओं का जो कुछ हाल दिया गया है। उससे आपको साफ़ २ मालूम हो गया होगा कि यूरुप में दो दल मुख्य राजाओं के हैं। एक दल में बृटेन, रूस और फ्रांस हैं और दूसरे दल में जर्मनी, आस्ट्रिया और इटली ये दोनों दल बहुत दिनों से अपने २ दाँव पेंच से चलते आते थे, परन्तु सभी जानते थे कि फ़ौजों की तैयारी में जो रुपया पानी की तरह बहाया जा रहा है, उससे एक रोज़ अपनी मान मर्यादा के लिए काम लेना पड़ेगा। और यूरप में संसार के डराने वाली लड़ाई किसी न किसी दिन ज़रूर होगी।

हालां कि अङ्गरेज़ हमेशा इसी चिन्ता में रहे कि बड़े २ राज्यों में लड़ाई न हो नहीं तो संसार में बड़ी खून ख़राबी होगी। नाहक़ लोग मारे जायँगे—अनाथ होंगे और रोज़गार बन्द हो जायगा । परन्तु लोग यह भी जानते थे कि जर्मनी अपनी चढ़ती जवानी के जोश में, बिना ठोकर खाए कभी चुप न बैठेगा और न राज्य बढ़ाने का लालच छोड़ेगा। जर्मनी किस से और कब भिड़ेगा यह उसकी तैयारी के ऊपर निर्भर था। जर्मनी के आजकल के बादशाह (कैसर विलियम) प्रिंस बिसमार्क के चेला हैं, उनकी कुटिल नीति भी बड़ी टेढ़ी चलती है, उनके यहां (जर्मनी में) गुप्त दूतों का महकमा बड़ा ज़बर्दस्त है। मुझे मालूम होता है कि जर्मनी वालों ने मुद्रा राक्षस नाटक* पढ़कर ही इस महकमें में इतनी चतुरता प्राप्त की है। जर्मनी वाले अपने दुश्मनों के गुप्त भेदों को जानने में बड़े चतुर हैं। इसलिए जब अवसर मिलेगा तब ही वे किसी न किसी से भिड़ जांयगे। इस बात को हमारे प्रजा प्रिय वाइसराय श्रीमान लार्ड हार्डिंग साहेब बहादुर भी जानते थे कि जर्मनी भीतर ही भीतर बड़े ज़ोर शोर से आज २० वर्ष से लड़ाई की तैयारी कर रहा है और अवसर पाते ही वह लड़ाई शुरू कर देगा। यूरप में बड़े २ राजाओं की आपस की दलबन्दी जर्मनी ही के कारण हुई है। और इस दलबन्दी की चाल चलाने वाला कुटिल, कपटियों का गुरु वही जर्मनी का महामन्त्री प्रिंस बिसमार्क, जिसे मैं चाणक्य का अवतार कहा करता हूँ, था।

---

*यह एक संस्कृत की पुस्तक है। इसका भाषानुवाद श्रीभारतेंदु बाबू हरिश्चन्द्र जी ने किया है। यदि किसी को बिसमार्क की चालों के जानने का शौक हो तो वह कृपा कर मुद्राराक्षस अवश्य पढ़ें।

इस दलबन्दी के मुख्य ४ कारण हैं ।

(१) जातीय झगड़ा ।

यूरप में ट्यूटंस और स्लेव जातियों का झगड़ा हज़ारों वर्ष से चला आता है। एक जाति दूसरे से डाह रखती है। वे आपस में एक दूसरे के बढ़ते हुए प्रभाव को देख कर जला करते हैं और चाहते हैं कि शत्रुजाति बढ़ने न पावे। जर्मनी ट्यूटंस का सरदार है और रूस स्लेव जातों का मुखिया है। इस कारण इन दोनों में से हर एक अपना २ दल बढ़ाना चाहता है, जिसमें कि शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहे।

(२) अलसेस-लोरेन के सूबे ।

लोरेन के सूबे में, फ्रांस के सम्बन्धी और भाई रहते हैं। अलसेस को फ्रांसीसी अपने राज्य में मानते हैं। जर्मनी कहता है कि राइन नदी के दोनों किनारों पर हमारा स्वाभाविक राज्य है। इस कारण इन दोनों देशों में बहुत मनमोटाव रहता है। सन् १८७०-७१ ई० में जर्मनी ने फ्रांस को हरा कर इन सूबों को अपने राज्य में मिला लिया। उस वक्त जर्मनी की सहायता आस्ट्रिया और इटली ने भी की थी। इटली ने भी इस सहायता के बदले में फ्रांस का एक सूबा छीन लिया था। फ्रांस ने कमज़ोर हो जाने के कारण जर्मनी के शत्रु रूस से सन् १८९१ ई० में सन्धि कर ली। इस तरह दो बड़े दल हो गए। एक दल में जर्मनी आस्ट्रिया और इटली रहे, दूसरे दल में रूस और फ्रांस। इंगलैंड का फ्रांस के साथ केवल एक प्रकार का पड़ोसी के नाते समझौता मात्र है। वह किसी संधि के द्वारा फ्रांस को लड़ाई में मदद देने के लिए बँधा नहीं है।

(३) बालकन राज्य और टर्की ।*

इनके कारण भी दलबन्दी में जोश आया है । क्योंकि बालकन राज्यों और टर्की में यदि रूस का प्रभाव बढ़ा तो दूसरे दल को हानि पहुँचेगी और यदि जर्मनी, आस्ट्रिया और इटली का प्रभाव बढ़ा तो रूस के हित की हानि होगी । और सम्भव है कि अंगरेज़ों और फ्रांसीसियों के प्रभाव पर भी पूर्वी और दक्षिणी यूरप के समुद्र और आफ्रिका के उत्तरी भाग पर असर पड़े ।

(४) इंगलैंड की समुद्री ताक़त ।

यह आप लोगों को मालूम हीं हो गया है, कि हमारी सरकार की समुद्री ताक़त बड़ी ज़बर्दस्त है । इसी से अंगरेज़ों का राज्य और व्योपार सारे संसार में छाया हुआ है । जिसे जर्मनी देख नहीं सकता, इसी से जला करता है, और चाहता है कि अंगरेज़ों से बढ़ जाय । परन्तु उसकी चालबाज़ियाँ मालूम हो गईं । इससे अंगरज़ों की प्रीति जर्मनी की ओर से कम होने लगी । यही कारण है कि फ्रांस हमारी सरकार का प्रेमपात्र बन गया । आपस का मित्रभाव भी बहुत बढ़ गया । अब इन पड़ोसियों में वैसा ही आपस का समझौता हो गया है जैसा दो कुलीन पड़ोसी आपस में मिल कर करते हैं । इस प्रकार रूस, फ्रांस और बृटन एक हो गये । और दोनों दल के लोग सचेत रहने लगे । इस तरह यूरप में बड़े

*टर्की ने अपनी कृतघ्नता प्रगट करने और यह दिखलाने के लिए कि संसार में उससे बढ़ कर और दूसरा कोई महापापी नहीं है अपने सदा के रक्षक अँगरेज़ों और फ्रांस वालों से जर्मनी के जाल में फँस कर लड़ाई मोल ली है । सच है :—

विनाशकाले विपरीतबुद्धिः

बड़े राजाओं के इन दोनों दलों की शक्तियों का पलरा बराबर समझा जाने लगा।

दूसरा अध्याय

(१) लड़ाई का कारण और फ़ौजों की तैयारी।

जैसी होय होतव्यता, तैसी उपजै बुद्धि।
होनहार हृदयें बसै, बिसरि जाय सब सुद्धि॥

पहिले अध्याय के पढ़ने से आप लोगों को मालूम हो गया होगा कि यूरप में बहुत दिनों से दलबन्दी हो रही थी। सभी छोटे बड़े अपनी मान-मर्यादा और अपने स्वार्थ की रक्षा के लिये अपनी अपनी फ़ौज बढ़ा रहे थे। परन्तु जर्मनी भीतर ही भीतर छोटे छोटे राज्यों और उनकी अमलदारियों को, जो दूसरे देशों में हैं, हड़पने के लिये लगभग बीस वर्ष से पूरी तैयारी कर रहा था। अपनी लड़ाई सम्बन्धी तैया-रियों के छिपाने में भी वह बड़ा चतुर है। इस समय उसकी फ़ौज बहुत मज़बूत है। जहाज़ी लड़ाई में भी अंगरेज़ों को छोड़ कर उसे किसी का डर नहीं है। हवाई जहाज़ों की तयारी में फ्रांस से बढ़ने का दावा रखता है। इस तरह अपने को तैयार समझ कैसर विलियम लड़ाई शुरू करने के घात में बैठे थे और बड़ी प्रसन्नतापूर्वक आयरलैंड के होमरूल* संबंधी घरेलू झगड़े को देख रहे थे। इसी बीच में रूस में मज़दूर दल ने बड़ा विकट हड़ताल मचाया। तब

---

*अंगरेज़ी गवर्नमेंट ने उदार अंगरेज़ों की सहायता से आयरलैंड को स्वतंत्र करना विचारा है। परन्तु कुछ लोग इसके विरुद्ध हैं। विरो-धियों ने अपनी बात रखने के लिए लड़ाई करने की तैयारी करली थी। इसी को देखकर दुष्टात्मा जर्मनी वाले खुश हो [illegible] थे।

कैसर विलियम ने समझा कि अब काम आरम्भ करने का समय आ गया। उधर फ्रांस की राज-सभा में आपस की बातचीत से यह बात किसी क़दर प्रगट हुई कि फ्रांस की फ़ौज लड़ाई के योग्य नहीं है। बस फिर क्या था विलियम मोछों पर ताव देते हुए मन ही मन कहने लगे "भई सहाय शारद मैं जाना" क़ैसर के इन्हीं प्रसन्नता के दिनों में आस्ट्रिया के युवराज* बोसानिया के सूबे में अपनी स्त्री सहित घूमने के लिये गए वहाँ सिराजिवो (बोसानिया की राजधानी) में किसी बोसानिया के सर्व जाति के लड़के ने तारीख़ २८ जून को गोली से राजकुमार और राजकुमारी दोनों को मार डाला। इस ख़बर के सुनते ही सारा यूरप चौंक पड़ा। आस्ट्रिया की गवर्नमेंट की तहक़ीक़ात से मालूम हुआ कि राजकुमार के मारने के लिये एक राजनैतिक षड्यंत्र सर्विया में रचा गया था। इसको निश्चय करके ता० २३ जुलाई को आस्ट्रिया ने सर्विया की गवर्नमेंट को नोटिस दिया कि ता० २५ जुलाई की संध्या तक हमारे नोटों का जवाब दो। सर्विया ने जो कुछ जवाब दिया था उससे आस्ट्रिया सन्तुष्ट नहीं हुआ। आस्ट्रिया तब संतुष्ट होता जब उसे सन्तुष्ट होना होता। वह तो राजकुमार के मारने को जर्मनी की राय से लड़ाई का कारण बनाना चाहता था, इसी से उसने अपने नोट में ऐसी बातें लिखीं थीं जिन्हें कोई स्वतंत्र गवर्नमेंट कभी मानने को तैयार न होती। इन शर्तों के मान लेने से सर्विया ज़िन्दा ही मुरदा बन जाता। परन्तु सर्विया ने यह देखकर कि अभी उसके सिपाहियों ने लड़ाई का कमरबन्द भी नहीं खोला है (टर्की और बलगेरिया की लड़ाई के कारण जो सन् १९११-१२

---

* युवराज सन् १८९२ ई० में भारत में भी आए थे और बड़े होनहार थे।

और सन् १९१२-१३ ई० में हुई थी) अभी तक उसकी कमर सीधी नहीं हो सकी है। आस्ट्रिया की १३ शर्तों में से १० को मान लिया, केवल ३ को नहीं माना। फिर क्या था ? आस्ट्रिया के क्रोध का पारा ११० डिगरी तक चढ़ गया। उसने लड़ाई का इश्तिहार २८ जुलाई को देकर सर्विया पर चढ़ाई कर दी और बलग्रेड पर गोला बरसाने लगा। इस बीच में रूस ने जीतोड़ कोशिश की कि मामला आपस में तै हो जाय। उधर अंगरेज़ी गवर्नमेंट, जर्मनी इटली और फ्रांस से लिखा पढ़ी करके मामला पंचायत से तै कराने का उद्योग कर रही थी। परन्तु जर्मनी आस्ट्रिया की सरहद पर रूस को फ़ौज जमा करते देख क्रोध से लाल हो गया और कहने लगा कि यदि तुम फौज न हटाओगे तो मैं तुमसे लड़ूँगा। जब आस्ट्रिया और रूस में लिखा पढ़ी हो रही थी तो फिर कोई कारण जर्मनी के जल्दी करने का नहीं था, परन्तु वहाँ तो बात ही कुछ और थी, बहाना ढूँढ़ा जाता था। फिर ऐसा मौक़ा क्यों हाथ से जाने दे, उसने फौरन रूस को लड़ाई का इश्तिहार दे दिया और अपनी फ़ौज लुक्सम वर्ग और बेलजियम की तरफ़ चला दी। और फ्रांस की सरहद पर भी फ़ौज जमा करने लगा। रूस भी अपनी धुन में पूरी तरह से लग गया और अपनी सरहदी फ़ौजों को जर्मनी और आस्ट्रिया की तरफ बढ़ने का हुक्म दे दिया। जर्मनी का विचार था कि इश्तिहार देने के पहिले ही फ्रांस पर हमला कर दे। वैसा ही उसने किया भी। इसी से जल्दी से वह बेलजियम में घुसना चाहता था। जर्मनी जानता था कि फ्रांस रूस की मदद करेगा, परन्तु रूस के तैयार होने में बहुत समय लगेगा, तब तक वह फ्रांस का काम तमाम करके वीर दर्प के साथ रूस के सामने जा

डरेगा। परन्तु मनुष्य कुछ चेतता है परमेश्वर कुछ करता है।। इस कहावत के अनुसार जर्मनी की सोची हुई बात में बाधा पड़ी। जर्मनी ने बेलजियम के बादशाह से कहलाया कि मेरी फ़ौज को फ्रांस पर हमला करने के लिए अपने राज्य से जाने दो नहीं तो हम ज़बर्दस्ती चले जाँयगे। प्यारे भाइयो, आप लोगों को मालूम ही होगा कि बेलजियम की स्वतन्त्रता की रक्षा करने का भार इङ्गलैण्ड, फ्रांस और जर्मनी ने अपने ऊपर सन् १८३९ ई० में लिया था। लगातार तीन वर्षों से (सन् १९११, १२ और १३ ई०) स्वयं जर्मनी बेलजियम की तटस्थता पर ज़ोर दे रहा था। परन्तु यह सब बनावटी बातें थीं। यह असल में उसे हड़पनाही चाहता था, यह देखकर यद्यपि बेलजियम इस धोखेबाज़ी का उत्तर देने के लिये तैयार नहीं था। परन्तु ऐसे जीवन से मरना अच्छा समझ मरने मारने पर तैयार हो गया—

"पराधीन ह्वै कौन चहै जीवो जगमाहीं,
को पहिरै दासत्व शृंखला निज पगमाहीं।
इक दिन की दासता अहै शत कोटि नरकसम,
पलभर को स्वाधीन पनो स्वर्गहुँ ते उत्तम॥"*

इन्हीं सब बातों को विचार कर बेलजियम के महाराज ने प्रतिज्ञा की।

"जबलों तन में प्राण न तबलों मुख को मोड़ों,
जबलों कर में शक्ति न तबलों शस्त्रहिं छोड़ौं।
जबलों जिह्वा सरस दीन बच नहिं उच्चारौं,
जबलों धड़पै सीस झुकावन नाहिं बिचारौं॥"*

*महाराणा प्रतापसिंह।

और अपने धीर वीर बेलजियनों को बेईमान जर्मनी की गति रोकने के लिये उपदेश किया—

"खोवहु जिन निज धीरता, धोवहु जिन निज लाज।
सोवहु जिन सुख सेज पै, जबलों सरै न काज॥
जबलों सरै न काज, न तबलों थिर ह्वै रहिए।
जो दुख सिर पै परै, धीर ह्वै सब कछु सहिए॥"*

बेलजियन पूरे क्षत्रिय हैं। वे क्षत्रियों की तरह अपने महाराज की बात सुनकर रणक्षेत्र में प्राण देना पराधीन होने से अच्छा समझने लगे। वे फ़ौरन लड़ाई की तैयारी करने लगे और हमारे महाराज जार्ज पञ्चम को जर्मनी की दग़ाबाज़ी की सूचना देते हुए उनके शरणागत हुए। इस सूचना के पाते ही हमारे शरणागतवत्सल महाराज कोप से काँप उठे, परन्तु अपने को सम्हाल कर जर्मनी और फ्रांस से पूछा कि वे बेलजियम की तटस्थता तो भंग न करेंगे। फ्रांस ने फ़ौरन जवाब दिया कि वह बेलजियम की स्वतन्त्रता भंग न करेगा। परन्तु जर्मनी ने अपनी सदा की टेढ़ी चाल से टेढ़ा मेढ़ा टालमटोल का उत्तर दिया। इस पर उससे स्पष्ट उत्तर २४ घंटे के अन्दर मांगा गया। साफ़ उत्तर न आने पर महाराज ने मजबूर होकर जर्मनी से लड़ने के लिये ता० ४ अगस्त को लड़ाई का इश्तिहार दे दिया। हमारी बृटिश गवर्नमेंट को, जो हमेशा शांति चाहती है, अपनी मान-मर्यादा और संसार में धर्म की मर्यादा क़ायम रखना, सभ्यता का आदर बनाये रखना, और कमज़ोर छोटों की रक्षा ज़ालिम जबर्दस्तों से करना अपना कर्तव्य समझ कर, लड़ाई के मैदान में आना पड़ा। फ़ौज को तैयार होने का हुक्म हो गया। प्यारे भाइयो! यहाँ

* महाराणा प्रतापसिंह।

थोड़ा ठहर कर विचारिए तो सही, कि इस संसारव्यापी लड़ाई का असल बानी कौन है? लाखों मनुष्यों के काटे जाने का पाप किस की गर्दन पर है? हज़ारों औरतों और बच्चों के विधवा और अनाथ करने का पाप किस को होगा! ब्योपार बन्द होने से लाखों आदमी बे रोज़गार होकर भूखों मरेंगे, वा अत्याचार करेंगे इसके लिये कौन जवाबदेह होगा! यदि इन प्रश्नों का कोई मुझ से उत्तर माँगे तो मैं यही कहूँगा कि जर्मनी! जर्मनी!! जर्मनी!!!

जर्मनी को बड़ा अभिमान हो गया है। वह अपनी फौज की ताक़त पर मतवाला होकर रावण की तरह अन्धा हो गया है। उसे इस समय न्याय अन्याय, धर्म अधर्म कुछ नहीं सूझता। वह पापी दुर्योधन की तरह लड़ाई लड़ाई चिल्ला रहा है, किसी के समझाने की कान नहीं करता। प्यारे भाइयो!

"जिन्हें अनीति करत डर नाहीं।
ते जैहैं थोड़े दिन माहीं॥"

जो हित की बात नहीं मानता अन्त में उसका विनाश ज़रूर ही होता है। मतलब साधने के लिए, सीधे, शान्त, परन्तु वीर बेलजियनों को तलवार से काटने का बदला परमात्मा जर्मनी को जल्दी ही देगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पाप के लिये उसका नाम ही इस संसार से मिट जायगा।

अरे जर्मनी! अँगरेज़ों से लड़ना सहज नहीं है—

"मिले न कबहुं सुभट रण गाढ़े।
द्विज देवता घरहि के बाढ़े॥"

तूने बिसमार्क की कुटिल नीति के बल से आस्ट्रिया और फ्रांस को नीचा क्या दिखाया तेरा सिर आसमान पर चढ़ गया। याद रख कि अब की—

"भले घरे तुम बायन दीन्हा।
पावहुगे फल आपन कीन्हा॥"

प्यारे भाइयो! जर्मनी की फ़ौज निःसन्देह बहुत बड़ी है, बड़ी बलवान है, बड़ी बहादुर है, उसकी फौज में लड़ाई के सामान सब अव्वल दर्जे के हैं, उसकी फ़ौज के सेनापति बड़े धीर, बड़े रणविद्याविशारद हैं। इसी से उसे गर्व है।* पर आप लोग तो जानते हैं कि दुर्योधन की फ़ौज बहुत बड़ी थी, बड़ी बलवान और बहादुर भी थी, जयद्रथ, कृपाचार्य, कर्ण, द्रोण और भीष्म उसके सेनापति थे परन्तु उसको हारना पड़ा। उसका सत्यानाश हो गया। इसी प्रकार जर्मनी का अहंकार इस बार चूर्ण होगा, क्योंकि "जय धर्म की होती है" रे अधम जर्मनी! मुझे तेरे ऊपर दया आती है, तू हमारे बृटेन से भाई चारे का सम्बन्ध रखता है। हमारे महाराज के क़ैसर विलियम फुफेरे भाई होते हैं, हमारे महाराज के दादा, प्रिंस-अलबर्ट विक्टर, जर्मनी के एक नामी तअल्लुकेदार थे, परन्तु तौभी तूने अभिमान बस सब नातों से मुँह मोड़ हित की बात सुनने से कान फेर लिया! तू ने अँगरेज़ों को क्या समझ लिया

---

*जर्मनी आज बीसों वर्ष से लड़ाई की तैयारी में लग रहा है। स्कूल, कालेज, बाज़ार, किला सब जगह लड़ाई ही लड़ाई की चर्चा हुआ करती रही है। इसीसे जर्मनी का अभिमान यादवों से बढ़ गया है। और कैसर विलियम का अभिमान तो कर्ण और रावण को मात कर रहा है।

है! क्या तू ने स्पेन के फिलिप दूसरे* की अभिमान की बात भूल गया? यदि भूला नहीं तो क्या तेरे पास फिलिप से अधिक समुद्री ताक़त है? क्या फिलिप से तू अधिक प्रतापी है? यदि नहीं, तो अजेय आरमेडा और फिलिप के गर्व चूर्ण करने वालों से क्यों भिड़ा? यदि यह सवा ३०० वर्ष की बात होने से तुझे भूल गई है तो भूल जाय पर तू अपने पड़ोसी नेपोलियन बोनापार्ट की बात कैसे भूल गया? यह तो सिर्फ ६६ ही वर्ष की बात है? क्या तू नहीं जानता कि नेपोलियन ने तेरे ही देश को नहीं वरञ्च यूरप महाद्वीप को रौंद डाला था। क्या तू बोनापार्ट से अधिक प्रतापी है? क्या तुझे नेपोलियन से अधिक अपनी फ़ौज का घमण्ड है? यदि नहीं, तो जब

*स्पेन का फिलिप दूसरा अपने समय का बड़ा प्रतापी महाराजा था। उसका यश और प्रताप सारी दुनियाँ में छाया हुआ था। युरुप, अमेरिका और एशिया में सब जगह उसका राज्य फैला हुआ था। अमेरिका का सोना और पूर्वी हिन्द के टापुओं का मसाला तमाम दुनियां के लोगों को स्पेन ही की कृपा से नसीब होता था। जिस समय अँगरेज़ समुद्र में इधर उधर जहाज़ चलाना सीख रहे थे उस समय फिलिप समुद्र का बादशाह कहलाता था। समुद्र के हर कोन में उसकी तूती बोल रही थी। उस समय महारानी एलीज़बथ इंगलैण्ड की रानी थी। इंगलैण्ड से १० गुनी ज्यादा स्पेन की आमदनी थी। ऐसे प्रतापी फिलिप ने अँगरेज़ों को भस्म कर देने की नीयत से 'अजेय आरमेडा' नामी जहाज़ों का बेड़ा तैयार कर इंगलैण्ड पर २९ जुलाई सन् १५८८ ई० को चढ़ गया था। परन्तु अँगरेज़ों का सत्य का पक्ष था, इसलिए परमात्मा की कृपा से आरमेडा का सत्यानाश हो गया और फिलिप की कमर टूट गई। उसी दिन से स्पेन श्रीहीन हो गया और अँगरेज़ों का रोब दाब और बढ़ गया। उसके थोड़े ही दिन बाद अँगरेज़ सौदागर हिन्दुस्तान में आ बिराजे और धीरे २ अत्याचारियों के चंगुल से छुड़ाकर हिन्दुस्तानियों को अपनी शरण में ले लिया।

अंगरेज़ों के सामने गर्दन उठाते ही उसे क़ैद होना पड़ा, तो कैसर का सिर क्यों खुजला रहा है? ऐ विलियम! याद रक्खो जैसे इल्वा विषयक वादे के तोड़ने के कारण नपोलियन को पछताना पड़ा था उसी तरह बेलजियम की सन्धि तोड़ने के कारण तुम्हें पछताना पड़ेगा क्योंकि धर्म फिर भी अङ्गरेज़ों के पक्ष में है। याद रक्खो "गर्व गोविन्दहिं भावत नाहीं।" पिछले सौ वर्षों में नपोलियन ऐसा वीर नहीं हुआ। वह अपने समय का रावण था। जब उसी की दाल अंगरेज़ों के सामने नहीं गली तो तुम्हारी क्या हक़ीक़त कि धर्म का पक्ष लेने वाले अङ्गरेज़ों का सामना कर सको। यदि संसार में महाराजाओं के ऊपर परमेश्वर का राज्य माना जाता है तो तुम्हें अपने घमंड का बदला मिलेगा, यह मुझे दृढ़ विश्वास है।

अगर बोनापार्ट की भी बात याद न रही हो तो न सही क्रीमिया की लड़ाई का हाल तुझे मालूम है कि नहीं। (१८५३-५४) तेरी ही तरह जब रूस के ज़ार ने टर्की को हड़पना चाहा था तब अङ्गरेज़ों ने फ्रांसीसियों और सार्डिनियां वालों की सहायता से रूस की कमर तोड़ डाली थी उसी तरह याद रक्खो इस बार तुम्हारी कमर तोड़ी जायगी। यदि तुम्हें अपनी फ़ौज का घमंड था तो फ्रांस को ललकार कर उसके सामने क्यों नहीं आये? फ्रांस की और तुम्हारी सरहद तो मिली न है? बेलजियनों को, शान्त बेलजियनों को, शस्त्रहीन बेलजियनों को, जिनसे तुम्हीं आज लगातार तीन वर्षों से कह रहे थे कि तुम्हारी स्वतन्त्रता कोई भंग नहीं करेगा; जिसकी स्वतन्त्रता की रक्षा का भार तुम्हारे पिता ने लिया था, जिसे तुमने बार बार दुहराया था; जिसे तुम शान्तिपूर्वक सोने के लिए कह रहे थे; आज उसी सोते बेलजियम के पेट में छुरा घुसेड़ने के लिए तैयार हो गए हो! क्या इसी बेइमानी के

बल से वीर कहलाना चाहते हो ? क्या इसी दग़ाबाज़ी के बल से लड़ाई जीतने की हिम्मत करते हो ? तुम्हारी वीरता को धिक्कार है ! वीरों का तो बाना ही है कि—'प्राण जाय वरु बचन न जाई'।

सन्धि-पत्र को एक तुच्छ काग़ज़ का टुकड़ा कहते हो ! आज बीसवीं सदी में तुम्हारे ऐसा बेहया ढूँढ़ने से न मिलेगा। सारी दुनिया में तुम्हारी बेईमानी ज़ाहिर हो गई। तुम्हारा विश्वास सब जगह से उठ गया परन्तु अब भी तुम सभ्य लोगों के सामने लड़ने के लिए तैयार हो ! तुम मतलब के यार हो, यह सब लोग जान गए। अब आगे तुम से कोई कैसे मित्रता करेगा ? मुझे बड़ा अन्देशा है कि सन्धि-पत्र को एक काग़ज़ का टुकड़ा कहते हुए तुम्हारी ज़बान क्यों नहीं गिर गई। ऐसा जान पड़ता है कि परमात्मा को यही मंज़ूर है कि तुम्हारी ज़बान सिर सहित लड़ाई में गिरे जिसे हज़ारों आदमी देखें और सीखें कि वादा तोड़ने का यही फल मिलता है। यदि मेरी राय मानो तो तुम्हारे लिए और दुनिया के लिए यही अच्छा है कि लाखों की गर्दन कटाने के पहले तुम समुद्र में डूब मरो जिससे तुम्हारे पाप का प्रायश्चित्त हो जाय।

अँगरेज़ क्यों लड़ाई के मैदान में आये ?

"शिवि दधीच बलि जो कछु भाखा,
तन धन तजेउ बचन प्रण राखा।"

प्यारे भाइयो ! यद्यपि इसके पहले बतला दिया गया है कि अङ्गरेज़ लड़ाई के मैदान में क्यों आए तो भी यहाँ साफ़ साफ़ बतला देना ज़रूरी मालूम होता है। अच्छा तो देखिए, गाँव में जो ठाकुर माननीय होता है उसी की ओर सब की निगाह होती है। दो आदमियों के झगड़े गाँव में वही निपटाता

है। छोटों, ग़रीबों और कमज़ोरों की फ़रियाद वही सुनता है। इसी प्रकार आज कल दुनिया की निगाह बृटिश गवर्नमेंट की ओर रहती है। एक बार दुनिया के नक़शे में अङ्गरेज़ी राज्य फिर से देखिए। हमारे महाराजा जार्ज पंचम का कितना बड़ा राज्य है। इतने बड़े राज्य के मालिक के सामने सताये हुए कमज़ोर राजा लोग न जायँगे तो किसके पास जायँगे! छोटों की रक्षा सिवाय महाराजा जार्ज ऐसे नरेशों के और कौन कर सकता है? आज हमारे महाराज लगभग पचास करोड़ नर-नारियों के हर्त्ता कर्त्ता हैं। इनके देश का व्यापार सारे संसार में फैला हुआ है। समुद्र के आजकल येही मालिक कहलाते हैं। येही हमारे हिन्दुस्तान के महाराजाधिराज हैं। पेकिन (चीन) से तेहरान (फ़ारस) तक इनका रोब छाया हुआ है। एफ्रिका का अधिकांश ब्रिटिशराज के पैरों तले लोट रहा है। सारा अमेरिका भाईचारे का दम भर रहा है। आज बृटिशराज को अपना राज्य बढ़ाने का लालच नहीं है। किसी कमज़ोर राजा के राज्य के छीनने की इच्छा नहीं है, हमारी बृटिश गवर्नमेंट ने यूरप के किसी दूसरे देश की गवर्नमेंट से ऐसी सन्धि नहीं की है कि उसे ज़रूर लड़ाई में जाना पड़े। चाहे कुल यूरप देश के नरेश आपस में लड़ें तौभी हमारी गवर्नमेंट अलग रह सकती है। आस्ट्रिया, सर्विया अथवा फ्रांस और जर्मनी के झगड़े से उसे कोई सम्बन्ध नहीं है। परन्तु यदि इस जातीय लड़ाई में अंगरेज़ अपने भाई-बन्धु जर्मन का साथ देकर लड़ाई से अलग रह जाते, बेलजियम को जर्मनी से कुचलते देखते, बेलजियम सम्बन्धी अपनी प्रतिज्ञा भंग करते, अपने पड़ोसी फ्रांस को जो आज बहुत दिनों से यूरप में शान्ति बनाए रखने के लिए इङ्गलैंड का साथ दे रहा है जिसके उत्तरी और पश्चिमी किनारे इङ्गलैंड

के जंगी जहाज़ों की रक्षा में हैं, जिस के एवज़ में फ़्रांस के जंगी जहाज़ भूमध्य सागर में बृटिश के व्योपारी जहाज़ों की चौकसी करते हैं, इस प्रकार का समझौता जिस गवर्नमेंट से हमारी गवर्नमेंट ने किया है क्या उसे एक अहंकारी ज़ालिम से कुचलते देखना अंगरेज़ों को शोभा देता! मेरा तो ख़्याल है कि यदि आज बेलजियम की रक्षा के लिये अंगरेज़ हथियार न उठाते तो दुनियां हमारे महाराज को स्वार्थी, डरपोक, कायर कह कर बदनाम करने लगती। सब जगह थुड़ी थुड़ी हो जाती। हम महाराज हरिश्चन्द्र, दशरथ, शिवि, दधीचि, की सन्तान तो कदापि प्रतिज्ञा भंग करने वाले अपने महाराज को अच्छा न समझते। सब से अधिक हमारे महाराज हम हिन्दुओं की नज़र से गिर पड़ते। यही कारण है कि सारा हिन्दुस्तान आज एक छोर से दूसरे छोर तक महाराज की जै २ मना रहा है। और तन, मन, धन से महाराज की सहायता करने के लिये तैयार है। यही कारण है कि क्षत्रिय नरेश तलवार बाँध कर लड़ाई के मैदान पर गए हैं। यदि ज़रूरत होगी तो इस अकेले भारत से गवर्नमेंट साल भर के अन्दर २५ लाख फौज भेज सकेगी। सारा संसार भी हमारे हिन्दुस्तान की तरह महाराज की प्रशंसा कर रहा है। शरीर में प्राण रहते कोई वीर पुरुष किसी ज़बर्दस्त को अपने दरवाज़े पर, अपने कमज़ोर पड़ोसी को अन्याय से कैसे मारने देगा। क्या परमात्मा ने उसे इसी लिए वीर बनाया है कि ज़ालिम को ज़ुल्म करते देखे और दीन की आरत पुकार पर कुछ ध्यान न दे? यह तो मुझ ऐसे कमज़ोर से भी नहीं देखा जा सकता तो फिर हमारे महाराज जार्ज पंचम कैसे लड़ाई के मैदान में न आते? यदि हमारे महाराज तटस्थ रहते जैसा माननीय रैमज़े मैकडोनल्ड चाहते थे तो

मेरी राय में अङ्गरेजी गवर्नमेंट एक बहुत बड़ी राजनैतिक भूल करती क्योंकि चाहे बनावटी बातों में बिसमार्क के चेला कैसर बिलियम हमें भले ही सन्तोष करा देते, परन्तु बेलजियम के कुचलने के बाद, जर्मनी फ्रांस को कुचलता, फिर अपने मित्र आस्ट्रिया के साथ रूस को घर दबाता फिर हालैण्ड, स्विटज़रलैण्ड, सर्विया, इत्यादि छोटे छोटे राज्यों को आपस में बांट लेता, और तब इटली की ख़बर लेकर भूमध्य सागर में अपना जंगी जहाज़ों का अजेय बेड़ा तैयार करता और कदाचित् इंगलैंड पर चढ़ाई करता तो फिर माननीय रेमज़े मेकडोनल्ड क्या करते? अन्त में उनको जर्मनी का मान मर्दन करने के लिए। लड़ना ही पड़ता और अपनी मान-मर्यादा की रक्षा के लिये धन और जन खोना ही पड़ता, तो फिर स्वार्थी बनकर, प्रतिज्ञा भंग करनेवाला कहला कर, अनाथ शरणागत आए हुए (बेलजियम) को दुरदुराने वाला कहलाकर, ज़ालिम के ज़ुल्म को कायर पुरुषों की तरह खड़े खड़े देखने वाला कहलाकर, अपने सिर पर शत्रु के चढ़ आने पर लड़ने से इस समय का लड़ाई के मैदान में आना हज़ार दर्जे अच्छा था। ऐसा ही इस समय तमाम दुनियां कह रही है। जैसे सन् १८३३ ई० में बृटिश पार्लियामेंट ने बीस करोड़ रुपये से अधिक अपने पास से देकर गुलामी का नाम निशान बृटिश राज्य ही से नहीं वरंच एक प्रकार से सारी दुनियां से मिटा दिया, उसी प्रकार इस समय छोटे कमज़ोर राज्यों की ज़ालिमों से रक्षा करने के लिये, इन्सानियत बनाए रखने के लिए, और पंचायत की बातों का आदर करने के लिए इङ्गलैण्ड का खड़ा होना बड़ी बुद्धिमानी का काम है। इससे इङ्गलैण्ड का नाम सदैव के लिये संसार के इतिहास में सोने के अक्षरों में लिखा जायगा!

जर्मनी ने महाप्रतापशाली अँगरेज़ी गवर्नमेंट से क्यों भिड़ना चाहा ?

मेरी बातों को जिनका ज़िक्र ऊपर हो चुका है सुनने पर भी अक्सर लोग एक सवाल पूछा करते हैं, कि जर्मनी ने सोते हुए सिंह (अङ्गरेज़ी राज्य) को जानबूझ कर क्यों जगाया ? इसका जवाब साफ़ है।

प्रिंस विसमार्क ने सन् १८६६ ई० में जर्मनी के कुल छोटे २ राज्यों को मिलाकर जर्मनी प्रशिया का एक सम्मिलित बड़ा राज्य स्थापित किया। फिर आस्ट्रिया और इटली से सन्धि करके सन् १८७० ई० में फ्रांस पर विजय प्राप्त किया। सन् १८८४ ई० से अपना राज्य बाहर स्थापित करने के लिए कोशिश करने लगा। अङ्गरेज़ों ने जर्मनी के इस बढ़ते हुए उत्साह को कम नहीं होने दिया परंतु जब बुअरों की लड़ाई के दिनों में जर्मनी की छिपी चाल मालूम हो गई तब से अंगरेज़ी गवर्नमेंट का प्रेम उसकी तरफ़ से कम हो गया। परंतु वह भीतर ही भीतर अँगरेज़ों के प्रभाव को कम करने की कोशिश में लगा रहा। सिराजिवो की दुर्घटना के समय अंगरेज़ और रूस दोनों घरेलू झगड़ों में लगे हुए थे। फ्रांस ने ज़ाहिर कर दिया था कि उसकी फ़ौज इस समय लड़ाई के काम की नहीं है। जर्मनी का ख़्याल था कि हिन्दुस्तान अंगरेज़ों का साथ न देगा। क्यों कि राजनैतिक बातों से वहाँ के लोगों में असंतोष फैल रहा है। इससे उसने समझा कि रूस जैसे सन १९०८ ई० में दब गया था इस बार भी दब जायगा और विलायत की पार्लियामेंट एक राय होकर लड़ाई के लिए तैयारी न करेगी, इसी ख्याल से बाज़ी मार ले जाने की इच्छा से उसने लड़ाई के पहिले और अंग-

रेज़ों के चेतावनी देने पर भी, उनका कुछ ख़्याल न किया। असल में उसके गुप्तचरों का अनुमान कि इंगलैंड और रूस के घरेलू झगड़ों और हिन्दुस्तान के राजनैतिक आन्दोलनों से वे लड़ाई करने पर तैयार न होंगे, ग़लत निकला और जर्मनी के मन्त्रियों ने धोखा उठाया। इसी से उन्होंने लड़ाई के लिये कैसर को उभारा। अब उन्हें यह देखकर भूल मालूम होती होगी कि सारा बृटिशराज, क्या आयरलैंड, क्या भारत, क्या कनेडा और क्या आस्ट्रेलिया, सब एकजीव और एकतन होकर लड़ाई की तैयारी करने लगे हैं। "परन्तु अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत'। अब तो कोई जर्मनी से बिना अंगरेज़ों की राय के सुलह भी नहीं कर सकता। अब जर्मनी को बिना कुचले अंगरेज़ दम न लेंगे। अगर उसको मिटिया मेट किए बिना अंगरेज़ सुलह कर लेंगे तो मेरी राय में वैसी ही भूल करेंगे जैसी महाराज पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन के छोड़ देने में की थी। तमाम दुनिया जर्मनी के काम की निन्दा कर रही है। इससे वह बड़े चक्कर में आ गया है अब तो उसके सामने मौत या ज़िन्दगी का सामान है, बिना सोचे विचारे काम करने का जो फल हुआ करता है वह जर्मनी को भोगना पड़ेगा। ठीक कहा है—

"विनाशकाले विपरीतबुद्धिः"

यहाँ पर जर्मनी के प्रधान स्वाधीनताप्रेमियों की अपील जो उन्होंने ब्रिटिश ह्यु मैनटी लीग* के पास भेजी थी लिखना अनुचित न होगा, "निरंकुश अत्याचारी (अपने जर्मनी के बादशाह के लिये लिखा है) ने विकट लड़ाई शुरू कर दी है। किसी भी देश के मज़दूरों से हमारी शत्रुता नहीं है। आज भी

* यह विलायत के दयालु लोगों की एक सभा है।

हम फ्रेंच, वेलजियम, बृटिश प्रजातन्त्र वादियों को गले से लगाने को तैयार हैं, हम लोगों को विश्वास है कि भीतरी बलवे के बल से हम लोग अत्याचारी को, जिसकी लोहू की प्यास हज़ारों अनाथ ग़रीबों का ख़ून बहा कर भी शांत नहीं हो रही है, गद्दी से उतारेंगे" ।

प्यारे भाइयो! यह ख़ास जर्मनी के रहनेवालों के भाव हैं। सच है 'साँच को आँच क्या' इससे आपको अत्याचारी की राजनैतिक चालों का कुछ पता चलेगा ।

जर्मनी को अपनी भूल पर अन्त में रोना पड़ेगा । कैसर विलियम की चक्रवर्ती सम्राट् बनने की इच्छा धूल में मिल जायगी । हमारे महाभारत और रामायण के सूर्य्यवंशी और चन्द्रवंशी चक्रवर्ती महाराजाओं का हाल पढ़कर जो विलियम की लालसा सात द्वीप ६ खण्ड का राज भोगने की हो रही थी वह अंगरेज़ों के खड़े हो जाने से उसी प्रकार हवा हो गई है जैसे सूर्य के उगने से कोहिरा उड़ जाता है । सच्ची बात तो यह है कि वान बर्न हार्डी ऐसे सलाहकारों ने यह कह कह कर कि—

कहहु कवन भय क्षत्रिय विचारा ।
नर कपि भालु अहार हमारा ॥
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं ।
नर बानर केहि लेखे माहीं ॥

इन पापी, कर्ण ऐसे अभिमानी मंत्रियों ने दुर्योधन की तरह विलियम को युद्ध २ चिल्लाने का मन्त्र पढ़ा दिया । बस वह युद्ध करने पर तत्पर हो गया और समझ गया कि इसी युद्ध से वह संसार भर का राजा हो जायगा । इस मृग-तृष्णा ने विलियम को लड़ने के लिए उभारा ।

लड़ाई के संबंध में महापुरुषों के वाक्य

जर्मनी ।

'नोम न मीठी होय सिंचो गुड़ घी से'

जब श्रीमान् एडवर्ड ग्रे ने, जर्मनी और फ्रांस की गवर्नमेंटों से बेलजियम की स्वतन्त्रता भंग न करने के विषय में पूछा तो फ्रांस ने तो उत्तर दिया कि वह बेलजियम की गवर्नमेंट की निष्पक्षता का आदर करेगा। यदि दूसरा कोई निष्पक्षता भंग करेगा तो उसके विरुद्ध वह भी कार्य करेगा। जर्मनी के मन्त्री ने उत्तर दिया कि वह महामन्त्री और बादशाह से बिना पूछे उत्तर नहीं दे सकता। सर विलियम गोसचन ने कहा कि उत्तर उनकी राय में जल्द दिया जायगा, तब मन्त्री ने उनसे कहा कि वह कदाचित् उत्तर न दे सकेगा। क्योंकि इससे उसकी लड़ाई सम्बन्धी नीति का भेद खुल जायगा (इस पर विलायत की पार्लियामेंट में ३ अगस्त को बड़ी हँसी हुई थी)

वृटिश राजदूत और जर्मन मंत्रियों की मुलाक़ात

ता० ४ अगस्त को अङ्गरेज़ी राजदूत ने जो बर्लिन (जर्मनी की राजधानी) में रहता था जर्मनी के मन्त्री हरवान जेगो से पूछा कि क्या जर्मनी बेलजियम की निष्पक्षता भंग करने से बाज़ रहेगा? हरवान जेगो ने तुरन्तउत्तर दिया, नहीं। जर्मनी पहिले ही सीमा को पार कर चुके हैं। जर्मनी को फ्रांस में सब से सरल राह से जाना पड़ेगा, क्योंकि फ्रांस के सरहद्दी क़िलों से पार जाने में समय नष्ट होगा। इस पर हमारे राजदूत ने लड़ाई की सूचना दे दी तो जर्मनी के मंत्री ने

दिखावटी शोक प्रगट किया और कहा कि मैं तो इङ्गलैण्ड को, फिर उसके द्वारा फ्रांस को अपना दोस्त बनाना चाहता था परन्तु मेरी कोशिशों पर पानी फिर गया। हमारे दूत ने कहा, इङ्गलैण्ड संधियों के रहते और क्या कर सकता था। जब जर्मनी के महामंत्री से बात चीत हुई तो उन्होंने क्रोध में आकर बहुत अनाप शनाप बक दिया और कहा कि केवल एक कागज़ के टुकड़े के लिये, जिस पर निष्पक्षता लिखा है, बृटेन अपने एक भाई से लड़ाई छेड़ रहा है। हमारे दूत ने अंगद की तरह निर्भयता के साथ जवाब दिया, कि बृटेन की इज़्ज़त इसी में है कि वह बेलजियम की निष्पक्षता की रक्षा करे और किसी परिणाम के डर से वह इस काम को नहीं छोड़ सकता। जब हमारा राजदूत बर्लिन से तारीख़ ८ अगस्त को विदा होने लगा तो जर्मनी ने हमारे दूत के घर को घेर लिया। उसके मकान की खिड़कियों को तोड़ डाला। और उसको बड़ा तंग किया, इस पर ख़ुद हरवान जेगो ने दुःख प्रकाश करते हुए कहा कि इससे बर्लिन की कीर्ति पर जो धब्बा लगा है, वह कभी नहीं मिटेगा। इस घटना को सुनकर जर्मनी के बादशाह ने अपना एक ख़ास सरदार हमारे दूत के यहाँ भेजकर खेद प्रकट किया और कहलाया कि ग्रेट बृटेन ने अपने वाटरलू* के साथियों के विरुद्ध जो काम किया है, उसके सम्बन्ध में जर्मनी के दिली भाव का पता इस घटना से लग जायगा।

तारीख़ ६ अगस्त को जर्मनी के बादशाह की ओर से नीचे लिखा हुआ इश्तिहार जारी हुआ था। पूर्व पश्चिम और समुद्र पार भी छिपे २ हमारे साथ दुश्मनी की गई है। शत्रु

*वाटरलू की लड़ाई में नपोलियन बोनापार्ट को अङ्गरेज़ों ने जर्मनी, रूस और आस्ट्रिया वालों के साथ मिलकर हराया था।

हमारी बेइज़्ज़ती करना चाहते हैं, उन्हें यह मंजूर नहीं है कि हम अपने उस मित्र (आस्ट्रिया) के साथ अपना धर्म निबाहें जो अपनी शक्ति की रक्षा करने के लिए लड़ रहा है, इसलिए अब तलवार से ही फैसला होगा। अब युद्ध ही हमारे सामने है। अब तनिक भी समय खोना या दबना अपने देश के साथ विश्वासघात करना है। अब हमारे राज्य के जीने और मरने का सवाल है। जर्मन शक्ति या जर्मन अस्तित्व बना रहेगा या नहीं यही सवाल है। हमारे पास जब तक एक आदमी और एक घोड़ा रहेगा, तब तक मैं शत्रुओं से भरी दुनियां से लड़ूंगा। जर्मनी के महामन्त्री ने ता० ४ अगस्त को अपनी राजसभा में कहा था, "सभ्यो! हम लोगों को एक ज़रूरत ने आ घेरा है। जरूरत क़ायदा-क़ानून या धर्म की परवाह नहीं करती! हमारी फ़ौज ने लुक्समबर्ग ले लिया है, शायद अब वह बेलजियम में पहुंच गई है, यह बात सन्धि के विरुद्ध है। यह सही है, कि फ्रांस ने इश्तिहार दे दिया है कि वह बेलजियम की निष्पक्षता की रक्षा उस वक़् तक करेगा जब तक उसका विरोधी उसकी रक्षा करेगा। हम जानते हैं कि फ्रांस ठहर सकता है, पर हम नहीं ठहर सकते (जो जुल्म हम कर रहे हैं, उसका प्रायश्चित हम उस वक्त करेंगे जब हमारा मतलब पूरा हो जायगा) जिसके सामने संकट पड़ता है उसे सिर्फ़ यही चिन्ता रहती है कि वह किस प्रकार अपना मतलब पूरा करे"। प्यारे भाइयो, जर्मनी के बादशाह और उनके मन्त्रियों की बातों को सुनकर क्या कोई मनुष्य कह सकता है कि इनसे बढ़कर चालबाज़, मतलबी, बेईमान और अभिमानी संसार में और कोई हो सकता है? हमारा ख्याल था कि संस्कृत के ज़्यादा प्रचार से जर्मनी के लोगों का व्योहार यूरप में सबसे ज़्यादा

अच्छा हो गयो होगा, परन्तु अब मालूम हुआ है, कि जैसे साँप को दूध पिलाने से भी विष ही बढ़ता है इसी तरह संस्कृत ने अपना कुछ असर वहाँ नहीं फैलाया। जैसे नीम के पेड़ को गुड़-घी से सींचने पर भी वह कड़आ ही रहता है, इसी तरह जर्मन संस्कृत पढ़ने पर भी कुटिल ही बने रहे।

अङ्गरेज़ महापुरुषों के वाक्य।

"चन्द टरै, सूरज टरै, टरै जगत व्योहार।
पै दृढ़ श्रीहरिचन्द्र को, टरै न सत्य विचार॥

महामंत्री

माननीय हर्वट हेनरी एसक्विथ ने कहा है कि तीन वर्ष पहिले हमें अपने न्यायी होने का बहुत विश्वास था। आज भी ऐसा ही विश्वास है। हमको अपनी इच्छा से नहीं बल्कि विचार और विवेक पूर्वक लड़ाई में पूर्ण शक्तिसहित शामिल होना पड़ा है। अगर हम कायर, स्वार्थी और आलसी होकर अपनी इज़्ज़त का ख्याल न कर ऐसे नीच हो जाते, कि अपनी बात को न पालते, अपने दोस्तों के साथ विश्वासघात करते तो राजनैतिक ख्याल से हमारी क्या दशा होती! हम अपना सा मुँह लिए हुए अलग खड़े होकर तमाशा देखते और छोटा सा राज्य अपनी स्वतन्त्रता के लिये अभिमानी सेना से बीरता से लड़ता हुआ पैरों तले कुचला जाता। बेलजियम की उदासीनता नष्ट करने का यही मतलब था कि पहिले बेलजियम, फिर हालैंड, उसके बाद स्वीटजरलैंड की स्वतन्त्रता नष्ट कर उनको हड़प जाय। सर एडवर्ड ग्रे ने शान्ति क़ायम रखने के लिए बड़ी कोशिश की कि जर्मनी फ्रांस, इटली हमारे साथ मिलकर आस्ट्रिया, सर्विया का झगड़ा तै कर दें, अगर यह बात मान ली गई होती तो झगड़ा तै हो गया होता, और यह

उपद्रव न होता। इस संसारव्यापी असीम दुख के फैलाने वाली लड़ाई की ज़िम्मेदारी किस पर है? इसके लिए केवल एक राज्य ज़िम्मेदार है और वह राज्य जर्मनी है। हमने शान्ति क़ायम रखने के लिये बहुत कोशिश की, अन्त में राज्य के बनने बिगड़ने की बात आ गई तब हमने लाचार होकर लड़ाई का इश्तिहार दिया।

मिस्टर बोनरला

उसी गिल्ड हाल की सभा में मिस्टर बोनरला ने कहा था कि इतिहास में यह लड़ाई एक बड़ा पाप है। अगर जर्मनी के बादशाह शान्ति क़ायम रखने के लिये मुँह से एक शब्द भी निकाले होते तो यह युद्ध न होता उन्होंने तलवार निकाली है, इसलिए तलवार ही उनके घृणित काम को नष्ट करे।

महाराज जार्ज पञ्चम का सन्देशा।

क्षतात्किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः।
राज्येन किं तद्विपरीतवृत्तेः प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा।

(रघुवंश)*

जिसे ८ सितम्बर को श्रीमान् वाइसराय ने शिमले की सभा में सुनाया था—

यह दुःखदाई बखेड़ा मेरी इच्छा से नहीं हुआ। मेरा मत हमेशा शान्ति ही की ओर रहा है। मेरे मन्त्रियों ने झगड़े और मत-भेदों के कारणों को दूर करने के लिए और शान्ति बनाए रखने के लिए दिल से कोशिश की। हालाँकि उन कारणों से हमारे राज्य से कोई सम्बन्ध नहीं था।

---

*क्षत (चोट) से सुजनों को बचाने ही के कारण क्षत्रिय शब्द संसार में प्रसिद्ध हुआ है। क्षत्रियगुणहीन राजा को राज्यसुख धिक्कार है। मलिन मन, अजसी होकर जीना वृथा है।

यदि मैं उस समय अपनी प्रतिज्ञा भंग कर अलग हो जाता जब कि बेलजियम पर हमला किया गया, और उसके नगर लूटे गये, जब कि फ्रांस के नाश हो जाने का भय हो गया, तब अपने धर्म ही को छोड़ कर अपने राज्य और मनुष्य मात्र की स्वतन्त्रता नष्ट कर दिए होता। मुझे ख़ुशी है कि इस विचार में हमारे राज्य का प्रत्येक भाग हमारे साथ है। राजा और प्रजा को प्रतिज्ञाओं का पालन करना इङ्गलैण्ड और हिन्दुस्तान की पुश्तैनी सम्पत्ति है।

हिन्दुस्तान के बड़े लाट साहब।

जब लौं जग में मान, तबहि लौं प्रान धारिये।
जब लौं तन में प्रान, न तब लौं धर्म छांड़िये॥

श्रीमान् ने लड़ाई के विषय में ८ सितम्बर को महाराज का सन्देशा सुनाने के बाद कहा था, सिराजिवो में आस्ट्रिया के युवराज और उनकी धर्मपत्नी की हत्या के लिये हम सब दुःखित हैं। परन्तु इस घटना को ऐसे युद्ध का बहाना बनाना जिसमें कुल यूरप के राजाओं का शामिल होना किसी तरह नहीं रुक सकता था, बहुत बुरा हुआ। परन्तु जब तक जर्मनी ने सन्धिपत्रों को पैरों तले कुचलकर बेलजियम पर हमला नहीं किया था तब तक हम इस झगड़े में नहीं पड़े थे। इसके विषय में हमारे बादशाह ने और सर एडवर्ड ग्रे ने जो कुछ किया है उनके यहाँ बयान करने की ज़रूरत नहीं है। बेलजियम की रक्षा करने ही के लिये इङ्गलैण्ड ने तलवार निकाली है। जर्मनी का यह कहना कि फ्रांस हमारे ऊपर बेलजियम की राह आक्रमण करना चाहता था, झूठ है। क्योंकि वह हृदय से शान्ति चाहता था। जर्मनी चाहे जितना इन्कार करे, पर मेरे ऐसे लोगों को ठीक मालूम हो गया था

तीसरा अध्याय

जापान और लड़ाई।

"जे न मित्र दुख होहिं दुखारी,
तिन्हैं विलोकत पातक भारी।
निजदुख गिरि सम रज कर जाना,
मित्र के दुख रज मेरु समाना॥"

जैसे दत्तात्रेय के बहुतेरे गुरु थे उसी तरह जापान के भी बहुत गुरु हैं। उसने भिन्न भिन्न चीज़ भिन्न भिन्न देशों से सीखी हैं, परन्तु बहुत सी बातें उसने जर्मनी ही से सीखी हैं। इससे मैं उसे जर्मनी का चेला कहा करता हूँ। परन्तु जर्मनी की कुटिल नीति ऐसी नहीं है कि वह चेला गुरु का नाता क़ायम रख सके।

काक समान पाक रिपु रीती,
छली मलीन कबहुं परतीती।

जब सन् १८६४ और ६५ में चीन जापान में युद्ध हुआ था जिसमें जीतने पर जापान को चीन का कुछ भाग मिल गया था परन्तु जर्मनी ने फ्रांस और रूस को अपनी ओर मिलाकर उसे दख़ल नहीं करने दिया। इससे जापान बड़ा लज्जित हुआ। परन्तु जब बाक्सरों का बलवा हुआ तो अपने देश के पादरी के मारे जाने के एवज़ में जर्मनी ने चीन से किवचाउ का पट्टा ६६ वर्ष के लिये लिखवा लिया, इस प्रकार उसने जले पर निमक छिड़कने की भांति जापान को और दुःख दिया। और धीरे २ चीन समुद्र में अपना प्रभाव बढ़ाने लगा परन्तु यूरुप के राजाओं से समय २ पर यही कहता रहा कि जापान चीन को मिलाकर या चीन को हड़प कर दुनियाँ

भर में अपना प्रभाव जमाया चाहता है। सब को उससे सचेत रहना चाहिए। इस तरह जापान और जर्मनी का मन मोटाव बढ़ता गया। इधर अंगरेज़ों ने जापान से समझौता कर लिया कि चीन-सागर में अंगरेज़ों की सौदागरी की रक्षा वह करे और हिंद-महासागर में अंगरेज़ उसकी रक्षा करें तथा पूरब में लड़ाई होने पर जापान को अंगरेज़ मदद दें, और अंगरेज़ों को वह मदद दे। इस तरह अंगरेज़ों की जापान से मित्रता हो गई। यही कारण है कि यूरप में लड़ाई छिड़तेही जापान सचेत हो गया और जर्मनी को चीन सागर से अपना जहाज़ी बेड़ा हटा लेने के लिए कहा—जिसे जर्मनी ने स्वीकार नहीं किया। इसलिए जापान को भी मजबूर होकर लड़ाई के मैदान में आना पड़ा। यदि जापान ऐसा न करता तो पूर्वी समुद्रों में हिन्दुस्तान की सौदागरी बिलकुल बन्द ही हो गई होती। इसलिए हम लोगों को जापान को धन्यवाद देना चाहिए। जापान ने लड़ाई का इश्तिहार ता० २३ अगस्त को दे दिया। इस तरह अपने दोस्त की सहायता कर संसार में नाम कर दिया। यदि जापान इस प्रकार लड़ाई के मैदान में न आया होता, तो मालूम नहीं कितने जर्मन क्रूज़र हमारे समुद्र में आकर उत्पात मचाते होते। जापान तुम धन्य हो, मित्र हो तो तुम्हारे ऐसा हो।

चौथा अध्याय

हिन्दुस्तान और लड़ाई

धिक सेवक जो स्वामि काज तजि जीवन धारै,
धिक जीवन जो जीवन हित जिय नाहिं बिचारै।
धिक शरीर जो निज कर्तव्य बिमुख हो बंचै,
धिक धन जो तजि स्वामि काज स्वारथ हित सञ्चै॥

म० प्र० सिंह

हिन्दुस्तान क्या चीज़ है? यहाँ के लोग कितने स्वामि-भक्त हैं? अपने महाराज जार्ज पञ्चम के। किस प्रकार ईश्वर का अंश समझते हैं? इन सब बातें के। हिन्दुस्तान ही के लोग संसार में सबसे अधिक समझते हैं। वे लोग भी हिन्दु-स्तान के शुद्ध भावें के। समझ सकते हैं जो हिन्दुस्तान के प्राचीन इतिहास के पढ़ने के प्रेमी हैं। जर्मनी* के। स्वप्न में भी ख्याल नहीं था कि हिन्दुस्तान निवासी इस प्रकार महाराज जार्ज की सहायता करने पर कमर कस लेंगे। वह नहीं जानता था कि स्वामिभक्ति कूट २ कर हमारी नसें में भरी है। अपने महाराज के हित के लिये प्रसन्नतापूर्वक प्राण देना हिन्दुस्तान के लोग बहुत अच्छी तरह जानते हैं। इसी से आज महाराज जार्ज की प्यारी हिन्दुस्तानी प्रजा अपने कामें से संसार के। चकित कर रही है। हमारे दुश्मनें के। भी मजबूर होकर हमारी तारीफ़ करनी पड़ी है। अगर अब भी हिन्दुस्तान की राजभक्ति में किसी के। शक हो तो हम तो उसे यही कहेंगे, कि वह जागता हुआ सोने का बहाना किए हुए है। अथवा उसकी अक्ल पर पत्थर पड़ा हुआ है। कोई समझदार हिन्दुस्तानी अपने धर्म के पथ से नहीं हट सकता। हिन्दुस्तान में इस समय लगभग ७०० छोटे बड़े कर देने वाले राजा हैं, उन सब लोगें ने अपना तन, मन, धन, सब गवर्न-मेन्ट के। अर्पण कर दिया है। बहुतेरे वीर राजा, महाराजा लड़ाई के मैदान में जाने के लिये तैयार हैं। उनमें से हमारे प्यारे वाइसराय ने अभी सिर्फ़ महाराजा जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, रतलाम, रांची और पटियाला के। चुना है। भूपाल के युवराज और कूचबिहार के राजा के भाई भी चुने गए हैं।

---

*जर्मनी बिचारे के। तो विश्वास था कि लड़ाई होते ही भारत में बलवा मच जायगा।

और वीरशिरोमणि मेजर जेनरल सर प्रतापसिंह जू देव बहादुर जो महाराजा जोधपुर के बाबा और महाराजा जार्ज पंचम के एक प्यारे दोस्त हैं, जो अफ़ग़ानिस्तान की सरहद्दी लड़ाइयाँ और चीन में फ़तहयाबियाँ हासिल कर चुके हैं। इस सत्तर वर्ष की अवस्था में लड़ाई के मैदान में अपने कई सम्बन्धियों के साथ बड़े उत्साह से गए हैं। जिन जिन राज्यों में मददगारी फ़ौज रहती है उन सबों ने अपनी कुल मदद-गारी फ़ौजों को सरकार के हवाले कर दिया है। उनमें से सरकार ने अभी केवल बारह राजाओं से रिसाला, पैदल सेना, बार बरदारी की सेना और रास्ता साफ़ करने की सेना लेना मन्जूर किया है। बीकानेर का मशहूर ऊँटों का रिसाला भी भेजा गया है। बहुत राजाओं ने मिलकर लायल्टी नामक जहाज़ अस्पताल के लिए अपने ख़र्च से भेजा है। मैसूर के महाराज ने पचास लाख रुपया फ़ौज के राह ख़र्च के लिए दिया है। महाराज ग्वालियर ने लायल्टी जहाज़ में मदद के अलावा १ हज़ार घोड़े और ४ लाख ३५ हज़ार रु० मोटर-कार ख़रीदने के लिये दिया है। महाराजा रीवां ने भी लाय-ल्टी जहाज़ में मदद देने के अलावा अपनी सेना, अपना ख़ज़ाना और अपना ज़ेवर तक देने का वादा किया है। और श्रीमान् स्वयं लड़ाई के मैदान पर जाने के लिए बड़े उत्सुक हैं।

महाराज गायकवाड़ ने भी अपना सब कुछ देने का वचन दिया है। निज़ाम हैदराबाद, जाम साहेब, जामनगर और बम्बई के कई राजाओं ने घोड़ों से सहायता करने का वचन दिया है। बम्बई के राजाओं ने भी अपना सब कुछ अर्पण किया है। महाराजा होल्कर ने अपने राज्य के कुल घोड़ों को जिनकी ज़रूरत हो सरकार को ख़र्चे सहित देने का वचन दिया है। लोहारु, सेलवेला और ख़िलात से ऊटों के देने के

वादे हुए हैं। चितराल के मेहतर और ख़ैबर की जातियों ने भी राजभक्ति के सन्देशे भेजे हैं। हमारे काशीनरेश घोड़ों और खच्चरों से सहायता देने के लिए तैयार हैं।

नैपाल दरबार ने राज का कुल लड़ाई का सामान, गवर्नमेंट की सहायता के लिये देने की इच्छा प्रगट की है। नैपाल के महामन्त्री जी ने तीन लाख रुपया फ़ौजों के लिए कलदार तोपों के ख़रीदने के वास्ते दिया है। चौथी गोरखा पलटन, जिसके नैपाल के महामन्त्री जी आनरेरी कर्नल हैं, यदि लड़ाई में जायगी तो महाराजा ३० हज़ार रुपया और तोप ख़रीदने के लिए देंगे। तिब्बत के दलाई लामा ने भी एक हज़ार सेना देने का वादा किया है। महाराजा काश्मीर ने ३ तीन लाख रुपया देने के अलावा एक बड़ी सभा करके जिसमें २० हज़ार से अधिक मनुष्य जमा थे उत्साह वर्द्धक व्याख्यान दिया, जिससे बहुत बड़ी रक़म चन्दे में मिली। एक दिन पहरा के जागीरदार साहब श्रीपण्डित राधेचरणजी रायबहादुर से मुझ से चित्रकूट में बात चीत हुई थी, उनकी बातों से मैं अनुमान कर सकता हूँ कि छोटे बड़े सभी राजा जागीरदार इस समय सरकार की सहायता तन, मन, धन से करने के लिये बड़ी प्रसन्नतापूर्वक तैयार हैं।

श्रीमान् जागीरदार साहेब ने बड़े उत्साह के साथ मुझ से कहा था कि बहुत दिनों से सरकार के राज्य में हम लोग सुखपूर्वक जागीर का भोग कर रहे हैं। इससे आज समय पड़े पर हम लोग अपनी हैसियत से ज़्यादा देने के लिये तैयार हैं गोकि अकाल पड़ा है परन्तु जब तक लड़ाई होती रहेगी बराबर मदद देते रहेंगे। सारांश यह कि हिन्दुस्तान के एक छोर से दूसरे छोर तक लोग सभा कमेटियाँ कर करके अपनी राजभक्ति प्रकट करने के अलावा, दिल खोलकर, इस अकाल

के दिनों में भी; धन से सहायता कर रहे हैं । कितने वालंटियर बन कर लड़ने के लिये, कितने घायलों की सहायता करने के लिये लड़ाई के मैदान पर जाने के लिये तैयार हैं। इन्हीं सब बातों के विषय में हमारे प्रजाप्रिय वाइसराय साहेब ने एक संदेशा विलायत में महाराज तथा पार्लियामेंट के पास भेजा था, जिसे सुनते ही विलायत के अङ्गरेज़ बहुत ख़ुश हुए। बहुतेरे चौंक पड़े। बहुतों को बहुत आश्चर्य हुआ, बहुतेरे इतने जोश में आ गये, गोया जर्मनी को अब बात की बात में मिटियामेट कर देना कुछ कठिन नहीं है। आज यदि हिन्दुस्तानियों के पास हथियार होते तो ५० लाख चुने हुए जवान जर्मनी के अभिमानी सिपाहियों को इस तरह तू तू बुलाते जैसे बन्दर सापों को पकड़ कर तूतू बुलाते हैं। अब भी यदि सरकार चाहेगी तो २५ लाख फ़ौज एक साल के अन्दर यहां जर्मनों का मुख मर्दन करने के लिये तैयार हो जायगी। यहां ऐसे दस लाख तलवार चलाने वाले क्षत्रिय सिक्ख, गोरखे, पठान तैयार हो सकते हैं, जो जर्मनों के तोप के गोलों की कुछ परवा न कर और सामने दौड़कर उनका सिर काट डालेंगे और उनकी तोपों को छीन लेंगे, चाहे अन्त में एक ही लाख रह जांय। श्रीमान् वायसराय के संदेशे ने आज सारी दुनियाँ को चौंका दिया है परन्तु हम भारतवासी जानते हैं, कि यह तो हमारी सामान्य सेवा है, पूरी सेवा तो हम तभी कर सकेंगे जब अपनी तलवार का मज़ा जर्मनों को चखाने का अवसर पावेंगे। यह मनुष्य का शरीर बार बार नहीं मिलता। धन्य है वह क्षत्रिय वीर जो अपने महाराज के लिए रणभूमि में प्राण त्यागने का अवसर पावे।

'तजौं प्राण रघुनाथ निहोरे। दुहूं हाथ मुद मंगल मोरे।'

हमारी तो सदा से यही रटन है कि—

आप मरै या अरि को मारैं, सिंह समान घाव नहिं टारैं।
मरे लहैं सुख धाम सुहावन, जीतें राज भोग मन भावन" ॥

परमेश्वर हमारे हृदय की जानने वाला है। मेरी यही इच्छा है कि हमारी हिन्दुस्तानी सेना बर्लिन में सबसे आगे पहुँच कर उसी तरह महाराज की जैजैकार करे जैसे उसने चीन की राजधानी पेकिन में पहुँच कर किया था। और क्षत्रियनरेश मोछों पर ताव देते, जर्मनों का मुंह काला करते, अपने पूर्वजों के नाम का यश चारों तरफ़ फैलाते महाराज जार्ज पञ्चम की विजय के लिये बधाई देते प्रसन्नता पूर्वक अपने प्रजाप्रिय वायसराय को हिन्दुस्तान में आकर बधाई दें। यहां से क्षत्रिय नरेश मेजर जेनरल महराजा सर प्रतापसिंह जी जर्मनों को लड़ाई का मज़ा ही चखाने के लिये गए हैं। कितनें क्षत्रिय राजा अब भी जाने को तैयार हैं। क्षत्रिय राजा ही नहीं वरञ्च क्षत्रिय का एक एक पुतला अगर उसको अपने क्षत्रिय होने का घमण्ड है, तो लड़ाई में अवश्य जाना चाहेगा। बहुत से लोग मेरी बातों को सुन कर कह बैठते हैं कि तुम बड़े क्षत्रिय बने हो, जब हथियार पकड़ना नहीं जानते तो वहां जाकर क्या कर लोगे। उनको मैं यही जवाब दिया करता हूं कि एक सच्चा क्षत्रिय का लड़का हमेशा लड़ाई के मैदान को सब तीर्थों से बढ़ कर समझता है और लड़ाई में अपने देश की रक्षा, अपने देश की मर्य्यादा और अपने महाराज के लिये प्राण देना कुछ चीज़ नहीं समझता। वह अच्छी तरह जानता है, कि एक दिन मरना ही है तो क्यों न अपने महाराज और अपने देश की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए प्राण दे। रहा हथियारों का चलाना सीखना, उसे वह छः माह में सीख सकता है। जैसे बन्दर के बच्चे को पेड़ का चढ़ना और मछली के बच्चे को

पानी में तैरना कोई नहीं सिखाता उसी प्रकार क्षत्रिय के बच्चे को, लड़ाई में निडर रहना, शत्रु के मारने का उत्साह, धैर्यपूर्वक साहस के साथ आगे बढ़ना, लड़ाई में अपने भाई बन्धुओं के मरने से और उत्साहित होना, इत्यादि गुण कोई नहीं सिखलाता। हथियार हाथ में आते ही और मारू बाजा सुनते ही वह शत्रु को सामने देखकर रङ्ग में मस्त हो जाता है। और जैसे शेर का बच्चा निडर होकर हाथियों के झुंड पर टूट पड़ता है उसी तरह वह शत्रु की अधिक फ़ौज पर निःशंक टूटता है।

प्यारे भाइयो !

इक बून्द भी इस तन में रकत बाक़ी है जब तक।
इक फाल भी चलने की सकत बाक़ी है जब तक।
इक लोह का कणिका भी रहे हाथ में जब तक।
लोहा न सही दांत व नख साथ है जब तक।
तब तक जो क़दम पीछे रक्खे युद्ध क्षिता से।
बस जान लो वह क्षत्रिय नहीं अपने पिता से।*

ललकार के यदि कोई निकल सामने आवे।
ब्राह्मण को गऊ दीन को यदि कोई सतावे।
आकर के जनम भूमि पै उतपात मचावे।
समझाने से मानैं नहीं और शान दिखावै।
इन मौक़ों पर क्षत्रिय जो करे जान की परवाह।
बस जान लो माता का नहीं उसके हुआ ब्याह।*

प्यारे भाइयो,

मुझे विश्वास है कि जैसे कभी २ बुराई से भलाई भी हो जाया करती है, उसी प्रकार इस संसार-दुःखदाई लड़ाई से भारत की तथा बृटिश राज की भलाई होगी। इस समय

---

* श्रीमान् लाला भगवानदीन।

भारतवासी, महाराज जार्ज पंचम को दीन बेलजियनों और पड़ोसी फ्रांस की सहायता करते देखकर, जैसे प्रसन्न हुए हैं, वैसे ही जर्मनी के ज़ुल्म और ज़्यादतियों को सुनकर क्रोधित हो रहे हैं। इससे धर्म, प्रेम, और क्रोध के जोश में आकर जो हम कर रहे हैं, उन सब का बदला बृटिश जाति बिना दिए कदापि चुप नहीं रहेगी। परमेश्वर की कृपा से इस लड़ाई के बाद हिन्दुस्तान, बृटन, आस्ट्रेलिया, केनेडा, दक्षिण एफ्रिका, न्यूज़ीलैण्ड इत्यादि एक दृढ़ प्रेम की रस्सी में इस तरह गुंथ जायगे कि भारत सचमुच अनमोल हीरे की तरह सब से अधिक दीप्तिमान हो चमकेगा। और इस नवीन सम्मिलित शक्ति के सामने आगे संसार में कोई सिर उठाने का साहस न करेगा।

चौथा अध्याय।

हिन्दुस्तानी फ़ौज और लड़ाई

कहो कहा यह सुनि परो, जाको सबहि उछाह।
हरखित आरज मात्र भे, जिय बढ़ाइ अति चाह॥
फरकि उठीं सबकी भुजा, खरकि उठीं तलवार।
क्यों? आपुहिं ऊंचे भए, आय मोंछ के बार॥
जे आरज गन आज लों, रहे नवाए माथ।
तेहू सिर ऊंचे किए, क्यों दिखात हैं साथ॥
स्वामिभक्ति किरतज्ञता, दरसावन हित आज।
छाड़ि प्राण देखहिं खरो, आरज बंस समाज॥

चलो चलो सब वीर चलो घनघोर युद्ध करि।
मेटैं हिय की कसक जमन* हिय आज पाँय दरि॥

* जमन से भाव जर्मन से लेना चाहिए।

देखो देखो मातु कालिका जीभ निकारैं।
जमन रुधिर प्यासी खुलोल जिहवा चटकारैं॥

अरे वीर इक बेर उठहु सब फिर कित सोए।
लेहु करन कर बाल काढ़ि रन रङ्ग समोए॥
चलहु वीर उठि तुरत सबै जय ध्वजहिं उड़ाओ।
लेहु म्यान सों खड्ग खींचि रन रङ्ग जमाओ॥
परिकरि कटि कसि उठौ बँदूकन भरिभरि साधो।
सजौ जुद्ध बानो सबही रन कंकण बाँधो॥
उठहु वीर तरवार खींचि मांडहु घन सङ्गर।
लोह लेखनी लिखहु आर्य बल जमन हृदय पर *॥

प्यारे भाइयो! हिन्दुस्तान से ७० हज़ार † रणबाँकुरे सिपाही जिनमें क्षत्रिय, सिक्ख, गोरखे, मुसलमान शामिल हैं मैदान में पहुँच गए हैं। उनका कुल ख़र्च भारत के ख़ज़ाने से देना निश्चय हुआ है। मार्च तक के लिये डेढ़ करोड़ रुपया जो यहाँ रख कर फ़ौज के खिलाने में ख़र्च पड़ता वही दिया गया है। इस डेढ़ करोड़ रुपया के दिए जाने के लिए माननीय मि० चिटनवीस ने बड़े लाट साहब की सभा में प्रस्ताव उपस्थित किया था, जिसका समर्थन महमूदाबाद के राजा साहेब, सरदार दलजीतसिंह, पं० मदनमोहन मालवीय, सर फ़ज़ल भाई करीम भाई, और दादा भाई इत्यादि माननीय मेंबरों ने किया था। इस प्रस्ताव के। श्रीमान् वायसराय ने स्वीकार कर लिया था और विलायत की पार्लियामेंट ने भी मंजूर कर लिया है। अभी तक इतनी बड़ी फ़ौज हिन्दुस्तान

---

* रनविजयन्ती-विजय वैजयंती से।

† अब तक लगभग २ लाख हिन्दुस्तानी सिपाही शत्रुओं का मुख मर्दन करने के लिए बाहर जा चुके हैं।

से बाहर कभी समुद्र पार नहीं गई थी। हिन्दुस्तान के वीरों और सभ्य समाज को बड़ी प्रसन्नता है, कि इस बार बृटिश गवर्नमेंट ने गोरों के साथ २ जर्मनों का मुख मर्दन करने के लिए हिन्दुस्तान के रणबांकुरे वीरों को भी भेजा है, जिन्होंने आज तक कहीं समरभूमि में पीठ नहीं दिखाई है। महाभारत के पश्चात् यह पहिला समय है कि क्षत्रिय नरेश भारत से शत्रुओं को जीतने के लिए यूरप गए हैं। शत्रुनाशिनी कालिका हमारी जय करेगी। आज तक इतिहास में ऐसा प्रमाण नहीं मिलता कि भारत की फ़ौज बाहर जाकर कभी बिना शत्रु का नाश किए हुए लौट आई हो।

श्रीरामजी और महाराज युधिष्ठिर की राजसूय और अश्वमेध यज्ञों के समय तो सारा संसार हमारा लोहा मान ही गया था।

अकबर बादशाह के समय में भी महाराजा मानसिंह के सामने अफ़ग़ानिस्तान के हठी मुसलमान भेड़ की तरह भाग गए थे। श्रीमती मृत महारानी विक्टोरिया के समय में हिन्दुस्तानी फ़ौज का सिक्का मिश्र, चीन, ब्रह्मा, और अफ़ग़ानिस्तान में पूरा २ जम गया था। मृत महाराज एडवर्ड के समय में भी चीन में ६ देशों के सिपाहियों के सामने बाक्सर युद्ध के समय पेकिन के क़िले पर सब से पहिले वीर राजपूत पहुँच गए थे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि लार्ड कर्जन की इच्छा परमेश्वर पूर्ण करेगा, और हिन्दुस्तानी फ़ौज बर्लिन के क़िले पर महाराज जार्ज पंचम की जै जै करती हुई बृटिश झंडे को अवश्य गाड़ देगी।

हिन्दुस्तानी फ़ौज अँगरेज़ी झंडे के नीचे रहते हुए संसार में किसी को अपने से अधिक रणबाँकुरा नहीं समझती और सभी वीर देशों की सेनाओं को चीन के मैदान में देख भी

चुकी है । मेजर जैनरल महाराजा सर प्रतापसिंह तथा महाराजा कर्नल सर गंगासिंह जू देव बहादुर भी जर्मनों के लड़ने के ढंग को चीन में देख चुके हैं । इस लड़ाई में राठौर-कुल-मुखोज्वलकारी समरविजयी महाराजा मदनसिंह जू देव बहादुर किशनगढ़ नरेश भी पधारे हैं । अब की बार इनके बीर दर्प के सामने जर्मनों के पतलून ढीले हो जायँगे ।

देखो जो महाराजा सर प्रतापसिंह हुक्म दे रहे हैं उसे मैं अनुभव कर रहा हूँ ।

कसे रहैं कटि राति दिवस सब बीर हमारे,
अस्वपीठ सों होहिं च्यार जामें जिनि न्यारे ।
तोड़ा सुलगत रहैं चढ़े घोड़ा बन्दूकन ।
रहैं खुली ही म्यान तमंचे नहिं उतरैं छन ।
देख लैहिंगे कैसे पामर जमन बहादुर ।
आवहिं तो सन्मुख चढ़ि कायर आज सबै जुर ॥
दैहैं रन को स्वाद तुरन्तहि तिन्हैं चखाई ।
जो पै इक छिन हूँ सन्मुख ह्वै करहिं लड़ाई ॥*

इस लड़ाई में यदि हिन्दुस्तानी सिपाही न गए होते तो हिन्दुस्तानियों को बहुत कुछ उलहना देने का अवसर मिलता । परन्तु धन्य हैं हमारे प्रजाप्रिय वायसराय श्रीमान् लार्ड हार्डिंग को जो अपने समय में भारतवासियों को कनेडा, आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रिका के निवासियों के सामने अपनी भारतीय प्रजा को उनके बराबर दिखलाने में अवसर पड़ने पर नहीं चूकते हैं । परमात्मा हमारे बड़े लाट साहब को भारत का स्थायी लाट बना दे, ऐसी इच्छा बहुतेरे भारतवासियों की है ।

---

*महाराणा प्रतापसिंह से ।

पाँचवाँ अध्याय

(फुटकर बातें)

(१) लड़ाई और लड़ाई की ख़बरें।

यस्य मन्त्रं न जानन्ति समागम्य पृथग्जनाः।
स कृत्स्नां पृथिवीं भुंक्ते कोषहीनोपि पार्थिवः॥*

म० अ० ७—१४८

विलायत के टाइम्स से लेकर हिन्दुस्तान के साधारण अख़बार तक इस लिये लड़ाई के आरम्भ में भुनभुनाने लगे थे, कि लड़ाई की कुल ख़बरें उनको नहीं मिलतीं थीं। इन विचारों को यह नहीं मालूम है कि राजसम्बन्धी कितनी भेद की बातों को छिपाना राजनैतिक चतुरता कहलाती है। यह मूर्खता की बात है कि राजसम्बन्धी सब बातें सब लोगों पर प्रगट कर दी जाँय। वह राजसभा मूर्खों की मण्डली से बढ़ कर अधिक इज़्ज़त नहीं रखती जो अपने राजनैतिक भेद की बातों को भी गुप्त नहीं रख सकती। ऐसा कौन ज़िंदा राज्य है जो दूसरे राजाओं के भेदों को जानने के लिए गुप्त दूत नहीं रखता? सभी रखते हैं। इससे ज़ाहिर होता है कि सभी अपने भेदों को गुप्त रखते हैं, खास कर लड़ाई के समय, जो राजा अपनी फ़ौज सम्बन्धी बातों को नहीं छिपा सकता वह अपने को शत्रुओं का दास बनाने से नहीं रोक सकता। मेरी राय में गवर्नमेन्ट ने फ़ौज और लड़ाई के सम्बन्ध में जो अपने भेदों को छिपाया है यह बहुत अच्छा किया है। उसका इस तरह अपने गुप्त भेदों को छिपाना अपनी प्यारी प्रजा से

*जिस राजा के गुप्त भेदों को उसके मंत्रियों के अलावा और कोई नहीं जानता वह कोश क्षीण होने पर भी सब पृथ्वी को भोगता है।

छिपाना नहीं कहा जा सकता । केवल शत्रुओं से छिपाने का मतलब है । सरकार ने विलायत में तथा हिन्दुस्तान में सर्वसाधारण को ख़बर पहुँचाने के लिए एक महकमा क़ायम कर दिया है, जिससे सब लोगों के जानने लायक़ सच्ची ख़बरें छाँट कर ज़ाहिर कर दी जाती हैं । लेकिन ख़ास ख़ास बातों को जिन से आम लोगों से कोई सम्बन्ध नहीं है ज़ाहिर कर देना राजनैतिक भूल कहलाती है । ऐसी भूल हमारी बृटिश गवर्नमेंट कभी नहीं कर सकती । फ़ौज को किस राह से भेजना है, कहाँ कितनी फ़ौज भेजना है, उनको राह में कहाँ कहाँ ठहरना है; दुश्मन पर, कितनी फ़ौज से, किस ओर से, किस दिन हमला किया जायगा; किस तोपख़ाने के साथ कितने गोले हैं ; रिसाले के साथ कौन कौन लड़ाई का सामान है; कौन जेनरल किस फ़ौज के साथ है, कौन जहाज़ी बेड़ा किस बन्दर में है; घोड़े कहाँ से आते हैं, भूसा कहाँ से आता है, चना कहाँ से मँगाया जाता है, इत्यादि बातें ऐसी हैं जिनके ज़ाहिर होने से दुश्मन हमारी राह में बहुत बाधा डाल सकता है । अपनी लड़ाई सम्बन्धी बातों को प्रगट करना दुश्मन को मदद देना कहलाता है । इससे सब को चुपचाप सरकारी ख़बरों पर जो सरकार की तरफ़ से प्रकाशित की जाती हैं, सन्तोष करना चाहिए । ख़ासकर समाचार-पत्रों को इस समय ऐसी चाल चलना चाहिए जिससे सर्वसाधारण में किसी बात से उत्तेजना न फैलने पावे । इस समय देश में शान्ति को बनाए रखना, लड़ाई का जोश लोगों के दिलों में भरना, महाराज जार्ज पञ्चम की सहायता तन, मन, धन से करने के लिए उभारना, जर्मनी की ज़ुल्म और ज़्यादतियों को साफ़ साफ़ दिखलाना समाचार-पत्रों और पढ़ेलिखे लोगों का मुख्य काम है । मैं इस प्रकार की सेवा को बहुत अच्छा समझता हूँ ।

(२) लड़ाई और गिन्नी (सावरेन)।

व्यापारे वसते लक्ष्मीः

व्योपार के सुभीते के लिए हरएक राजा अपने राज्य में तरह तरह के सिक्कों का प्रचार करता है। अगर सिक्कों का प्रचार न हो तो व्योपार में और कारोबार में बड़ी गड़बड़ हो। तरकारी लेने के लिए, जुलाहे को कपड़ा देना पड़े। बङ्गाल के ज़मींदार को बनारसी माल ख़रीदने के लिए गाड़ी पर लादकर धान, नारियल और केला लाना पड़े। इसी प्रकार और जानिए। इससे व्योपार की सुविधा के लिए तरह तरह के सिक्कों का प्रचार करना बड़ा ज़रूरी काम है।

हमारे देश में गिन्नी सब से बड़ा सिक्का है। लड़ाई शुरू होते ही बहुतेरे भाई ख़ास कर महाजन रुपया भुना भुना कर गिन्नियाँ जमा करने लगे। इसी से गवर्नमेंट ने गिन्नियों का देना बन्द कर दिया। गवर्नमेंट का यह काम भी बड़ी बुद्धिमानी का है इससे हिन्दुस्तान को बड़ा फ़ायदा होगा। इस समय यहाँ के महाजन गिन्नियों को जमा करके ज़मीन में गाड़ने के अलावा और कुछ फ़ायदा न उठाते। अथवा बहुत ज़रूरत पड़ने पर किसी को देते तो १५ की रुपये की जगह १६ रुपया या इससे भी अधिक लेते। जिससे व्योपार की दृष्टि से बड़ी हानि होती। सरकार के पास इस समय लगभग १६ करोड़ रुपये का सोना हिन्दुस्तान में है। और लगभग १४ करोड़ के विलायत में है। इसके अलावा २४ करोड़ रुपए का सोना और मिल सकता है। और ज़रूरत पड़ने पर और सोना दक्षिणी अफ्रिका से, जहाँ से बहुत सोना निकलता है, आ सकता है क्योंकि वह हमारी सरकार के राज्य में है। सरकार ने रुपयों के बदले में आम तौर से सब को गिन्नी देना

बन्द कर दिया है। उसकी ख़ास वजह यह है कि कोई १० कोई १०० और कोई ५००० गिन्नी लेकर ज़मीन में गाड़ देता, इससे गिन्नो का प्रचार बाज़ार में रुक जाता और व्यापार को धक्का पहुँचता। यह सब को जानना चाहिए कि रुपया बम्बई और कलकत्ते में ढाला जाता है, लेकिन गिन्नी बिलायत में ढाली जाती है। रुपया सिर्फ़ इस देश में या आस पास के देशों में चलता है, गिन्नी सब देशों में चलती है, और इस समय हिन्दुस्तान का व्यापार सब देशों से है। इससे रुपये से हिन्दुस्तान का व्यापार बहुत अच्छी तरह चल सकता है। परन्तु गिन्नियों के कम हो जाने से विलायत तथा दूसरे देशों का व्यापार बन्द हो जा सकता है। क्योंकि विलायत वाले तथा दूसरे देश के व्यापारी गिन्नी ही लेते हैं। ऐसी अवस्था में यदि किसी महाजन को किसी दूसरे देश में किसी के बिल का भुगतान करना हो तो वह लन्दन के बंकों से गिन्नियाँ पा सकता है, जिनके हाथ यहां की सरकार हर हफ्ते में १५≈)॥ पर १ गिन्नी बेच रही है। इसलिए बाहिरी व्यापार जारी रखने के लिए रुपयों के बदले में यहां गिन्नियां देना बन्द कर दिया गया है। जो सब तरह उचित है। इस विषय में फ़ज़ूल बातों का खंडन समझदार लोगों को करना चाहिए। बाहिरी व्योपार के बन्द हो जाने से हिन्दुस्तान को बहुत नुक़सान उठाना पड़ेगा। इससे हम सब छोटे बड़ों को ऐसी बातों पर फ़ज़ूल बात चीत न करना चाहिए, जिससे अपढ़ भाई व्योपार में बाधा डालने वाला कोई कम करें।

(३) लड़ाई और सेविंग्स बैंक।

लड़ाई शुरू होते ही एक तार यहाँ के अख़बारों में छपा

था कि जर्मनी की गवर्नमेंट ने डाकखानों के बैङ्कों में जो लग-भग २२ अरब रुपया वहाँ के लोगों का जमा है सब ज़ब्त कर लिया है। परन्तु तार का यह मतलब नहीं था जैसा लोगों ने समझा है। तार का मतलब यह था कि जर्मनी की गवर्नमेंट जब तक लड़ाई जारी रहेगी, डाकख़ानों में जो रुपया जमा है उसे न निकालने देगी। इससे जमा करने वालों का कुछ नुकसान न होगा। उनका तो सूद बराबर बढ़ता ही जायगा इसी तार के आधार पर यहां भी मूर्खों ने हौरा मचा दिया कि बस डाकख़ाने में रुपया जमा करना ठीक नहीं। इस झूठी ख़बर के उड़ते ही कितने ही लोगों ने रुपया निकालना शुरू कर दिया। यही हिन्दुस्तान की भेड़िया धसान है। इतना बिचार नहीं करते कि लड़ाई यहाँ से ४००० मील दूर फ्रांस में हो रही है। हमारी सरकार वहां दोस्तों को मदद दे रही है फिर यहाँ के सेविङ्गस बैङ्क पर भला क्या असर पड़ सकता है! हमारी सरकार को रुपयों की कमी नहीं है। उसे विलायत में जरूरत से ज़्यादा रुपया मिल रहा है। भला वह यहां के डाकख़ानों से रुपया क्यों लेने लगी? इस अफ़वाह को सच मान कर काम करने वालों को सरासर नुक़सान होगा। पढ़े लिखे लोगों को, जो भली भाँति जानते हैं कि हमारी गवर्नमेंट कितनी मज़बूत है, उसके राज काज का कुल प्रबन्ध न्याय पर स्थिर है, उसकी आमदनी बहुत है, विलायत के लोग बड़े दौलतमन्द हैं, इस समय भी बहुत कम सूद पर अरबों रुपया गवर्नमेंट को हाथों हाथ मिल सकता है, अपने अपढ़ भाइयों को समझना चाहिए, कि झूठी ख़बरों पर बिना बिचारे काम कर अपनी हंसी न करावें। हम लोग जो कुछ बचा सकते हैं, बराबर डाकख़ाने में जमा करते जाते हैं। उदाहरण दिखा कर अपने अपढ़ भाइयों को समझाने की

ज़रूरत है। नहीं तो अपढ़, बे समझ भाई जिनकी थोड़ी ही पूँजी है चोर डाकुओं के बहकाने से डाकखानों के बैङ्कों से रुपया निकाल लेंगे और फिर वे ही चोर उनके घरों से दाव-घात लगा कर उठा ले जायँगे। या डाकू रास्ते ही से छीन ले जायँगे। और वे ग़रीब हाथ मलते ही रह जायँगे। ऐसी ख़बरों के उड़ाने वाले साफ़ कपड़े पहिनने वाले चोर और ठग हैं, जो अपना मतलब गाँठना चाहते हैं। घात में बैठे बहुत चोर घरों में सेंध लगावेंगे, या डांका डालेंगे और डाकख़ाने से निकाले हुए रुपए के साथ २ घर की और पूँजी, ज़ेवर, कपड़ा, बरतन और दूसरे असबाब के साथ २ नाज भी उठा ले जायँगे। मेरी बिनय पढ़े लिखे समझदार भाईयों से है, यदि वे सचेत होकर झूठी ख़बरों के दबाने में दत्तचित्त नहीं होंगे तो सम्भव है कि लोगों का बहुत नुक़सान हो जाय।

(४) लड़ाई और नोट

एक और अफ़वाह दुष्ट लोगों ने अपने मूर्ख भोले भाले भाइयों को ठगने के लिए उड़ा दी है कि अब नोट रद्दी काग़ज़ के समान हो गए, बस इसी उड़तो ख़बर को सच मानकर लोग फ़ौरन नोट भुनाने लगे। यहाँ तक कि १०० रु० के नोट ६० व ८० पर बेंचने लगे। और वे ही झूठी ख़बरों के फैलाने वाले दुष्ट, दलाल बन बन कर दलाली लेकर मुट्ठी गर्म करने लगे, और उन्हीं नोटों को सरकारी ख़ज़ानों में भुना कर अपनी थैली भरने लगे। इस तरह दिन दहाड़े अपढ़ और बे समझ लोगों को ठगने लगे। सरकार के पास इस समय ४४ करोड़ रुपया और गिन्नी इन्हीं नोटों के भांज में देने के लिए अलग रक्खा हुआ है। और सरकार सदैव नोटों के बदले में रुपया देने के लिए तैयार है। ऐसा कभी नहीं हो सकता कि सरकार नोटों के बदले में रुपया देने से मुंह मोड़े।

पढ़े लिखे लोगों को चाहिए कि इस उड़ती हुई ख़बर को दबावें, लोगों के भ्रम को दूर करें, और अपने भोले भाइयों को दुष्ट ठगों और दलालों का शिकार न बनने दें। यदि इस समय दुष्टों की चाल चल जायगी तो साधु प्रकृति, शांति-प्रेमी और भोले भाले मनुष्य बहुत ठगे जायँगे और दुष्टों के बढ़ जाने से सर्व साधारण प्रजा को बहुत कष्ट उठाना पड़ेगा। क्योंकि ठग और चोरों के बढ़ने और बलवान होने से तरह २ के उत्पात मचने लगते हैं। समझदार लोगों से गाँव या महल्ले में लोग सलाह लेने के लिए आते ही हैं। इस से फ़ज़ूल की घबराहट को न फैलने देना हमारा मुख्य धर्म है।

(५) लड़ाई और हवाई जहाज़

लोग आज कल रात को ख़्याली हवाई जहाज़ का स्वप्न देखते हैं। कहीं तो लोगों ने यहाँ तक शोर मचाया कि अच्छे २ लोग भी किसी चमकदार सितारे को देखकर उसे हवाई जहाज़ मानने लगे और उसी के देखने में घंटों समय ख़राब किया।

जब यूरप में लड़ाई नहीं होती थी उस समय में भी यूरप से हिन्दुस्तान में हवाई जहाज़ों पर आने के विषय में केवल आपस में बात चीत या बहस ही होती रही। इस पर कोई अमली कार्रवाई नहीं हुई थी। यहाँ से जर्मनी लगभग ४००० मील दूर है। वहाँ से हवाई जहाज़ों का आना बिलकुल ग़ैर मुमकिन है। ख़ास कर ऐसी हालत में जब कि जर्मनी की फ़ौज अङ्गरेज़ी, फ्राँसीसी, रूसी, सर्विया, मान्टिनिग्रो और बेलजियम की फ़ौज़ों से चारों ओर से घिरी हुई है। और जर्मनी के हवाई जहाज़ अङ्गरेज़ी और फ्राँसीसी हवाई जहाज़ों से बराबर हार रहे हैं (अब तक जर्मनों के सैकड़ों हवाई जहाज़ नष्ट हो चुके हैं)। लोगों को याद रखना चाहिये कि हवाई जहाज़ों

के लिए मिट्टी के तेल की बड़ी ज़रूरत होती है। वह तेल जर्मनी में नहीं निकलता और जिन जगहों से निकलता है, वहां से अब उनको नहीं मिल सकता। क्योंकि हमारी सरकार ने तेल को जगहों के रास्तों को जर्मनी के लिए बिलकुल रोक रक्खा है। जो कुछ तेल जर्मनी ने पहिले से जमा कर रक्खा है वह इतना काफी नहीं है कि ख़ास लड़ाई के मैदान पर काम करनेवाले जहाज़ों के लिए काफ़ी हो। ऐसी हालत में जर्मनी के जहाज़ अपने मुल्क के बाहर एक क़दम भी आगे नहीं जा सकते।

हाँ सीतापुर में सरकारी हवाई जहाज़ों का एक अड्डा है। वहां से कुछ हवाई जहाज़ लड़ाई के शुरू में इधर उधर गये थे। उनको लोगों ने कहीं कहीं देखा था। इसीसे आज तक जर्मनी के हवाई जहाज़ों का स्वप्न देख रहे हैं। समझदार लोगों को ऐसी झूठी ख़बरों और शंकाओं को नहीं फैलाने देना चाहिए उनको ऐसी अफवाहों का खण्डन ज़ोर के साथ करना चाहिए।

(६) लड़ाई और बाज़ारू गप्पें

लड़ाई शुरू होते ही तरह तरह की बाज़ारू गप्पें फैलने लगी हैं। एक दिन एक मनुष्य मेरे पास मेरे मकान पर गया और कहने लगा कि जर्मनी ने तो कुल हिन्दुस्तानी फौजों को बिजली से घंटे भर में जला दिया। दूसरे दिन उसी ने कहा कि आज सुना है कि महाराज जार्ज पञ्चम भाग कर आगरे के क़िले में चले आए हैं। परन्तु जब मैंने इन झूठी ख़बरों का ज़ोर के साथ खंडन किया और समझा दिया कि सूरज चाहे पश्चिम में उगे तो उगे परन्तु हमारी बृटिश गवर्नमेंट इस जन्म में जर्मनों से कभी हार नहीं सकती और हिन्दुस्तानी फ़ौज भगवती महिषासुरमर्दनी की कृपा से, कभी बिना

जर्मनों का अभिमान चूर किए नहीं लौटेगी। मैंने अपने नक़शे में अंगरेज़ी राज्य का विस्तार समुद्री अड्डों और लड़ाई के मैदानों सहित दिखलाया और समझाया है कि किस तरह से फ़ौज, नाज, घोड़ा, भेड़, मांस, मछली सब लदा हुआ चारों तरफ़ से लड़ाई के मैदान में पहुँच रहा है। तब उसको विश्वास हुआ कि हाँ हमारी सरकार अब नहीं हार सकती। झूठी बाज़ारू गप्पों का खंडन करना हमारे पढ़े लिखे भाइयों का काम है, नहीं तो सम्भव है कि कहीं कहीं दुष्ट इस तरह बातें बनाकर भोलेभाले भाइयों को ठग लेंगे और एक दूसरा उपद्रव खड़ा कर देंगे। एक दिन एक मनुष्य कहने लगा कि दुश्मन कलकत्ते तक चढ़ आया, कुल मारवाड़ियों को लूट लिया, सब अपने घरों को भागे जाते हैं। फिर मैंने अपने नक़शों को फैलाया, उसको जर्मनी, फ्रांस, रूस दिखला कर लड़ाई के मैदानों को दिखाया और समझाया कि हम लोग दुश्मन को वहीं घेर मारेंगे, वह स्वप्न में भी हमारे देश की तरफ़ आँख उठाकर नहीं देख सकता। फिर हमारे समझाने पर उसे भरोसा हुआ। इसी प्रकार अपढ़ देहाती भाइयों में तथा शहरों में भी दुष्ट लोग गप्पें गढ़ लिया करते हैं, अतएव समझदार लोगों को अच्छे अख़बारों को पढ़ना और सुनना चाहिए। सरकारी ख़बर देने का जो महकमा क़ायम हुआ है वहाँ से कुल सच्ची और ज़रूरी ख़बरें छाप छापकर तहसीलों में भेजी जाती हैं, उन्हें देख और सुनकर अपना शक दूर कर लेना चाहिए। इस समय बहुत विचार कर काम करने की ज़रूरत है। यह तो सबको मालूम हो ही गया है कि हिन्दुस्तान के कुल राजे महाराजे अपनी सेना सहित लड़ाई के मैदान में जाने के लिए तैयार हैं, महाराज नैपाल ने भी सब तरह से मदद देने को कहा है फिर इतने क्षत्रिय नरेशों को एक अङ्ग-

रज़ी झंडे के नीचे लड़ते देखकर संसार में ऐसा कोई नहीं है कि अङ्गरेज़ी राज्य की तरफ़ पांव बढ़ा सके। केवल हम लोगों को तन, मन, वचन से हर समय अपनी गवर्नमेंट की सहायता के लिये तैयार रहना चाहिये। आप जानते ही हैं महात्मा तुलसीदासजी ने कहा है कि—

जहां सुमति तहां सम्पति नाना ।।
जहां कुमति तहां बिपति निधाना ॥

फिर महाराज प्रतापसिंह ने कहा है—

जहं साहस जहं धर्म जहां सांचे सब सङ्गी।
तहाँ विजय निहचै, तासों सब होहु इकंगी ॥

गीता में श्रीकृष्ण भगवान ने कहा है—यतो धर्मः ततो जयः। इससे निःसन्देह हमारी जय होगी। जर्मनी को बड़े २ राजाओं में से एक से लड़ कर पार पाना कठिन था, अब तो हमारे महाराज जार्ज पंचम के साथ जर्मनी की ज़ुल्म और ज़्यादतियों और अन्याय की बातों को सुन सुना कर लगभग सारा संसार सहायता दे रहा है।*

---

*हमको बहुत सन्देह है कि वीर जाति होने पर भी संयुक्त अमेरिका के लोग क्यों चुप हैं। वीर पुरुष और वीर जाति का धर्म है कि कहीं किसी को अन्याय करते, किसी दीन को सताते, अनाथों पर ज़ुल्म करते, देख तो उसे धमका कर सीधा करें। यदि दुष्ट इस पर भी न माने तो शक्ति रहते उसका मुख मर्दन करे। ज़ालिमों के अन्याय से दीनों को कुचलते देखना वीरों का काम नहीं है, इस समय तो सब को मिलकर इस अन्यायी का सत्यानाश करना चाहिए, इस कारण नहीं कि अङ्गरेज़, फरांसीसी और रूसी उसको सत्यानाश न कर सकेंगे, बल्कि बहती गङ्गा में सब को हाथ धो लेना चाहिए। अन्यायी का सत्यानाश करना, एक पुण्य का काम हैं। और उसको अन्याय करने से न रोकना पाप कर्म है इसी से आज हम भारतवासी जर्मनी की हड्डी २ तोड़ने के लिए तैयार हैं। मुझे तो इतना क्रोध है कि यदि अन्यायी (जो लाखों औरतों, बच्चों को अनाथ करा रहा है, लाखों मनुष्यों को जन्म भर

महाबली रूस, सदा समरविजयी जापान, पड़ोसी फ्रांस, वीर सर्विया, मांटनिग्रो, बेलजियम तो लड़ ही रहे हैं अब आशा है कि पुर्तगाल, रोमानिया और इटली भी लड़ाई के मैदान में अन्यायी जर्मनी का मुँह काला करने के लिये जल्द आवेंगे। फिर 'बकरी को माँ कब तक ख़ैर मनावेगी'। संसार का बनाने वाला किसी के अभिमान को नहीं रहने देता। जब जब इस तरह संसार में किसी पापी ने सिर उठाया है, तब तब परमेश्वर ने उसका अभिमान किसी प्रकार तोड़ कर पृथ्वी का बोझ हलका कर दिया है। इस बार जर्मनी की बारी है। परमेश्वर हमारे महाराज की जै करेगा।

(७) लड़ाई और एमडन।

यह आप लोगों को मालूम ही है कि जपान हमारी बृटिश गवर्नमेंट का मित्र है। इसलिए उसे भी पूर्वी स्थिर महासागर में शान्ति बनाए रखने के लिये लड़ाई के मैदान में आना पड़ा है। जापान ने ता० १७ अगस्त (भादों बदी ११ सं० १९७१ वि०) को जर्मनी को नोटिस दे दिया कि तुम लड़ाई के जहाज़ों को चीन और जापान के समुद्रों से हटा लो और चीन के किवचाउ बन्दर को हमें दे दो। हम लड़ाई बन्द हो जावे पर उसे चीन को दे देंगे।

जबजर्मनी ने संतोषदायक उत्तर नहीं दिया तो जापान ने ता० २३ अगस्त सन् १९१४ को लड़ाई का इश्तिहार दे दिया और अपने जङ्गी जहाज़ों को किवचाउ की ओर बढ़ने के

के लिए अपाहज बना रहा है) को पाऊं तो उसकी दोनों टांगों को पकड़ कर उसे उसी तरह चीर डालूं जैसे वीरशिरोमणि भीमसेन जी ने जरासन्ध को चीर डाला था। संसार के मनुष्य मात्र को जिसे मर्द बनने का दावा है, अत्याचारी जर्मनों से बदला लेने के लिए तैयार होना चाहिए।

लिए आज्ञा दे दी । मालूम होता है कि इसी डर से जर्मनी के लड़ाई के क्रूज़र जो पूर्वी समुद्र में जर्मनी के व्योपार की रक्षा करते थे, वहां से चुपके तीन तेरह हो गए। इनमें क्रिन्सवर्ग, लिपज़िग और एमडन मुख्य थे। क्रूज़र लुटेरों की तरह समुद्र में जहाँ दाव घात पाते हैं, उपद्रव मचाते हैं। वे लगे हाथों हिन्दुस्तान और अफ्रिका में भी हाथ साफ़ करने लगे हैं। वे समझते हैं कि जर्मनी के बन्दरों में बचकर जाना अब बिलकुल असम्भव है। या तो वे एक दिन पकड़े जायँगे या डुबो दिए जायँगे। इस लिए मालूम होता है कि 'मरता क्या न करता' की कहावत के अनुसार वे जान पर खेल रहे हैं। जब नाश ही होना है या क़ैद होना है, तो कुछ कर लेना चाहिए-इसी पर कमर कसके, बंगाल की खाड़ी में अपनी जान हथेली पर ले, सौदागरी जहाज़ों को बरबाद करने पर उतारू हो गए। उनमें से 'एमडन' ने, जो सब में तेज़ दौड़ने वाला क्रूज़र है, बड़ी फुरती के साथ चक्कर लगाना शुरू कर दिया है। उसके साथ एक यार्को मेनिया जहाज़ भी है। उसने जगन्नाथपुरी के सामने तारीख़ १० को इंडस, ११ के लोवट, १२ को किलिन और १३ को डिप्लोपेट और ट्रावक नामी सौदागरी जहाज़ों को डुबो दिया। उनपर जो कुछ सामान अपने मुआफ़िक समझा ले लिया। और उनपर के माझियों को कविङ्गा जहाज़ पर चढ़ाकर कलकत्ते वापस कर दिया। उनके साथ बड़ा अच्छा बर्ताव भी किया। ता० १७ को रंगून के सामने क्लैन मेथिसन को डुबो दिया और उसके यात्रियों को भी कुशलपूर्वक रंगून भेजवा दिया। उसीने ता० २२ को मदरास पर नौ बजे रात के लगभग लगातार १५ मिनट तक गोला बरसाया। जब क़िले से गोले चलने लगे तो फ़ौरन अपनी रोशनी बुझाकर भाग गया। इससे मिट्टी के तेल के

दो तालाब जल गए और कंपनी को लगभग साढ़े तीन लाख का नुक़सान उठाना पड़ा। एक अंगरेज़ और दो हिन्दुस्तानी मारे गए। उसी ने २६ और २७ सितम्बर को टिपेरिक, किंग-लैण्ड, रिवेरा और फ़ायलो नामक जहाज़ों को लंका द्वीप के सामने पश्चिम तरफ़ डुबो दिया। उसके पीछे तीन अंगरेज़ी जहाज़ लगे हैं। ऐसा मालूम होता है कि वह दक्षिण तरफ़ भाग गया है। उसकी इन चालबाज़ियों और ढिठाइयों से लड़ाई पर कुछ असर नहीं पड़ सकता और न हमारे देश में कोई घबराहट ही फैल सकती है। जैसे मिर्ज़ापुर, बहराइच, आगरा, इटावा इत्यादि ज़िलों में कभी कभी डाकू जंगलों में छिप कर डाका मारा करते हैं और पुलिस के पीछा करने पर भी कुछ दिन तक हाथ नहीं आते, उसी तरह समुद्र में एमडन इधर उधर भागता छिपता दाव पाकर एक हाथ चला देता है। इससे जब तक वह न पकड़ा या डुबाया जायगा तब तक सौदागरी के जहाज़ हमारे समुद्र में निडर होकर एक जगह से दूसरी जगह नहीं आ जा सकते। यह कहा गया है कि अंगरेज़ी जहाज़ उसकी खोज में लगे हैं, वह किसी न किसी दिन पकड़ा ही जायगा। आज तक अंगरेज़ी क्रूज़र तारपेडो बोटों और पानी के भीतर चलनेवाले जहाज़ों ने लगभग २०० जर्मनी के जहाज़ों को या तो क़ैद कर लिया है, या डुबो दिया है। जर्मनी और आस्ट्रिया के मुख्य लड़ाई के जहाज़ों को इस तरह उनके बन्दरों में घेर लिया है कि उनकी कुल सौदागरी बन्द हो गई है। हमारी अंगरेज़ी गवर्नमेंट की जहाज़ी ताक़त बहुत मज़बूत है और समुद्री ख़ास २ अड्डे सब हमारी सर्कार के हाथमें हैं। इससे वह बिना लड़ाईही जर्मनी को भूखों मार सकती है। जर्मनी को ७ वर्ष तक इस तरह घेरे में रख कर उसकी सौदागरी बन्द करके उसे भूखों मार सकती है।

यदि वह सात वर्ष का कुल सामान जमा किये होगा तो उसे १० वर्ष तक घेरे रक्खेंगे। कहने का मतलब यह कि हमारी जहाज़ी ताक़त के सामने उसे एक न एक दिन सिर झुकाना ही पड़ेगा। और उसे त्राहि त्राहि करके महाराज जार्ज पंचम की शरण में आना ही पड़ेगा। चाहे १ वर्ष में आवे चाहे ४ वर्ष में। क्योंकि जब फ़ौज को खाना ही ठीक तौर पर न मिलेगा तो वह लड़ाई के मैदान में बहुत दिनों तक नहीं ठहर सकेगी। इसी से मैं कहता हूँ कि एमडन ऐसे एक दो लुटेरों और डाकुओं के बिगाड़े हमारा कुछ नहीं बिगड़ सकता। जर्मनी महाराज जार्ज के पैरों पर बिना गिरे अब अपना बचाव नहीं कर सकता। और नहीं तो जर्मनी का उसी तरह दुनियाँ से नाम निशान उठ जायगा, जैसे रावण और दुर्योधन का हुआ। 'रहा न कोउ कुल रोवन हारा'।

एमडन आज तक क्यों नहीं पकड़ा गया? यह सवाल भी अक्सर लोग पूछा करते हैं। प्यारे भाइयो! आप लोगों को मालूम है कि हमारे जंगी जहाज़ों ने दुश्मनों के बड़े बड़े जहाज़ों को उत्तरी और एड्रियाटिक समुद्रों में घेर रक्खा है। कुछ जंगी जहाज़ दुश्मनों की सौदागरी बन्द कर रहे हैं, कुछ फ़ौज़ों की रक्षा कर रहे हैं, जो सात समुद्र पार करके लड़ाई के मैदान में आस्ट्रेलिया, कनेडा, दक्षिणी अफ्रिका, न्यूज़ीलैंड और हिन्दुस्तान से पहुँच रही हैं। कुछ लड़ाई का सामान और रसद ढोने वालों की रक्षा कर रहे हैं। इसी से एमडन को अभी तक लूट मार करने का मौक़ा मिल गया है। पर यह बहुत दिनों तक नहीं चलेगा। अब दुश्मन को पकड़ने के लिए क्रूज़र जहाज़ छोड़े गये हैं। आशा है कि वे अपना काम जल्द करेंगे। वह भगेड़ू डाकू जंगल रूपी समुद्र में आसानी से भाग कर छिप जाता है। पर वह कब तक छिपता जायगा

अब उसके दिन पूरे हुए दिखाई देते हैं। एमडंन के भाई बन्धु लिपज़िग, कार्लसरू, किंसवर्ग इत्यादि भी उपद्रव कर रहे हैं। पर आशा है कि अब सब के सब पकड़े जायँगे।*

(८) लड़ाई और अँगरेज़ी फ़ौज।

'तेजवंत लघु गनिय न भाई'

कहँ कुंभज कहँ सिन्धु अपारा।
सोखेउ सुजस सकल संसारा॥
रवि मंडल देखत लघु लागा।
उदय तासु त्रिभुवन तम भागा॥
मंत्र परम लघु जासु बस, बिधि हरि हर सुर सर्ब।
महामत्त गजराज कहँ, बस कर अंकुश खर्ब॥
मित्र तजिय संसय अस जानी।
जितिहहिं जार्ज परम बल खानी॥

प्यारे भाइयो! अभिमानी जर्मनी के बादशाह, विलियम ने उपहास करके हमारे सदा समरविजयी फ़ील्ड मार्शल श्रीमान् फ्रेंच साहेब की अधीनस्थ अँगरेज़ी फ़ौज को छोटी कह के अपनी फ़ौज को बढ़ावा दिया है तथा लोगों की नज़रों में हमारी अँगरेज़ी फ़ौज को उपहास का पात्र बनाना चाहा है। जो लोग इतिहास के पढ़ने वाले हैं वे विलियम की बात पर उसे ही नीच कहेंगे। क्योंकि 'विद्यमान रण पाइ रिपु कायर कथहिं प्रलापु' फ़ौज छोटी तो है परन्तु तुम्हारे तो दाँत खट्टे

---

*जैसा मैंने लिखा था कि एमडन के दिन पूरे हुए दिखाई देते हैं, वही हुआ। आस्ट्रेलिया के एक क्रूज़र सिडनी ने नवम्बर के आरम्भ में उसे धर पछाड़ा। सुमात्रा टापू के दक्षिण केकौ द्वीप के किनारे एमडन का सर्वनाश हो गया।

कर रही है ? तुम भेड़ की तरह अपनी फ़ौज कटा रहे हो इसका पाप किस को होगा ? देखो तो हमारे एक सिपाही के बदले तुम्हारे ७ सिपाही कट रहे हैं । तुम्हारे पत्थर के कलेजे की बलिहारी है, कि लड़ाई में स्कूल के प्यारे होनहार बच्चों को भेड़ की तरह कटाते हो । धिक्कार है ऐसे राजा को जो बिना कारण अपने देश के नवयुवकों को बहका २ कर लड़ाई पर भेज रहा है । उनका गला कटा रहा है । हमारी फ़ौज छोटी है ज़रूर, परंतु तुम्हारे लिए काफ़ी है । प्यारे भाइयो, खरदूषण की फ़ौज श्रीरामजी के सामने कितनी बड़ी थी ? विराट नगर घेरने वाली फ़ौज़ अर्जुन के मुक़ाबले में कितनी बड़ी थी ? दुर्योधन की फौज पांडवों से कितनी अधिक थी ? अकबर की फ़ौज महाराणा प्रताप सिंह से कितनी ज़्यादा थी ? शिराजुद्दौला की फ़ौज पलासी के मैदान में अंगरेज़ों के मुक़ाबिले में कितनी ज़्यादा थी ? चांदा साहेब की फ़ौज (१००००) क्लाइव के ५०० सिपाहियों से के गुना अधिक थी ? असाई की लड़ाई में मरहठों के ५०००० सिपाही लार्ड वेल-ज़ली के ५००० सिपाहियों से कितने ज़्यादा थे ? इत्यादि लड़ा-इयों को जिन्होंने पढ़ा है, ये कभी विलियम की बात पर हमारी छोटी फ़ौज होने से हमारे बल को कम नहीं कह सकते। आप लोग जानते हैं कि जर्मनी से १० गुनी मर्दुमशुमारी हमारे अंगरेज़ी राज्य की है । अगर सरकार चाहे तो ५० लाख आदमी फ़ौज में फ़ौरन जा सकते हैं ।

"परम क्रोध मींजहिं सब हाथा ।
आयसु पै न देहिं रघुनाथा" ॥

लड़ाइयां फौज की ज़्यादती से नहीं जीती जातीं । बहुत बड़ी फ़ौज लड़ाई के मैदान में भेजने को ज़रूर नहीं है । और न उन लोगों के भेजने की ज़रूरत है जो अच्छी तरह से लड़ाई की

विद्या नहीं जानते । शूरवीर रणबांकुरों के भेजने की ज़रूरत है, जो आज कल की लड़ाई की विद्या में पूरे पण्डित हों, जो लड़ाई का खेल हँसते हुए खेलना जानते हों । हमारी सरकार हम लोगों के उत्साह को देखकर बहुत संतुष्ट हुई है । उसे हमारी राजभक्ति पर बड़ी प्रसन्नता हुई है । परन्तु फ़जूल वह ऐसे लोगों को लड़ाई के मैदान पर भेजना उचित नहीं समझती जो लड़ाई के कामको या तो कुछ जानते ही नहीं या लड़ाई के काम में अधकचरे हैं । इससे जल्दी करने की ज़रूरत नहीं । बहुत बड़ी फौज लड़ाई के मैदान पर भेजने से रसद इत्यादि पहुंचने में भी बड़ी गड़बड़ होती है । ज़रूरत के मुआफ़िक़ पीछे हटने में बाधा पड़ती है, और शत्रु धावा करके रसद इत्यादि लड़ाई का सामान तोप इत्यादि छीन लेते हैं, जैसे हमारी फ़ौज ने विलियम की पचासों तोपों को छीन लिया है । इससे हमेशा वीरों की फ़ौज को हर तरह तैयार, चुस्त और फ़ुर्तीला बनाने के लिये छोटी फौज रखने में बहुत फ़ायदा होता है । और सिपाहियों के मरने और घायल होने से जो कमी होती है वह आसानी से पूरी की जाती है । चुने हुए वीरों की एक छोटी मंडली अक्सर गांव के फ़ौजदारी के झगड़ों में सैकड़ों आदमियों को मार भगाती हुई देखी गई है । दो आदमी बीसों चोरों को भगा देते हैं ! इससे फौज की ज़्यादती पर लड़ाई की हार जीत नहीं होती । लड़ाई में विजय पाने के लिए नीचे लिखी हुई बातें होनी चाहिएँ ।

(१) लड़ाई का कारण—धर्म का पक्ष हो ।

(२) सेनापति—रणविद्याविशारद, (अर्थात् लड़ाई की विद्या पूरी तरह जानने वाला) वीर, सभ्य, साहसी, उद्योगी, चुस्त, चालाक, निरोग, फ़ुर्तीला, बलवान,

देशभक्त, दयालु, सहनशील और अपना कर्तव्य कर्म पूर्ण रीति से करने वाला हो।

(३) सिपाही—में भी सेनापति के कुल गुण होने चाहिएँ। उनके अलावा, उसे आज्ञाकारी, ब्रह्मचारी और अव्वल दर्जे का निशानेबाज़ और अस्त्र-शस्त्र-विद्या विशारद होना चाहिए।

(४) राजा—पूरा सिपाही, पूर्ण धार्मिक, उदार हृदय, न्यायी, संसार का मित्र, पूर्ण राजनीतिज्ञ, प्रजाप्रिय, शरणागत-वत्सल, साम, दाम, दंड, भेद से पूरी तरह काम लेने वाला, विभवशाली, मित्र राजाओं से पूजित और सुयोग्य धार्मिक, स्पष्ट वक्ता, मंत्रियों द्वारा सेवित होना चाहिए।

(५) प्रजा—तन, मन, धन सब राजा पर निछावर करने वाली, देशभक्त, विभवशाली, पूर्ण आज्ञाकारी, साहसी और एक मत होकर राजा की अनुगामिनी होनी चाहिए।

प्यारे भाइयो! इन सब बातों का समावेश परमात्मा की कृपा से हमारी तरफ़ है। इसी से मैं ही नहीं वरंच सब ही लोग जो लड़ाई की बातों को आज कल जानने और समझने में दिलचस्पी ले रहे हैं एक स्वर से कहते हैं, कि हमारे महाराज की जय अवश्य होगी। जिस महाराजा के मित्र रूस के ज़ार, जापान के मिकाडो, फ्रांस के सरपञ्च, नैपाल के महाराज, और हिन्दुस्तान के कुल राजे महाराजे, निज़ाम और नव्वाब हैं। जिसके सेनापति लार्ड राबर्ट्स* और फील्ड मार्शल जेनरल फ्रेंच हैं। जिसके मन्त्री सर हरवर्ट एसक्विथ, लार्ड किचनर, सर एडवर्ड ग्रे, लार्ड हेलिडन, मिस्टर चर्चहिल इत्यादि हैं।

---

* लार्ड राबर्ट का स्वर्गवास हो गया।

जिसके राज्य में वीर जाति के लगभग ५० करोड़ राजभक्त मनुष्य बसते हैं। जिसके विभव को देखकर कुबेर भी लज्जित होते हैं। जिसके लार्ड हार्डिङ्ग ऐसे राजनीतिज्ञ न्यायी, दयालु वायसराय हैं। जिनके भीष्म ऐसे वीर शिरोमणि चाचा (काका) रक्षक हैं। जिसकी अर्द्धाङ्गिनी, सती शिरोमणि, पति-व्रता उदार हृदया, लक्ष्मी स्वरूपा, श्रीमती महारानी मेरी हैं। जो स्वयं वीर, साहसी सेलर-किङ्ग के नाम से संसार में प्रसिद्ध हैं। जिन्होंने अपनी बाल्यावस्था पूर्ण ब्रह्मचर्य के साथ युद्धविद्या ही के सीखने में बिताई है। जिन्हें संसार प्यारा है। जो अपनी राजमाता के पूर्ण भक्त हैं। ऐसे महाराज की जय निश्चय होगी।* और चक्रवर्ती महाराजा बनने की इच्छा रखनेवाले अभिमानी कैसर विलियम को "बलि चाहा आ-काश को हरि पठवा पाताल" की तरह कैद होना पड़ेगा।

---

* यदि किसी को महाराजा जार्ज पंचम का जीवन चरित पढ़ना हो तो बड़ा जीवनचरित्र मुझ से मंगाकर पढ़ें।

युद्ध-पर्व ।

पहिला अध्याय ।

स्वातन्त्र्यरक्षासुदृढ़प्रतिज्ञैः संतानकल्पैः खलु जन्मभूमेः ।
उत्सृज्यते यैस्तृणवन्मुदात्मा ध्रुवं जगत्याममरास्त एव (१)
दग्धोदरार्थं परिचुम्ब्य भूमिं प्रीणन्ति शत्रून् निरपत्रपा ये।
अधीनताशृङ्खलबद्धकण्ठान् तान् सारमेयान्मनुते मनस्वी (२)

वासुदेव-दिग्विजय ।

युद्ध करना एक बड़ा भारी पाप है। लाखों का खून होता है। लाखों अनाथ होते हैं। लाखों अपाहज हो जाते हैं और गांव के गांव, नगर के नगर उजड़ जाते हैं। हज़ारों कुल नष्ट हो जाते हैं। परन्तु कभी २ युद्ध करना बहुत ज़रूरी हो जाता है। हमारे पवित्र भारत देश में, 'आत्मवत् सर्व-भूतेषु' (अपने समान सब को जानना) मानने वाले आर्यों के समय में देवासुर, शुम्भनिशुम्भ, महिषासुर, तारकासुर, रावण इत्यादि की लड़ाइयां प्रसिद्ध हैं। धर्मराज युधिष्ठर का मर्यादापुरुषोत्तम श्रीकृष्ण की सम्मति से कौरवों के साथ युद्ध करना महाभारत के नाम से प्रसिद्ध है। जब दुष्ट लोग बहुत

---

(१) स्वतंत्र रक्षा में दृढ़ प्रतिज्ञा करने वाले और जन्मभूमि को संतान तुल्य मानने वाले जो खुशी के साथ तृण के समान प्राण का त्याग करते हैं वे ही पृथ्वी में अमर हैं।

(२) निन्दित उदर के लिए ज़मीन को चूम कर जो शत्रुओं को खुश करते हैं, वे निर्लज्ज हैं। और जो अधीनता रूपी शृङ्खला को गले में बँधाते हैं उनको मनस्वी पुरुष कुत्ता समझते हैं।

बढ़ जाते हैं तब उनको अपने तथा अपने भाई-बन्धुओं और अपनी जाति के शारीरिक बल का बड़ा घमंड हो जाता है। वे धर्मान्ध हो अत्याचार करने लगते हैं। उनसे साधु-सेवी, शांत प्राणियों को बड़ा कष्ट पहुंचने लगता है। चारों ओर **'जिसकी लाठी उसकी भैंस'** की कहावत चरितार्थ होने लगती है। ऐसे ही समय में ईश्वर की प्रेरणा से, शांतप्रेमी, साधुजन भी दुष्टों को दमन करने के लिए कमर कस कर तैयार हो जाते हैं। यदि वे ऐसा न करें तो उन्हें पाप-भागी होना पड़े। ऐसी लीला परमेश्वर भूमि का भार उतारने के लिए किया करते हैं। जब दुष्ट बहुत प्रबल हो जाते हैं तब स्वयं परमेश्वर अवतार लेकर अहंकारियों का नाश किया करते हैं।

इस यूरोपीय लड़ाई का भी मुख्य कारण यही है। जर्मन जात के लोग इस समय अपने तामसी गर्व में मस्त हैं, इससे उन्होंने अन्याय से इस संसार-दुःखदाई लड़ाई को शुरू किया है और धर्म का पक्ष लेकर इङ्गलैंड को उनके मुक़ाबिले में आना पड़ा है।

बेलजियम पूरे क्षत्रिय हैं। ये भारत के क्षत्रियों की तरह भली भांति समझे हुए हैं—

> द्वाविमौ पुरुषौ लोके सूर्यमण्डलभेदिनौ।
> परिव्राड् योगयुक्तश्च शूरश्च समरे हतः॥*

इसी से आज उन्होंने अपना नाम संसार में अमर कर दिया है।

प्यारे भाइयो! जिस प्रकार महाराणा प्रतापसिंह ने अक-बर की अभिमानी, बड़ी सेना की कुछ परवाह न कर घर

---

*दो ही पुरुष सूर्यमण्डल के भेदने में समर्थ होते हैं। एक तो योगी दूसरा समर में प्राण त्यागने वाला वीर पुरुष।

बार छोड़ जङ्गल और पहाड़ों में भटकते २ अन्न न मिलने पर घास, पात खाकर २८ वर्ष तक लड़ाई जारी रक्खी थी और अंत में अकबर को हरा कर और उसकी सेना का मद चूर्ण कर विजयी हो अपना नाम अमर कर दिया था, उसी प्रकार बेलजियम के लोग तथा उनके बादशाह सब प्रकार का दुःख सहते हुए इधर उधर भटकते फिरते, अपनी स्वतंत्रता के लिए प्रसन्नतापूर्वक लड़ाई करते जाते हैं। सूई के नोक बराबर भूमि भी बिना अपना ख़ून बहाए जर्मनों के हाथ नहीं जाने देते हैं। धन्य हो, प्यारे बेलजियनों, तुम धन्य हो तुम्हारी माताओं को धन्य है। तुम अमर हो स्वर्ग का सुख भोगोगे और दुष्ट जर्मन, दग़ाबाज़ जर्मन, अपने किए का फल पावेंगे और मुँह की खायेंगे। बेलजियनों को लड़ाई शुरू होने के एक दिन पहले तक जर्मनी ने धोखे में डाल रक्खा था। जर्मन दूत बेलजियम में बराबर यही कहता रहा कि उसकी स्वतंत्रता भङ्ग न की जायगी। परन्तु सोते हुए बेलजियनों की गर्दन अचानक अंधेरे में आकर जर्मन काटने लगे। यह देख बृटिश गवर्नमेंट से नहीं रहा गया। उसने ललकार कर कहा,

रे खल का मारसि कपि भालू।
मोहि बिलोकु तोर मैं कालू॥

यह सुनते ही जर्मनों ने यह कहकर कि,

खोजत रहेउँ तोहि सुत घाती।
आज निपाति जुड़ावँहु छाती॥

अंगरेज़ों पर टिड्डी दल की तरह टूट पड़े। सच है यह लड़ाई जर्मनों ने जान बूझ कर अंगरेज़ों का बल देखने और उनको नीचा दिखाने ही की इच्छा से की है। वे स्वप्न देख

रहे हैं, कि यदि वे अंगरेज़ों को जीत लें तो संसार में एकछत्र चक्रवर्ती राज सुख भोगें। इस लड़ाई के विषय में स्वर्गवासी जापानी वीर शिरोमणि नोगी ने जो भविष्य वाणी पहिले की है वही सत्य होगी। कैसर को अपनी ढिठाई और बेहयाई पर पछताना पड़ेगा। हमारी फौज थोड़ी थी, इससे पहिले भय व्याकुल कपि भागन लगे, यद्यपि उमा जीतिहहिं आगे। चतुरता पूर्वक सावधानी के साथ पीछे हटने लगी। प्यारे भाइयो! लड़ाई के जानने वाले समय देख कर दांव पेंच से लड़ने वाले वीरों की प्रशंसा करते हैं। जैसे फरी, गदका, या लकड़ी के खेल में लोग पैतरे बाज़ी करते हुए कभी आगे और कभी पीछे जाते हैं और जिस तरह फ़ुटबाल के खेल में कभी २ हमेशा गोल करने वाले खिलाड़ी लड़के भी मौक़ा देखकर गेंद को पीछे ले आते हैं, उसी तरह बड़ी २ लड़ाइयों में चतुर सेनापति अपनी फ़ौज को बे मौक़ा कटाने से, पीछे हटकर फिर दुश्मन को हटाने में अपनी वीरता समझते हैं। अपने दाव पेच से पीछे हटना, हारना नहीं कहलाता। इसी प्रकार आज कल हमारे चतुर सेनापति, सदा समर विजयी, जेनरल सर फ्रेंच जर्मनी को अपने दाव पेचों का मज़ा दिखा रहे हैं। जीत का अन्दाज़ा शत्रुओं के मारने, क़ैदी बनाने और लड़ाई के सामान छीन लेने से किया जाता है। आप लोगों को सुनकर ख़ुशी होगी कि ता० ५ अक्टूबर तक अंगरेज़ों तथा मित्र दल (बेलजियम फ्रांस इत्यादि) के लगभग ५० हज़ार आदमी मारे या क़ैदी बनाए गए थे। परन्तु शत्रुओं की ओर के लगभग सवा ४ लाख आदमी मारे या क़ैदी बनाए गए थे। हम लोगों की ज़्यादा से ज़्यादा २५ तोपें अभी तक छीनी गई हैं, परन्तु हम लोगों ने दुश्मनों की लगभग ५०० तोपें अभी तक छीन ली हैं। हमारे

लगभग ३० जहाज़ अब तक डुबाए गए हैं परन्तु शत्रुओं के लगभग २०० जहाज़ नष्ट कर दिए गए हैं। इसके अलावा हमारे जंगी जहाज़ों ने दुश्मनों की सौदागरी को एक दम बन्द कर दिया है। उनको अब बाहर से कुछ मदद नहीं मिल सकती। उनको १० वर्ष तक यदि वे ठहर सकेंगे तो हम लोग लड़ाकर मार डालेंगे। केवल अङ्गरेज़ी ही राज्य में जर्मनी से अठगुने ज़्यादा लोग बसते हैं। अलावा इसके फ्रांस और रूस राज्य भी बहुत बड़े हैं। बेलजियम और पुर्तगाल को भी बाहर से बराबर मदद मिलती जायगी। सर्विया और मांटे-निग्रो वाले तो लड़ाई करते २ पक्के ही हो गए हैं। हमारी अंगरेज़ी गवर्नमेंट के पास संसार के कुल राजाओं से अधिक धन है। पड़ोसी फ्रांस भी कुबेर की तरह धनवान है। फिर आप समझ सकते हैं कि जर्मनी कितने रोज़ तक हमारे साथ लड़ सकेगा। उसका ख़ज़ाना ख़ाली हो गया है। बाहर से उसे कोई कर्ज़ भी न दे सकेगा। इससे निश्चय है कि वह बहुत दिनों तक न ठहर सकेगा। तिसपर भारत के रण-बांकुरों से हाथोंबाहीं करने में जर्मनों का दिल बिल्कुल टूट गया है वे हिम्मत हार गये हैं। हिन्दुस्तान के राजाओं तथा आस्ट्रेलिया, कनेडा, दक्षिणी आफ्रिका, न्यूज़ीलैंड इत्यादि उप-निवेशों (अंगरेज़ी अमलदारियों) से बराबर सहायता आते देख जर्मनों के होश हवास उड़ गए हैं। इससे निश्चय है कि जर्मन बहुत दिनों तक हम लोगों के मुक़ाबिले में नहीं ठहर सकेंगे; और हमारे महाराज विजयी होंगे। जर्मन इस समय 'मरता क्या न करता' की कहावत चरितार्थ कर रहे हैं। अन्त में उनका सत्यानाश हो ही गा। श्रीमान् महाराजा जार्ज पञ्चम का यश और प्रताप संसार में और छा जायगा। और मुझे दृढ़ विश्वास है कि इस विजय की ख़ुशी में जो इनाम भारत को

मिलेगा उसे देख कर दुनियां उसी तरह चौंक जायगी, जैसे इस समय भारतवासियों की राजभक्ति को देख कर चकित हो रही है। हम भारतवासी अपने प्राण प्यारे महाराज के और प्रेमपात्र बन कर फूले अंग न समायँगे और शत्रुओं की कमर सदैव के लिए ऐसी टूट जायगी जैसे रावण के वंश की हुई थी ।

'रहा न कुल कोउ रोवन हारा ।'

और बेलजियन अमर होकर फिर अपनी स्वतंत्रता का झंडा अपने देश में उड़ावेंगे, जैसे प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रतापसिंह ने मेवाड़ में अभिमानी अकबर का मद चूर्ण कर उड़ाया था। और मित्र लोग शत्रु के राज्य के टुकड़े कर अपने राज्यों में मिला कर सदैव के लिए जर्मन सम्राज्य का नाम निशान मिटा देंगे।

इस लड़ाई में जर्मन नीचे लिखे हुए राक्षसी अत्याचार बेलजियम और फ्रांस में कर रहे हैं, जिन्हें सुन २ कर महमूद ग़ज़नवी, चंगेज़ ख़ाँ, तैमूर, नादिरशाह अपनी क़ब्रों में जल रहे हैं कि ज़ुल्म करने में कैसर हम लोगों से भी बढ़ा जाता है। वे पछता रहे हैं, कि अब संसार में अत्याचारियों और दग़ाबाज़ों की फ़िहरिस्त में इस २० वीं सदी में आकर कैसर ने हम तुर्कों की सन्तानों को भी लज्जित कर दिया।

जर्मनी के अत्याचार की फ़हरिस्त ।

(१) पाक पवित्र स्थानों को गोलों से बरबाद करना।

(२) विश्वकर्मा के वंशजों की सुन्दर विचित्र इमारतों को नष्ट करना।

(३) धर्म, ऐतिहासिक तथा ज्ञान विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकों से भरे हुए पुस्तकालयों का जलाना। विद्यामन्दिर और विश्वविद्यालयों का नष्ट करना।

(४) दिन को नगर वालों से कर (दंड) लेकर प्राणदान देने का वचन देकर, रात को बिजुली की रोशनी में नगर को घेर कर गोले बरसाना। और भगेडुओं पर हंस २ कर निशाने बाज़ी करके बेचारे मुहम्मद तुग़लक़ की आत्मा को शरमिन्दा करना।

(५) लड़ाकू, वीर, शस्त्रधारी बेलजियनों के ख़ाली नगरों और गावों पर गोले बरसाना।

(६) जीते हुए नगरों और सूबों से कर वसूल करने में नादिरशाह को लज्जित करना।

(७) निर्बल स्त्री और बच्चों को मर्दों से अलग कर, गाड़ियों में बैठा कर कहीं गुप्त स्थान पर भेजने में अलाउद्दीन को मात करना।

(८) घायलों को सुख और सहायता पहुँचाने वाली रेडक्रास-सेना पर गोला चलाना। इत्यादि।

ऐसे अत्याचारियों का नाम निशान संसार से मिटाने के लिए हर एक सभ्य तथा धर्मप्रेमी वीरपुरुष का धर्म है कि चाहे वह संसार के किसी कोने में बसता हो यथाशक्ति उद्योग करे। यदि वह हथियार पकड़ कर मैदान में जा सकता है तो परमेश्वर का प्यारा पुत्र बने और अत्याचारियों की गर्दन काटे। अगर वह धन की सहायता कर सकता है तो हमारे महाराज को सहायता दे। और नहीं तो हमारे पूज्य व्यास पं० उमाशंकर जी और काशी प्रांत के अन्य पण्डितों की तरह परमेश्वर से रोज़ २ प्रार्थना करे कि हमारी बृटिश सरकार राक्षस अत्याचारियों के दमन करने में जल्दी सफलता प्राप्त करे और पापियों से मन, कर्म, वचन से घृणा करे, उनके कामों पर कभी किसी तरह प्रसन्नता प्रगट न करे, नहीं तो रौरव नरक जाना पड़ेगा।

दूसरा अध्याय ।

लड़ाई सम्बन्धी (पद्य-संग्रह) ।

चुनी हुई कविता ।

राष्ट्रीय गीत ।

(१)

श्रीहरि हमरे कारुनीक सम्राटहिं सदा बचावें ।
अति उदार सम्राट् हमारे चिरजीवें सुख पावें ॥
हमरे नृपहिं पाहि जगदीश्वर विजयी यशी बनाओ ।
युग युग राज रहै इनही को हे हरि इन्हैं बचाओ ॥

(२)

सबसों बड़ो दान अपनो हरि नृपहिं दया करि दीजै ।
राज करैं यह सुमति सुचिरलों विनती यही सुनीजै ॥
हमरे धर्म नीति रक्षक राजाधिराज मन भावै ।
हम मिलि गावैं-'मम सम्राटहिं श्रीहरि सदा बचावै' ॥

(पाटलिपुत्र)

स्वतंत्रता की हुंकार

(एक फरासीसी गीत के आधार पर ।)

उठो ! वीरगण ! उठो ! शस्त्र लो ! ले लो खड्ग पटक दो म्यान ।
बढ़ो, सुदृढ़ हो, विजय करो या रणक्षेत्र में दे दो प्राण ॥

(१)

देखो तो यह महाभयंकर बढ़ता आता है तूफ़ान,
मानों आता हो, कृतघ्न राजाओं का सदेह अभिमान ।
रण के कुत्ते छूट पड़े हैं कैसा शोर मचाते हैं !
खेतों और पुरों को देखो जलकर धुँआ उड़ाते हैं ?

विषय, मान से मत्त कि जिसको केवल धन की है अभिलाष,
प्रभुता का इच्छुक जिसके है लगी हुई तृष्णा की फांस।
तो लेगा वह वायु! नाप कर बेचेगा वह अहो प्रकाश!
(आवेगा आकाश उतर क्या? पृथ्वी होवेगी आकाश?)
दुष्ट बनेगा आप देवता भिक्षुक हमें बनावेगा!
दास समझ कर तरह तरह से हमको सदा सतावेगा।
वह मनुष्य, हम भी मनुष्य हैं, है मनुष्य से बढ़कर कौन?
फिर वह कौन हमारा शासक! रह सकते हम कैसे मौन?
बहुत दिनों से हाहाकार मचाता है, सारा संसार,
कहता है, "ज़ालिम ने बेईमानी की है, गही कटार!"
किन्तु हमारी है स्वतन्त्रता ढाल—यही तो है तलवार।
जिसके सन्मुख रह जाता है शत्रु चकित होकर लाचार।

'उदासीन'

मझौली राजमाता [कृत]

हम हैं कृतज्ञ अनेक बार सुबृटिश-शासन के लिये।
वाणिज्य, विद्या, कला-कौशल विविध विधि उन्नत किये॥
जिस देश में था कठिन रहना शान्ति से प्रति व्यक्ति को।
पर-धन-हरण में थे लगाते शक्तिशाली शक्ति को॥
डाकाज़नी, चोरी, ठगी का देश में विस्तार था।
कन्यावधादिक नीति का अतिशय प्रबल व्यवहार था॥
धर्मी, व्रती, नेमी, जपी का कुछ नहीं निस्तार था।
क्षतिग्रस्त किञ्चिन्मात्र भी इस देश का व्यापार था॥
अविदित नहीं है आपको जो कुछ रहीं आपत्तियाँ।
है शान्ति अब जैसी प्रसारित जानतीं सब व्यक्तियाँ॥
दुष्कार्य जितने हैं गिनाये नाश उनका हो रहा।
संचार नव-जीवन सभी विधि देश में है हो रहा॥

निर्भय निरापद हिन्द को सब भाँति कहना चाहिये।
बस राज-भक्त अनन्य बनकर आज बढ़ना चाहिये॥
सहकार्यतायुत राष्ट्र-सेवा में सदा दृढ़ हम रहैं।
सब आइये सस्नेह मिल "सम्राट् की जै" सब कहैं॥

नोट—ता० ३० ८/१४ को श्रीमती राजमाता मझौली तथा श्रीमती बड़ी रानी साहिबा की सम्मति से मझौली में एक बड़ी सभा बड़े समारोह के साथ श्रीठाकुरजी के मन्दिर पर की गई थी। सम्राट्-विजय के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करने के पश्चात् श्रीमती राजमाता जी का समयोचित व्याख्यान पढ़ा गया जिसे सुनकर श्रोतागण महाराजा की सहायता तन मन धन से करने के लिए तत्पर हो गए। चन्दा इकट्ठा करने के लिए कमेटी बनाई गई। और श्रीमती राज-माताजी की ओर से ७००० रुपया दिया गया। उसी व्याख्यान के अन्त में यह कविता भी थी।

(पं० अम्बिकाप्रसाद मास्टर कर्वी स्कूल कृत)*

दोहा

जर्मन मन अति गर्ब है, जानत सकल जहान।
ताहि बिनाशन के लिए, काढ्यो बृटिश कृपान॥

छन्द

महाभारत भयो भारत माहिं, कौरव गर्ब से।
ता सदृश युद्ध यूरप, होत जर्मन दर्प से॥
शूरवीर अनेक सारे देश के आये यहाँ।
तिमि भूमि के सब वीर, सेना सहित जाते हैं तहाँ॥
ख़ासकर यह युद्ध जर्मन, फ्रांस से है हो रहा।
बृटिश दल, वश मित्रता के, फ्रांस रक्षा कर रहा॥

*भैय्यालाल ने ता० १३-९-१४ को कर्वी की सभा में पढ़ा था।

रण रङ्ग कौशल बृटिश सेनापतिहिं को जाने नहीं ।
कौन ऐसा युद्ध जिसमें, विजय इन पाई नहीं ॥
हाल ही में वीर बुअरों से, हुआ संग्राम था ।
फ़ौज के सरदार क्रांची और, बोथा नाम था ॥
उनको अपनी वीरता, अरु चतुरता पर मान था ।
पर न उनको वीर अङ्गरेज़ों का कुछ भी ध्यान था ॥
फ्रेंच जनरल और सर रावर्ट ने संग्राम में ।
खो दिया अभिमान बुअरों का समर के काम में ॥
वही जनरल फ्रेंच के सिर आज सेना भार है ।
नाशिहैं मद जर्मनी का कह रहा संसार है ॥
देखलो जंगल में लाइन क्रोध कर जब गाजहीं ।
दुम दबाकर तुरत जैकल प्राण लेकर भाजहीं ॥
वीर भारत के गये हैं, वीर भारत नाम से ।
जिन्हैं यश रुचि है सदा नहिं काम है धन धाम से ॥
साथ में रणधीर बीकानेर के महराज हैं ।
जाहिं जीते जौन विधिरिपु, तौन जानत काज हैं ॥
चीन अरु चित्राल में तिन नाम पाया है बड़ा ।
त्यों करैं यूरोप में, निज विजय का झंडा खड़ा ॥
पूर्वजों के नाम का वे ध्यान नित चित धारि हैं ।
प्राण तन धन जाय पै पीछे न पग को टारि हैं ॥
बृटिश कीरत को पताका जर्मनी में गाड़ि हैं ।
नाम भारत का जगत इतिहास में कर डारि हैं ॥
इस समय भारत प्रवासी का यही कर्तव्य है ।
नमि हो महाराज पञ्चम जार्ज का सो मुख्य है ॥
हे शम्भु जगदाधार बिनती शीघ्र कानन कीजिये ।
परताप बृटिश सुराज का करि अचल जग यश दीजिये ॥

सन्देशा।

पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी (कृत)

(१)

हे भारतीय सुपूत भारत लाज तुम्हरे हाथ है।
निज पूर्वजों की कीर्ति रक्षा-भार तुम्हरे हाथ है॥
रणभूमि में तो कर्मयोगी कृष्ण ही अब साथ हैं।
पर सकल भारतवासि हम हिय सों तुम्हारे साथ हैं।

(२)

साधु अरु दुर्जन प्रकृति के भेद से रहना सदा।
जातिगौरव हेतु प्रियवर, युद्ध दुख सहना सदा॥
जर्मनों की सी अमानुषता नहीं लाना हिये।
प्राच्य गुण को त्यागि के पाश्चात्य नहिं लाना हिये॥

(३)

अन्याय का उत्तर मनोहर न्याय से देना सदा।
अपकार के बदले सदा उपकार ही देना सदा॥
अन्यायियों के पाप उनकी नाशिहैं महिमा सभी।
तुम भूलना नहि पूर्वजों की कीर्ति की महिमा कभी॥

(४)

बन्धुवर निजदेश-प्रेरित वायु से मिलना सदा।
है यही आधार अब सन्देश हित मिलना सदा॥
नित्य उठि जगदीश को हम बार बार मनावहीं।
भारतीय सुवीर यूरप में विजयवर पावहीं॥

भारतीय वीरों को उत्तेजना।

(लेखक "सुन्दिफर्सिंह" यादव)।

देशप्रिय वीरो दिखादो पूर्ण कर इस काम को।
मान क़ैसर का घटा दो भीष्म कर संग्राम को॥
नाम दुनिया में तुम्हारा हो रहा है वीरवर।
"जार्ज" प्रण पूरा निभादो देके अपने चाम को॥
कर्मवीरो! तुम न हटना युद्धक्षेत्र से कभी।
शत्रु को मिट्टी मिलादो गायँगे तुव नाम को॥
स्वामिसेवक है वही जो काम आवे काल पर।
भयरहित! होकर गिरा दो जाके जर्मन धाम को॥
है यही वीरो! निवेदन हिंद के हिन्दुत्व पर।
मत लजाना ऐ अज़ीज़ो पूर्वजों के नाम को॥

[लेखक श्रीयुत कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०]

धर्म प्रचार अपूर्व ईसाइन को कलहकर।
वर्ष चतुर्दश पूर्व तासों बकसर समर भो॥
योरप के वे देस ख्रीष्ट धर्म मानत जिते।
बौद्ध जापान बिसेस चढ़े चीन पै तब तिते॥
सैन्य सबै मज़बूत गई हिन्द सों लरन हित।
'गुरखा' अरु रजपूत' अग्र गन्य तिन में रहे॥
रूस फ्रांस अंगरेज़ जर्मन सैनिक थके जब।
सह्यो शत्रु को तेज भारत के वीरन तबै॥
असि संगीन प्रहार भारत सैनिकगन कियो।
चीनिन कह्यो सम्हार? पेकिंग फाटक फ़तेह भो॥

सबन कह्यो तब धन्य ! भूरिप्रशंसा करत भे।
पै जर्मन अहमन्य 'कुली' कहत इनको रहे॥
नेक न भो सम्मान राजस्थान नरेश को।
उलटो भो अपमान जर्मन कृत 'परताप' को॥
सो न सकत है भूलि साँचो क्षत्रिय हिन्द को।
उठत हिये मैं हूलि कब याको बदलो मिलै॥
एक बार दरबार बीकानेर नरेश के।
लहि कछु कारज भार आयो जर्मन दूत यक॥
बीर प्रताप उदार पै न भेंट तासों करी।
मन मैं क्रोध अपार सदा रह्यो तेहि जाति पै॥
तुमरो कहा सलाम लेयँ दरबार मैं।
मिलिबो बीर ललाम ! उचित नहीं यहि ठौर है॥
अश्व पीठि पै जायकर मैं क्रूर कृपान लै।
देहैं तुम्हैं जनाय 'कुली' अहैं रजपूतवा॥
सोइ परताप भुवाल बूढो सत्तरि बरस को।
करिबे प्रन प्रतिपाल गयो रणस्थल धीर धरि॥
सांचो यह रजपूत बीरन को आदरस है।
राजभक्त मज़बूत भारत गौरव राखि है॥
अङ्गरेजन को पक्ष न्याययुक्त सब भांति है।
तिनके कहो समक्ष सकत कहा करि शत्रु है॥
भारत सैनिक बीर दिखलाओ निज शूरता।
हो प्रताप तुम धीर मेटहु जर्मन क्रूरता॥
हलदी घाटी युद्ध सुमिरहु क्षत्रिय तुम सबै।
करिकै निज मन शुद्ध लरौ साथ परताप है॥
लोहा लेहु अपार मुरहु न रन सों एक पग।
जर्मन गोला मार डरवावत, कायरन कहँ॥

करिकै असि प्रहार विचलाओ अब शत्रु दल ।
होय तबै निरधार 'कुली' अहैं रजपूतबां ॥
बात तबै है मीत जब जर्मन होवै विजित ।
सदा रहै भय भीत उनसों कह्यो कुली जिन्हैं ॥
ब्राह्मण की आसीस सकति नहीं है व्यर्थ है ।
उठै हमारो सीस जीतैं ये क्षत्रिय जबै ॥

बीकानेर के महाराज का नाम महाराज गङ्गासिंह है ।

नोट—यूरप की लड़ाई के साथ २ एशिया और अफ्रिका में भी लड़ाई हो रही है । और सब जगहों में हमारेमहाराज के विजयी होने के चिन्ह पूर्णरूप से दिखाई दे रहे हैं और सब जगहों में हिन्दुस्तानी फौज की वीरता, दृढ़ता और साहस की प्रशंसा हो रही है । इन्हीं कारणों से आज संसार में निर्जीव भारत सजीव दिखलाई देने लगा है । परमात्मा भारत की इज़्ज़त रक्खे, क्षत्रिय नरेश वीर हिन्दुस्तानी सेना सहित सबसे पहिले बर्लिन विजय करें यही मेरी प्रार्थना है ।

सूचना ।

श्रीमान् महाराज जार्ज पंचम की बड़ी जीवनी	।≡)
,, ,, मझोली ...	=)।
,, ,, छोटी ...	)।।।
,, ,, उर्दू में ...	)।।।
यूरप की लड़ाई और बृटिश गवर्नमेंट उर्दू में ...	।)

मिलने का पता—

शिवकुमार सिंह

सुपरिन्टेन्डेन्ट म्यूनिसिपल बोर्ड स्कूल्स,

इलाहाबाद ।